MAED-612
Semester IV
पाठ्यचर्या विकास
Curriculum Development

इकाई सं०	इकाई का नाम	पृष्ठ सं०
1	पाठ्यचर्या प्रारुप, पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धांत एवं पाठ्यचर्या के संदर्भ में पाठ्यचर्या को संगठित करने की विधियाँ Meaning of Curriculum Design, Components and Sources of Curriculum Design, Principles of Curriculum Construction, Methods of Organization of Syllabus in Formulating Curriculum Operations	1-15
2	पाठ्यचर्या प्रारुप : इसके प्रकार Curriculum Design: Its Categories	16- 31
3	पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न प्रतिमान Different Models and Principles of Curriculum Construction	32-45
4	पाठ्यचर्या मूल्यांकन Curriculum Evaluation	46-63
5	पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रतिमान Models of Curriculum Evaluation	64-71
6	पाठ्यचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र Scope of Curriculum Research	72-82
7	भारत में पाठ्यचर्या संबंधी शोध Curriculum Research in India	83-94
08	पाठ्यचर्या विकास से सम्बंधित विभिन्न आयोगसुझाव समितियों के/ Suggestions/Recommendation Related to Curriculum Development According to Different Education Commissions	95-114

इकाई 1 पाठयचर्या प्रारुप, पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांत एवं पाठयचर्या के संदर्भ में पाठ्यचर्या को संगठित करने की विधियाँ

1.1 प्रस्तवाना
1.2 उद्देश्य
1.3 पाठयचर्या प्रारुप का अर्थ एवं परिभाषा
1.4 पाठयचर्या प्रारुप के तत्व
1.5 पाठयचर्या के स्रोत
1.6 पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांत
1.7 पाठयचर्या की संक्रियाओं के संदर्भ में पाठ्यचर्या संगठन की विधियाँ
1.8 सारांश
1.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.10 संदर्भ ग्रंथ
1.11 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठयचर्या शामिल हैं। यूँ तो शिक्षण प्रक्रिया के ये तीनों ध्रुव महत्वपूर्ण हैं लेकिन इन तीनों में पाठयचर्या सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि समस्त शिक्षण प्रक्रिया इसी पाठयचर्या रुपी धुरि के चारों तरफ चक्कर काटती है। अतः विद्यार्थियों को पाठयचर्या के संदर्भ में जानकारी होना आवश्यक है। पुनः पाठयचर्या निर्माण एक जटिल प्रक्रिया है। इसके तहत कई सारी उपप्रक्रियाएँ शामिल होती हैं तथा कई सारे तथ्य भी शामिल होते हैं। पाठयचर्या प्रारुप उसके तत्व, उसके स्रोत, पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांत, पाठ्यचर्या संगठन आदि कई ऐसे तथ्य हैं जिनके विषय में विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों को जानकारी होना आवशय्क है। एक अच्छा पाठयचर्या ही शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है। अतः पाठयचर्या संबंधी ये सारे तत्व महत्वपूर्ण हो जाते हैं। प्रस्तुत इकाई की रचना इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर की गई है।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप:

1. पाठयचर्या प्रारुप का अर्थ समझ सकेंगे।
2. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न तत्वों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न स्रोतों का वर्णन कर सकेंगे।
4. पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों को समझ सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या संगठन की विभिन्न विधियों या उपागमों को समझ सकेंगे।

1.3 पाठयचर्या प्रारुप: अर्थ एवं परिभाषा

पाठयचर्या प्रारुपशब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द करिकुलम डिजाइन का हिन्दी रुपांतर है। डिजाइन शब्द का प्रयोग क्रिया की तरह या संज्ञा की तरह किया जाता है। जब इसका प्रयोग क्रिया की तरह किया जाता है तो यह एक प्रक्रिया को इंगित करता है, जैसे- पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया। जब इसका प्रयोग संज्ञा की तरह किया जाता है तो यह उस प्रक्रिया के परिणामस्वरुप आए उत्पाद को इंगित करता है, जैसे- पाठयचर्या प्रारुप । करिकुलम यानि पाठयचर्या को जब डिजाइन शब्द के साथ जोड़ा जाता है तो यह मुख्य रुप से संज्ञा की तरह ही प्रयुक्त होता है। इस प्रकार साधारण शब्दों में पाठयचर्या प्रारुप को पाठयचर्या की एक व्यस्थित रुपरेखा कहा जाता है, जिसमें उसके निर्माण एवं मूल्यांकन तक की सारी प्रक्रिया का क्रमवार विवरण होता है। पाठयचर्या प्रारुप को निम्न शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है- यह निश्चित समयावधि के लिए निश्चित अनुदेशात्मक खंडों की एक प्रस्तावित रुपरेखा होती है, साथ ही इसमें उन अनुदेशात्मक खंडों को कैसे अनुपालित किया जाए इसका भी निर्देश होता है।

एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताएँ

एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप की निम्नलिखित विशेषतएँ होती हैं:

1. **एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप उद्देश्यपूर्ण होता है-**पाठयचर्या प्रारुप सिर्फ विषयवस्तु का एक क्रमवार संकलन ही नहीं होता है बल्कि यह एक स्पष्ट उद्देश्यों के साथ विषयवस्तु का क्रमवार संकलन होता है ताकि पाठयचर्या अभ्यासकर्ता इसका प्रभावपूर्ण प्रयोग कर सके;
2. **एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप सुव्यस्थित एवं सुनियोजित होता है-**पाठयचर्या प्रारुप, निर्माणकर्ता के एक सुव्यस्थित प्रयास का परिणाम होता है। इसमें क्या करना है? कब करना है? और किसे करना है? इन सब बातों का स्पष्ट उल्लेख होता है;
3. **एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप सृजनात्मक होता है-** स्पष्ट उद्देश्य एवं सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु के विवरण के साथ-साथ एक पाठयचर्या प्रारुप सृजनात्मक भी होता है। यह सिर्फ सुपरिभाषित विधियों, जिन्हें विभिन्न चरणों में संपादित करना होता है का ब्योरा ही नहीं होता है बल्कि इसमें हरेक पड़ाव पर नवाचार के अवसर होते हैं; तथा

4. **एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप को लोचशील होना चाहिए-** लोचशीलता से आशय उस गुण से है जो समय एवं परिस्थिति की माँग के अनुसार परिवर्तन का आदेश देती है। एक पाठयचर्या प्रारुप को लोचशील भी होना चाहिए ताकि समय एवं परिस्थिति के अनुसार समाज की बदलती हुई माँग के अनुकूल पाठयचर्या को सामंजित किया जा सके।

अभ्यास प्रश्न

1. एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप के विशेषताओं की सूची बनाएँ।

1.4 पाठयचर्या प्रारुप के तत्व

पाठयचर्या प्रारुप के पाँच प्रमुख तत्व या घटक है:

1. शिक्षार्थी एवं समाज के विषय में मानयताओं का एक संरचनात्मक ढाँचा
2. लक्ष्य एवं उद्देश्य
3. विषयवस्तु का चयन, उसका क्षेत्र विस्तार एवं उसका क्रम
4. क्रियान्वयन की विधि
5. मूल्यांकन

अब आप बारी-बारी से एक-एक का अध्ययन करेंगे।

1. **शिक्षार्थी एवं समाज के विषय में मान्यताओं का एक संरचनात्मक ढाँचा-** कोई भी पाठयचर्या समाज एवं उसमें रहनेवाले व्यक्तियों से संबधित मान्यताओं के साथ प्रारंभ होता है। पाठयचर्या निर्माणकर्ताओं का पहला कार्य शिक्षार्थी की योग्यता, आवश्यकता, रुचि, अभिप्रेरणा एवं किसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयवस्तु को सीखने की क्षमता का निर्धारण करना होता है। उपर्युक्त तथ्यों के संदर्भ में विभिन्न विषयों जैसे कि मनोविज्ञान, मानवशास्त्र, समाजशास्त्र, शिक्षास्शास्त्र आदि में अनेक शोधकार्य हुए हैं। उपर्युक्त शोध कार्यों में प्रमुख रुप से शिक्षार्थी क्या आत्मसात कर सकता है? किस परिस्थिति में कर सकता है? और उसके परिणाम क्या होंगे? आदि प्रश्नों के उत्तर देने के प्रयास किए गए हैं। इनसे हमें पाठयचर्या प्रारुप के तत्व की जानकारी मिलती है।
2. **लक्ष्य एवं उद्देश्य-**पाठयचर्या प्रारुप का दूसरा प्रमुख तत्व पाठयचर्या के लक्ष्य एवं उद्देश्य होते हैं। चूँकि पाठयचर्या के उद्देश्य विषयवस्तु एवं मूल्यांकन प्रक्रिया के चयन के आधार होते हैं; अतः, ये सुपरिभाषित एवं सुव्यवस्थित होने चाहिए। पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों के बजाय, शिक्षार्थी की रुचि, आवश्यकता, आदि को ध्यान में रखकर नवीन उद्देश्यों का निर्माण होना चाहिए। इन उद्देश्यों के निर्धारण में ज्ञान, कौशल, मूल्य, अभिक्षमता एवं आदतों के विकास जो कि शिक्षण प्रक्रिया के वांछित परिणाम को प्रभवित करते हैं, को भी

ध्यान में रखना चाहिए। उद्देश्य एवं लक्ष्य शिक्षक के लिए, शिक्षण –अधिगम के क्षेत्र को भी चित्रांकित करते हैं। उद्देश्य एवं लक्ष्य, समाज एवं अधिगमकर्ता के दार्शनिक मान्यताओं को प्रतिबिंबित करते हैं। ये वैश्विक या विशिष्ट भी हो सकते हैं। ये अधिगमकर्ता में किसी विशिष्ट व्यवहार को विकसित करने वाले हो सकते हैं या व्यवहार के सामान्य प्रारुप को विकसित करनेवाले। ये गतिशील होते हैं अर्थात समाज में परिवर्तन के साथ ये भी परिवर्तित हो जाते हैं। इन दोनों प्रकार के परिवर्तनों अर्थात सामाजिक परिवर्तन तथा उद्देश्य एवं लक्ष्य में परिवर्तन के बीच सांमजस्य एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप की आवश्यक शर्त है लेकिन आज समस्त विश्व में इस प्रकर के सांमजस्य का अभाव है।

3. **विषयवस्तु क्ला चयन, उसका क्षेत्र विस्तार एवं उसका क्रम-** विषयवस्तु को चयनित कर, शिक्षक एवं शिक्षार्थी के प्रयोग के लिए, एक क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। विषयवस्तु या पाठ्यवस्तु को निम्नलिखित तीन रुपों में समझा जा सकता है:
   i. एक वर्षीय पाठयचर्या के लिए विषयों की सूची;
   ii. एक अनुशासन(जैसे-विज्ञान, गणित आदि); तथा
   iii. एक विशिष्ट विषय (जैसे- जीव विज्ञान, भौतिकि आदि)

   विषयवस्तु के चयन में तीन मुख्य तत्वों को ध्यान में रखा जाता है:
   i. ज्ञान
   ii. प्रक्रिया/कौशल; तथा
   iii. प्रभाव

   विषयवस्तु के चयन के लिए निकष-
   i. प्रासंगिकता- विषयवस्तु वर्तमान समय के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकि आवश्यकताओं के अनुकूल होना चाहिए।
   ii. संतुलन- शिक्षा के दोनों ध्रुवों अर्थात क्या स्थायी है? और क्या परिवर्तनशील है? को समझकर उनके मध्य संतुलन स्थापित करना पड़ता है।
   iii. विषयवस्तु की वैधता- विषयवस्तु को वास्तविक रुप से उन्हीं अधिगम अनुभवों को प्रदान करनेवाला होना चाहिए जिनके लिए उन्हें चयनित किया गया है।
   iv. शिक्षार्थी केन्द्रित- विषयवस्तु का चयन शिक्षार्थी के विकास की अवस्था के अनुकूल, होना चाहिए।
   v. सहजता- विषयवस्तु समय, मानवीय, भौतिक एवं वित्तीय संसाधनों की दृष्टि से सहज होना चाहिए।
4. **क्रियान्वयन की दशाएँ** –पाठयचर्या प्रारुप के एक तत्व के रुप में क्रियान्वयन की दशाओं का आशय विषयवस्तु को शिक्षार्थियों तक पहुँचाने की विभिन्न विधियों से है। ये पाठयचर्या प्रारुप का एक मुख्य तत्व है क्योंकि यह शिक्षार्थी के परिणाम को निर्धारित

करता है। यह शिक्षार्थी के अभिरुचि एवं विषयवस्तु पर उसके स्वामित्व को प्रभावित करता है साथ ही साथ शिक्षक के व्यवहार को भी प्रभावित करता है। पहले, क्रियान्वयन की दशाएँ शिक्षक- केन्द्रित हो या विद्यार्थी केन्द्रित, इस बात पर बहुत ध्यान दिया जाता था लेकिन कालांतर में विषयवस्तु के विद्युतीय प्रस्तुतीकरण, जैसे कि स्मार्टबोर्ड, पॉवरप्वायंट प्रस्तुतीकरण आदि के विकास के कारण शिक्षक की भूमिका में बदलाव आया है। पुनः क्रियान्वयन की दशाओं को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दो भागों में बाँटा जा सकता है। ये बँटवारा पाठयचर्या के क्रियान्वयन में शिक्षक एवं शिक्षार्थी की भागीदारी की मात्रा के आधार पर किया जाता है। पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न तत्वों में से जिस तत्व पर सबसे ज़्यादा शोध कार्य किया जाता है, वो क्रियान्वयन की दशाएँ हैं।

5. **मूल्यांकन**-पाठयचर्या प्रारुप के तत्व के रुप में मूल्यांकन के कई आयाम होते हैं। समेकित रुप में मूल्यांकन शिक्षार्थी को उसके निष्पादन के विषय में बताता है तथा विषयवस्तु को अगले चरण की ओर निर्देशित करता है। इस प्रकार मूल्यांकन विषयवस्तु के क्रम एवं पाठयक्रम के क्रियान्वयन को निर्देशित करते हैं। मूल्यांकन का दूसरा आयाम शिक्षार्थी के अधिगम के संबंध में वो सूचना प्राप्त करना है जो विद्यार्थी को चयनित एवं निरस्त, उतीर्ण एवं अनुतीर्ण करने में सहयोग प्रदान करते हैं तथा इस संदर्भ में कि विद्यालय राष्ट्रीय नीति का कितने अच्छे तरीके से अनुपालन कर रहे हैं, आँकड़े एकत्रित करना या प्रदान करना है (वॉकर,1976)। इस प्रकार मूल्यांकन शिक्षार्थी एवं शिक्षक के लिए पृष्ठपोषण का कार्य करता है(ऐश,1974)।

अभ्यास प्रश्न

---

2. शिक्षार्थी एवं समाज के विषय में मान्यताओं का एक संरचनात्मक ढाँचा, पाठयचर्या प्रारुप के पाँच प्रमुख _______________ में से एक है।
3. सामाजिक परिवर्तन तथा उद्देश्य एवं लक्ष्य में परिवर्तन के बीच सांमजस्य एक अच्छे _________________ की आवश्यक शर्त है।
4. विषयवस्तु के चयन में ध्यान में रखे जाने वाले तीन मुख्य तत्वों के नाम ज्ञान, प्रक्रिया/कौशल तथा ________________ है।
5. क्रियान्वयन की दशाओं का आशय ____________को शिक्षार्थियों तक पहुँचाने की विभिन्न विधियों से है।
6. मूल्यांकन शिक्षार्थी एवं शिक्षक के लिए _____________का कार्य करता है।

1.5 पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत

पाठयचर्या प्रारुप के निम्नलिखित तीन मुख्य स्रोत हैं:

i. सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु

ii. विद्यार्थी
iii. समाज

अब आप बारी-बारी से एक-एक का अध्ययन करेंगे।

1. **सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु** –पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न स्रोतों में यह सबसे ज़्यादा प्रयुक्त होनेवाला स्रोत है। इसका प्रयोग इसलिए किया जाता है कि यह मानव जाति के सामूहिक ज्ञान को प्रतिबिंबित करता है तथा मनुष्य़ के सांस्कृतिक विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। ज्ञान के एक संगठित इकाई के रुप में विभिन्न विषयों का अध्ययन सभ्यता के विकास के लिए अवश्यक है। पाठयचर्या प्रारुप का यह एक प्रारंभिक स्रोत है और इसके प्रयोग का एक प्रमुख लाभ यह है कि यह विषयवस्तु के तार्किक संगठन को बल प्रदान करता है(हॉकिंस,1980 सेलर एण्ड अलेक्जेंडर,1974 ताबा,1962 जैस,1976)।
   इस स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:
   i. विभिन्न विषय, विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक विरासत को क्रमिक ढंग से समझने एवं सीखने में सहायता करते हैं
   ii. पाठयचर्या प्रारुप के इस स्रोत का प्रयोग कर पाठयचर्या के निर्माण का एक लंबा इतिहास है
   iii. शिक्षक इसी तरीके से शिक्षित किए गए हैं
   iv. अधिकांश उपयोगी सामग्री एवं संसाधन का निर्माण इसी स्रोत का प्रयोग कर के किया गया है।

इस स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

i. यह ज्ञान के खंडन को बढ़ावा देता है, जिससे विस्मरण की प्रवृति को बल मिलता है;
ii. इस स्रोत के प्रयोग से बना पाठयचर्या प्रारुप विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन से परे होता है;
iii. यह स्रोत विद्यार्थियों की क्षमता, रुचि, आवश्यकता एवं विगत अनुभवों पर कम ध्यान देता हैफलस्वरुप विद्यार्थियों में अधिगम के लिए अभिप्रेरणा की कमी होती है; तथा
iv. यह अधिगम में सतहीपन एवं निष्क्रियता को बढ़ावा देता है।

2. **विद्यर्थी पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में-** जब विद्यार्थी को पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में स्थान दिया जाता है तो पाठयचर्या प्रारुप के निर्माण में विद्यार्थी की आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं एवं विगत अनुभवों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। अधिगम अनुभव तथा विषयवस्तु के चयन एवं संगठन के लिए विद्यार्थियों से संपर्क कर उनका अवलोकन किया जाता है तथा उनसे साक्षात्कार किया जाता है। विषय क्षेत्र विद्यार्थियों के रुचि एवं आवश्याकता के अनुकूल होते हैं। जब विद्यार्थी को पाठयचर्या प्रारुप के मुख्य स्रोत के रुप में लिया जाता है तब इस प्रकार के पाठयचर्या को नवोदित क्रिया-कलाप या अनुभव पर आधारित पाठयचर्या कहा जाता है। मुक्त विद्यालय, वैकल्पिक विद्यालय, मुक्त शिक्षा एवं

ब्रिटिश शिशु विद्यालय इसी प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप का प्रयोग करते हैं। इस स्रोत के समर्थक यह मानते हैं कि वास्तविक शिक्षा तभी सम्पन्न हो सकती है जबकि विद्यार्थी खुद अपने लिए पाठ्यवस्तु का चयन करे और इसे कोई व्यक्तिगत अर्थ प्रदान करें।

इस स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

i. जब विद्यार्थी को पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में प्रयुक्त किया जाता है तो विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ, रुचि, योग्यताएँ एवं अनुभव पाठयचर्या प्रारुप को निर्देशित करती हैं,परिणामस्वरुप अधिगम व्यक्तिगत, प्रासंगिक एवं अर्थपूर्ण होता है;

ii. विद्यार्थी स्वत:प्रेरित होते हैं और उन्हें अभिप्रेरणा के लिए किसी बाहरी तत्व की आवश्यकता नहीं होती है;

iii. व्यक्तिगत विभिनाता को पूर्ण महत्व दिया जाता है; तथा

iv. विद्यार्थियों को जीवन की माँग को संतुष्ट करने के लिए तैयार करता है(हॉकिंस,1980 जैस,1976)।

इस स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

i. यह शिक्षा के सामाजिक लक्ष्यों एवं मानव के सांस्कृतिक विरासत की उपेक्षा करता है;

ii. अधिगम के परिणाम अनिश्चित होते हैं; तथा

iii. पाठ्यसामग्री की उपलब्धता असहज होती है और यह खर्चीला होता है।

3. **समाज-** यह पाठयचर्या प्रारुप का तीसरा प्रमुख स्रोत होता है। यह एक अद्वितीय पाठयचर्या प्रारुप के निर्माण में सहायक होता है, जिसका मूल्य, समाज को समझने एवं उन्नत करने में होता है। सामुदायिक विद्यालय पाठयचर्या प्रारुप के इसी स्रोत का प्रयोग करते हैं। समाजिक अध्ययन के कार्यक्रम भी समाज को पाठयचर्या प्रारुप के प्रमुख स्रोत के रुप में प्रयुक्त करते हैं। इस प्रारुप में पाठ्यवस्तु सामाजिक जीवन से निकाली जाती है। यह समाज के कार्य, सामाजिक जीवन के मुख्य कार्य-कलाप तथा विद्यार्थियों या मनुष्य़ की मुख्य समस्याओं पर बल देता है।

इस स्रोत के प्रयोग की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. यह पाठ्यवस्तु की अखंडता एवं विद्यार्थी तथा समाज के लिए उसकी प्रासंगिकता पर बल देती है (ताबा,1962);
   समस्या समाधान विधि पर बल दिया जाता है;
   पाठ्यवस्तु विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक रुप में होती है
2. इस प्रकार पाठ्यवस्तु विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक एवं अर्थपूर्ण होती है;

3. चूँकि विद्यार्थी, अध्ययन के सभी चरण पर, इसमें सक्रिय रुप से शामिल होते हैं, इसलिए वो अध्ययन को बनाए रखने के लिए आंतरिक रुप से अभिप्रेरित होते हैं; तथा
4. इस प्रारुप से समाज के विकास में भी सहायता मिलती है।

इस स्रोत के प्रयोग निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

i. इसका क्षेत्र और क्रम स्पष्ट नहीं होता है
ii. शिक्षक इस विधि से पढ़ाने के लिए तैयार नहीं होते हैं
iii. संसाधन नहीँ उपलब्ध होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

---

7. पाठयचर्या प्रारुप के एक स्रोत के रुप में सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु की विशेषताओं का उल्लेख करें?।
8. पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में विद्यार्थी की सीमाओं का वर्णन करें।

1.6 पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांत

पाठयचर्या के निर्माण में दर्शन, समाज, राज्यतंत्र, अर्थतंत्र, विज्ञान एवं मनोविज्ञान की महती भूमिका होती है। चाहे कोई भी राष्ट्र हो या कोई भी समाज, उपरोक्त उल्लिखित सारे तत्व पाठयचर्या पर अपना प्रभाव डालते हैं। इन तत्वों के प्रभाव को हीं सिद्धांतों का नाम दे दिया गया है। शिक्षा के भिन्न-भिन्न स्तर के लिए यह भिन्न-भिन्न होते है। वर्तमान समय में हमारे देश में 10+2+3 शिक्षा पद्धति प्रचलित है और इसमें प्रथम 10 वर्षों की शिक्षा सामान्य है। अतः, हम इसी 10 वर्षीय शिक्षा के स्तर के लिए पाठयचर्या निर्माण के सिद्धांतों की चर्चा करेंगे। इस स्तर के लिए पाठयचर्या निर्माण के लिए निम्नलिखित 11 मुख्य सिद्धांत हैं-

1. **उद्देश्यों की प्राप्ति का सिद्धांत-** शिक्षा प्रदान करने के कुछ उद्देश्य होते हैं और शिक्षा प्रदान करने के लिए पाठयचर्या का होना अनिवार्य है। अतः, पाठयचर्या का निर्माण करते समय हमें शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए और पाठयचर्या में उन्हीं विषयों एवं क्रियाओं का समावेश करना चाहिए, जिनको हम छात्रों में विकसित करना चाहते हैं।
2. **उपयोगिता का सिद्धांत-**पाठयचर्या निर्माण का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत, उपयोगिता का सिद्धांत है। इस सिद्धांत का आशय यह है कि पाठयचर्या विद्यार्थी के वास्तविक जीवन के लिए उपयोगी होना चाहिए। इस संबंध में नन का कहना है- “साधारण मनुष्य सामान्यतः यह चाहता है कि उसके बच्चे केवल ज्ञान के प्रदर्शन के लिए कुछ व्यर्थ की बातों को ही न सीखे, परंतु समग्र रुप से वह यह चाहता है कि उनको वो बातें सिखाई जाएँ जो बालक के वास्तविक जीवन से संबंधित हो”। उदाहरणार्थ , आज का युग कम्प्युटर का युग है। यदि

आज हम कोई पाठयचर्या निर्मित करते हैं तो हमें उसमें कम्प्युटर प्रौद्योगिकि को ज़रूर स्थान देना चाहिए।

3. **रचनात्मक कार्य का सिद्धांत**– प्रत्येक बालक अद्वितीय होता है और उसमें कुछ न कुछ सृजन करने की शक्ति होती है। अतः, पाठयचर्या ऐसा होना चाहिए कि वो विद्यार्थियों को अपने अंदर छुपी हुई रचनात्मक शक्ति को पहचानने एवं पहचान कर उसे निखारने का अवसर प्रदान करे। रेमॉण्ट ने इस संदर्भ में लिखा है- " जो पाठयचर्या , वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त है, उसमें निश्चित रुप से रचनात्मक विषयों के प्रति निश्चित सुझाव है"।
4. **वरीयता क्रम का सिद्धांत-** पाठयचर्या अनेक विषयों का समूह होता है। लेकिन यह समूह् अव्यवस्थित नहीं होता है। बल्कि एक निश्चित व्यवस्था में बँधा होता है। यह व्यवस्था पाठयचर्या में शामिल विषय एवं प्रत्येक विषय में शामिल पाठ्यवस्तु के क्रम को विद्यार्थियों की आवश्यकता के आधार पर निर्धारित करती है। अतः, पाठयचर्या का निर्माण करते समय हमें इस वरीयता क्रम का भी ध्यान रखना चाहिए।
5. **सामुदायिक जीवन से संबद्धता का सिद्धांत-** माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार-" पाठयचर्या सामुदायिक जीवन से सजीव की ओर आंगिक रुप से संबंधित होना चाहिए"।मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज में ही अपने जीवन के समस्त कार्य–व्यापार संपादित करता है। अतः, उसे पढ़ाया जानेवाला पाठयचर्या भी सामुदायिक एवं सामाजिक जीवन से संबंधित होना चाहिए । पाठयचर्या निर्माण के समय हमें इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए।
6. **अग्रदर्शिता का सिद्धांत-** शिक्षा विद्यार्थियों का सिर्फ वर्तमान ही नहीं वरन् भविष्य भी सँवारती है। अत:, पाठयचर्या का निर्माण करते समय हमें इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि भविष्य में शिक्षा की दशा एवं दिशा क्या होगी? अर्थात भविष्य में किस क्षेत्र में कुशल मानव शक्ति की माँग होगी और कितनी मात्रा में होगी।? इन तथ्यों को घ्यान में रखकर पाठयचर्या में पाठ्यवस्तु का समावेश किया जाना चाहिए ताकि पाठयचर्या वर्तमान के साथ-साथ भविष्य की आवश्यकताओं को भी संतुष्ट कर सके।
7. **आवश्यकता का सिद्धांत-**पाठयचर्या विद्यार्थी के लिए निर्मित किया जाता है न कि विद्यार्थी पाठयचर्या के लिए। अतः, पाठयचर्या का निर्माण करते समय विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना चाहिए। विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, एवं धार्मिक परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग होती है। अतः, पाठयचर्या के निर्माण में, इस बात को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि विद्यार्थी किस सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थिति में रहते हैं। इसके इतर विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ, उनके शारीरिक एवं मानसिक विकास की अवस्थाओं पर भी निर्भर

करती है। अतः, पाठयचर्या निर्माण के समय विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास की अवस्थाओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

8. **रुचि का सिद्धांत-** अतीत में हुए अनेक शोधकार्यो द्वारा यह प्रमाणित हो चुका है कि विद्यार्थियों की रुचि एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि में गहन संबंध होते हैं। इसका कारण यह है कि जिस कार्य में विद्यार्थी की रुचि होती है, उसे सीखने के लिए विद्यार्थी आंतरिक रुप से अभिप्रेरित होते हैं और फलस्वरुप परिणाम अच्छा होता है। अतः, पाठयचर्या का निर्माण करते समय हमें विद्यार्थियों की रुचि को ध्यान में रखना चाहिए।
9. **सुसंबद्धता का सिद्धांत-**पाठयचर्या के संदर्भ में सुंसंबद्धता से आशय इस बात से है कि पाठ्यवस्तु एक-दूसरे से भली-भाँति संबंधित हो। इसके अलावा जो क्रिया-कलाप पाठयचर्या में शामिल किए जाएँ वो भी पाठ्यवस्तु से भली-भाँति संबंधित हो। अतः, पाठयचर्या निर्माण करते समय हमें सुसंबद्धता के सिद्धांत को ध्यान में रखना चाहिए।
10. **क्रिया का सिद्धांत-** मनोविज्ञान में हुए शोधकार्यो ने यह प्रमाणित किया है कि 'कर के सीखा ज्ञान' ज़्यादा स्थायी होता है और यह व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है। अतः, हमें पाठयचर्या का निर्माण करते समय विभिन्न क्रिया-कलापों को पाठयचर्या में स्थान देना चाहिए ताकि विद्यार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान में स्थायित्व आ सके और विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो सके।
11. **विविधता एवं लचीलेपन का सिद्धांत-** माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार, " पाठयचर्या में काफी विविधता एवं लचीलापन होना चाहिए, जिससे कि वैयक्तिक विभिन्नताओं और वैयक्तिक आवश्यकताओं एवं रुचियों का अनुकूलन हो सके"। पाठयचर्या में विविधता एवं लचीलापन इस कारण से होना चाहिए कि उसे विद्यार्थियों कि शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं तथा उनकी रुचि के अनुकूल बनाया जा सके। अतः, पाठयचर्या निर्माण करते समय हमें इस सिद्धांत को ध्यान में रखना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

9. पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों को सूचीबद्ध करें।

1.7पाठयचर्या की संक्रियाओं के संदर्भ में पाठ्यचर्या संगठन की विधियाँ

पाठ्यचर्या मुख्य रुप से इस बात पर निर्भर करती है हम विद्यार्थियों में किन अधिगम अनुभवों को विकसित करना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में यदि कहें तो अधिगम के प्रत्याशित परिणाम पर पाठ्यचर्या का संगठन निर्भर करता है। अतः, सर्वप्रथम, अधिगम के परिणाम को निश्चित किया जाता है, उसके बाद पाठ्यचर्या को। सामान्यतः पाठ्यचर्या में जो भी विषय रखने होते हैं और उन विषयों के तहत जो

भी पाठ्यवस्तु रखनी होती है, पहले उसपर संबंधित विभाग में, तब उस विद्यालय या संकाय के बोर्ड ऑफ स्टडीज्स में और उसके बाद एकेडमिक कौंसिल में चर्चा की जाती है। इसके बाद इसे अस्तित्व में लाया जाता है। शिक्षक इसमें दोहरी भूमिका निभाता है – एक तो उपरोक्त निकायों के सदस्य के रुप में तथा दूसरा पाठ्यचर्या के मूल प्रारुप को तैयार करने में। लेकिन शिक्षक अपने मन से पाठ्यचर्या में विषयों और विभिन्न विषयों के पाठ्यवस्तुओं को शामिल नहीं करता है। इसके लिए वो विभिन्न उपागमों का सहारा लेता है। ये उपागम ही पाठ्यचर्या के संगठन की विधियाँ या पाठ्यचर्या के संगठन के उपागम कहलाते हैं। ये निम्नलिखित हैं:

i. विषयवस्तु / अनुशासन आधारित उपागम
ii. विशिष्ट दक्षता उपागम
iii. मानवीय गुण/प्रक्रिया उपागम
iv. सामाजिक प्रकार्य/क्रिया-कलाप उपागाम
v. व्यक्तिगत आवश्यकता एवं रुचि उपागम।

1. **विषयवस्तु/अनुशासन उपागम** – अध्ययन किए जानेवाले प्रत्येक विषय या अनुशासन के अपने विशिष्ट गुण एवं प्रारुप होते हैं जो एक पाठयचर्या निर्माता को पाठ्यचर्या बनाने में सहायता करते हैं। उदाहरण के तौर पर विज्ञान विषय की विशेषता है, अवलोकन योग्य तथ्यों का ज्ञान, प्रयोग द्वारा प्रमाणित किया जा सकने वाला सिद्धांत तथा उन सिद्धांतों का सामान्यीकरण। कला से संबंधित विषयों की विशेषता है, उन सामाजिक घटनाओं क अध्ययन जिनसे व्यवहार के प्रारुप का सामान्यीकरण होता है तथा विविध प्रकार के संस्कृति के अस्तित्व का वर्णन करने के लिए विभिन्न सिद्धांतों का निर्माण होता है। एक बार अधिगम उद्देश्य एवं उनके प्रत्याशित परिणामों के आधार पर जब अनुशासन या विषय का चयन कर लिया जाता है तब उसके क्षेत्र अर्थात उसके अंतर्गत पढ़ाए जानेवाले पाठ्यवस्तु का चयन किया जाता है। इसके लिए अंतर-अनुशासनिक उपागम का भी सहारा लिया जाता है। उदाहरण के तौर पर, प्रबंध विज्ञान के एक पाठयचर्या में विज्ञान और कला दोनों अनुशासनों के विषय, जैसे- संगठनात्मक प्रारुप एवं ऑपरेशन रिसर्च शामिल होते हैं।
2. **विशिष्ट दक्षता उपागम-** प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ विशेष गुण होते हैं। पाठयचर्या ऐसा होना चाहिए कि वो विद्यार्थी के अंदर निहित विशेष गुण को पहचानने का तथा पहचान कर उन्हें निखारने का अवसर प्रदान करे ताकि विद्यार्थी उस गुण में दक्ष हो जाए और वो विशेष गुण उसका एक कौशल बन जाए। पाठयचर्या के लिए, पाठ्यचर्या का संगठन करते समय उसमें ऐसे क्रिया-कलापों एवं विषयों को स्थान दिया जाता है जो उपरोक्त कार्य में विद्यार्थी की सहायता कर सके। अधिगम संबंधी क्रिया-कलापों के साथ-साथ विद्यार्थियों के निष्पत्ति के सूचक भी उन्हीं विशिष्ट कौशलों के इर्द-गिर्द घूमते हैं। इसमें 'कर के सीखने' पर ज़्यादा

पर बल दिया जाता है। सभी व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में पाठ्यचर्या संगंठित करने की इस विधि का ज़्यादा प्रयोग किया जाता है।

3. **मानवीय गुण/प्रक्रिया उपागम-** यह विधि मुख्य रुप से विद्यार्थी में मानवीय मूल्यों, विशेषतः सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों को विकसित करने पर बल देती है। इसमें सबसे मुख्य बात उपयुक्त अनुभवों की उपलब्धता होती है। मूल्यों का विकास तभी संभव है जब विद्यार्थी को अनुभवों एवं.गुणों/मूल्यों के संबंध के विषय में, सोचने एवं विश्लेषण करने का अवसर प्राप्त हो। रोल मॉडल को भी स्थान दिया जा सकता है क्योंकि मूल्यों के विकास में ये भी सहायक होते हैं। भारतीय संदर्भ में इस उपागम की बड़ी भूमिका होती है।
4. **सामाजिक प्रकार्य/ क्रिया-कलाप उपागम** – यह उपागम इस मान्यता पर आधारित है कि शिक्षण प्रक्रिया समाज में सम्पन्न होती है और इसलिए उस समाज के प्रति उत्तरदायी है जिसमें यह कार्य करती है। इस उपागम का प्रयोग कर जब पाठ्यचर्या का संगठन किया जाता है तो उसमें तीन बातों का विशेष रुप से ध्यान दिया जाता है:
    - जीवन के वास्तविक परिस्थितियों के इर्द –गिर्द विकसित होना चाहिए;
    - समाज की आवश्यकता को व्यक्ति विशेष की आवश्यकता से ज़्यादा बल देना चाहिए;
    - विद्यार्थियों की प्रत्यक्ष सहभागिता के द्वारा सामाजिक कार्य-क्षमता एवं सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना चाहिए।
5. **व्यक्तिगत आवश्यकता एवं रुचि उपागम-** इस विधि के द्वारा पाठ्यचर्या संगठन में विद्यार्थी को केन्द्र में रखा जाता है। इस विधि के प्रयोग के पीछे यह मान्यता कार्य करती है कि विद्यार्थी को केन्द्र में रखने से अधिगम प्रक्रिया में उनकी रुचि बढ़ती है। वर्तमान में पाठयचर्या के संदर्भ में जो शोध हो रहे है उनमें इस उपागम को ज़्यादा महत्त्व दिया जा रहा है।

   पाठ्यचर्या संगठन की उपयुक्त विधियों को जानने के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि पाठ्यचर्या संगठन के ये विभिन्न उपागम यद्यपि अपने-आप में पूर्ण है लेकिन इनमें से किसी एक के प्रयोग से संतुलित पाठयचर्या का निर्माण नहीं हो सकता है। संतुलित पाठयचर्या केनिर्माण में इन सभी उपागमों का सहरा लेना पड़ता है। अतः, एक संतुलित पाठयचर्या के निर्माण के लिए इन सभी उपागमों का समुचित प्रयोग आवश्यक है।

अभ्यास प्रश्न

---

10. पाठ्यचर्या संगठन की विभिन्न विधियों को सूचीबद्ध करें।

11. सामाजिक प्रकार्य/ क्रिया-कलाप उपागम का प्रयोग कर जब पाठ्यचर्या का संगठन किया जाता है तो जिन तीन बातोंका विशेष रुप से ध्यान दिया जाता है, उन्हें सूचीबद्ध करें।

8 . 8सारांश

प्रस्तुत इकाई, पाठयचर्या प्रारुप का अर्थ, पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न तत्वों, पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न स्रोतों, पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों एवं पाठ्यचर्या संगठन के विभिन्न उपागमों की व्याख्या करता है। पाठयचर्या शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका निर्माण एक आवश्यक प्रक्रिया है। वर्तमान परिवेश में शिक्षक इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अत: शिक्षा शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह आवश्यक है कि वो पाठयचर्या संबंधी विभिन्न तथ्यों को जानें एवं समझें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस इकाई की रचना की गई है जो विद्यार्थियों के लिए निश्चित ही उपयोगी होगी।

1 . 9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप के विशेषताऐं निम्न हैं-
    i. एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप उद्देश्यपूर्ण होता है
    ii. एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप सुव्यस्थित एवं सुनियोजित होता है
    iii. एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप सृजनात्मक होता है
    iv. एक अच्छा पाठयचर्या प्रारुप को लोचशील होना चाहिए
2. तत्व
3. पाठयचर्या
4. प्रभाव
5. विषयवस्तु
6. पृष्ठपोषण
7. पाठयचर्या प्रारुप के एक स्रोत के रुप में सुव्यवस्थित पाठ्यवस्तु की विशेषताऐं-
    i. विभिन्न विषय, विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक विरासत को क्रमिक ढंग से समझने एवं सीखने में सहायता करते हैं
    ii. पाठयचर्या प्रारुप के इस स्रोत का प्रयोग कर पाठयचर्या के निर्माण का एक लंबा इतिहास है
    iii. शिक्षक इसी तरीके से शिक्षित किए गए हैं
    iv. अधिकांश उपयोगी सामग्री एवं संसाधन का निर्माण इसी स्रोत का प्रयोग कर के किया गया है।
8. पाठयचर्या प्रारुप के स्रोत के रुप में विद्यार्थी की सीमाऐं-

i. यह शिक्षा के सामाजिक लक्ष्यों एवं मानव के सांस्कृतिक विरासत की उपेक्षा करता है;
ii. अधिगम के परिणाम अनिश्चित होते हैं; तथा
iii. पाठ्यसामग्री की उपलब्धता असहज होती है और यह खर्चीला होता है।

9. पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतोंकी सूची निम्न है-
   i. उद्देश्यों की प्राप्ति की सिद्धांत
   ii. उपयोगिता का सिद्धांत
   iii. रचनात्मक कार्य का सिद्धांत
   iv. वरीयता क्रम का सिद्धांत
   v. सामुदायिक जीवन से संबद्धता का सिद्धांत
   vi. अग्रदर्शिता का सिद्धांत
   vii. आवश्यकता का सिद्धांत
   viii. रुचि का सिद्धांत
   ix. सुसंबद्धता का सिद्धांत
   x. क्रिया का सिद्धांत
   xi. विविधता एवं लचीलेपन का सिद्धांत
10. पाठ्यचर्या संगठन की विभिन्न विधियों की सूची-
   i. विषयवस्तु / अनुशासन आधारित उपागम
   ii. विशिष्ट दक्षता उपागम
   iii. मानवीय गुण/प्रक्रिया उपागम
   iv. सामाजिक प्रकार्य/क्रिया-कलाप उपागाम
   v. व्यक्तिगत आवश्यकता एवं रुचि उपागम।
11. सामाजिक प्रकार्य/ क्रिया-कलाप उपागम का प्रयोग कर जब पाठ्यचर्या का संगठन किया जाता है तो जिन तीन बातोंका विशेष रुप से ध्यान दिया जाता है, वो निम्न हैं-
   i. जीवन के वास्तविक परिस्थितियों के इर्द –गिर्द विकसित होना चाहिए;
   ii. समाज की आवश्यकता को व्यक्ति विशेष की आवश्यकता से ज़्यादा बल देना चाहिए;
   iii. विद्यार्थियों की प्रत्यक्ष सहभागिता के द्वारा सामाजिक कार्य-क्षमता एवं सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना चाहिए।

1.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Eash, M. 1974. Instructional Materials In: Walberg H. J. (ed.) 1974. **Evaluating Educational Performance.** Mc Cutchan, Berkeley, California, Pp. 125-52.

2. Hunkins, F.P. 1980. **Curriculum Development: Program Planning and Improvement**. Merrill, Columbus, Ohio.
3. Saylor, J.G., Alexander, W.M. 1974. **Planning Curriculum for Schools.** Holt,. Rinehart and Winston, New York.
4. Taba, H. 1962. **Curriculum Development; Theory and Practice.** Harcourt, Brace and World, New York.
5. Walker, D.A. 1976, The IEA Six Subject Survey: An Empirical Study of Education Twenty-one Countries. Almquist and wiksell, Stockhom.
6. Zais, R.S. 1976, Curriculum: Principles and Foundations. Crowell, New York.
7. नन्द, के0 विजय एवं त्यागी, गुरुसरनदास, 2005, उदीयमान भारत में शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.
8. Hunkins, F.P. 1980. Curriculum Development: Program Planning and Improvement. Merrill, Columbus, Ohio.
9. लाल, रमन बिहारी 2009. शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ.

8.11 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या का अर्थ समझाते हुए एक अच्छे पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताओं का वर्णन करें।
2. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न तत्वों की व्याख्या करें।
3. पाठयचर्या प्रारुप के स्रोतों पर एक संक्षिप्त निबंध लिखें।
4. पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्या करें।
5. पाठयचर्या की संक्रियाओं के संदर्भ में पाठ्यचर्या संगठन के विभिन्न विधियों की व्याख्या करें।
6. वर्तमान माध्यमिक स्तर की पाठ्यचर्या की समीक्षा करते हुए यह बताए कि वह कौन से प्रारुप पर आधारित है और क्यों?

इकाई 2 पाठयचर्या प्रारुप : इसके प्रकार

2.1 प्रस्तवाना
2.2 उद्देश्य
2.3 पाठयचर्या प्रारुप के प्रकार
    2.3.1 विषय केन्द्रित प्रारुप
    2.3.2 विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप
    2.3.3 समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप
2.4 सारांश
2.5 शब्दावली
2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7 संदर्भ ग्रंथ सूची
2.8 सहायक/उपयोगी पाठ्यसामग्री
2.9 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

पाठयचर्या प्रारुप,पाठयचर्या निर्माण की दिशा में पहला कदम है। यह पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया को दिशा निर्देशित करता है। चूँकि पाठयचर्या एक परिवर्तनशील तत्व है इसलिए पाठयचर्या प्रारुप में भी निरंतर परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन बदलती हुई समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करना पड़्ता है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरुप पाठयचर्या प्रारुप के अनेक प्रकार अस्तित्व में आए।

पाठयचर्या शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली को समझने के लिए, उसमें प्रचलित पाठयचर्या को समग्र रुप में एवं खंड में समझना पड़ता है। अर्थात पाठयक्रम के विभिन्न तत्वों के अलग-अलग प्रभाव को एवं समग्र प्रभाव को समझना पड़ता है। इसके लिए पाठयचर्या के विभिन्न प्रकार का ज्ञान होना आवश्यक है। ये विभिन्न प्रकार के पाठयचर्या , विभिन्न प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप पर निर्भर करते हैं। अतः पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार का ज्ञान भी आवश्यक है।

शिक्षा प्रणाली के संतुलित विकास के लिए भी पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि किसी एक प्रारुप पर आधारित पाठयचर्या से शिक्षा प्रणाली का समुचित

विकास नहीं हो सकता है। उपयुक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर इस इकाई की रचना की गई है जो विद्यार्थियों को पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकारके विषय में जानकारी प्रदान करेगा।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई काअध्ययन करने के पश्चात् आप -

1. पाठयचर्या प्रारुप के नाम बता सकेंगे।
2. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार की व्याख्या कर सकेंगे।
3. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार की विशेषताओं एवं सीमाओं से अवगत होसकेंगे।

2.3 पाठयचर्या प्रारुप के प्रकार

पाठयचर्या प्रारुप को मुख्य रुप से तीन भागों में विभाजित किया जाता है| ये तीन प्रकार निम्नलिखित है:

1. विषयकेन्द्रित प्रारुप
2. विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप
3. समस्या केन्द्रित प्रारुप

2.3.1 विषय केन्द्रित प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप विभिन्न विषयों को केन्द्र में रखता है। इस प्रारुप के तहत अधिगम के पारंपरिक क्षेत्रों के लिए पारंपरिक विषयों को, अंतर्नुशासनिक विषयों के लिए समस्या-समाधान संबंधी तथा निर्णयन क्षमता संबंधी प्रक्रिया को इस उद्देश्य के साथ शामिल किया जाता है कि विद्यार्थी इन से प्राप्त सूचनाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सके। विषयकेन्द्रित प्रारुप को निम्नलिखित चित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है:

विषय केन्द्रित प्रारुप को पारंपरिक प्रारुप भी कहा जाता है। यह फिलिपींस देश में बहुत प्रसिद्ध है।

विषय केन्द्रित प्रारुप की विशेषताएँ

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप की मुख्य विशेषता है कि अत्यधिक संरचनात्मक स्वरुप के कारण इसका निर्माण काफी सरल होता है।

यह प्रारुप इस बात पर बल देता है कि विद्यार्थी किसी विशेष विषय या कोर्स से संबंधित ज्ञान का अधिकतम अर्जन कर सके।

रेखाचित्र संख्या - 1: विषय केन्द्रित प्रारुप

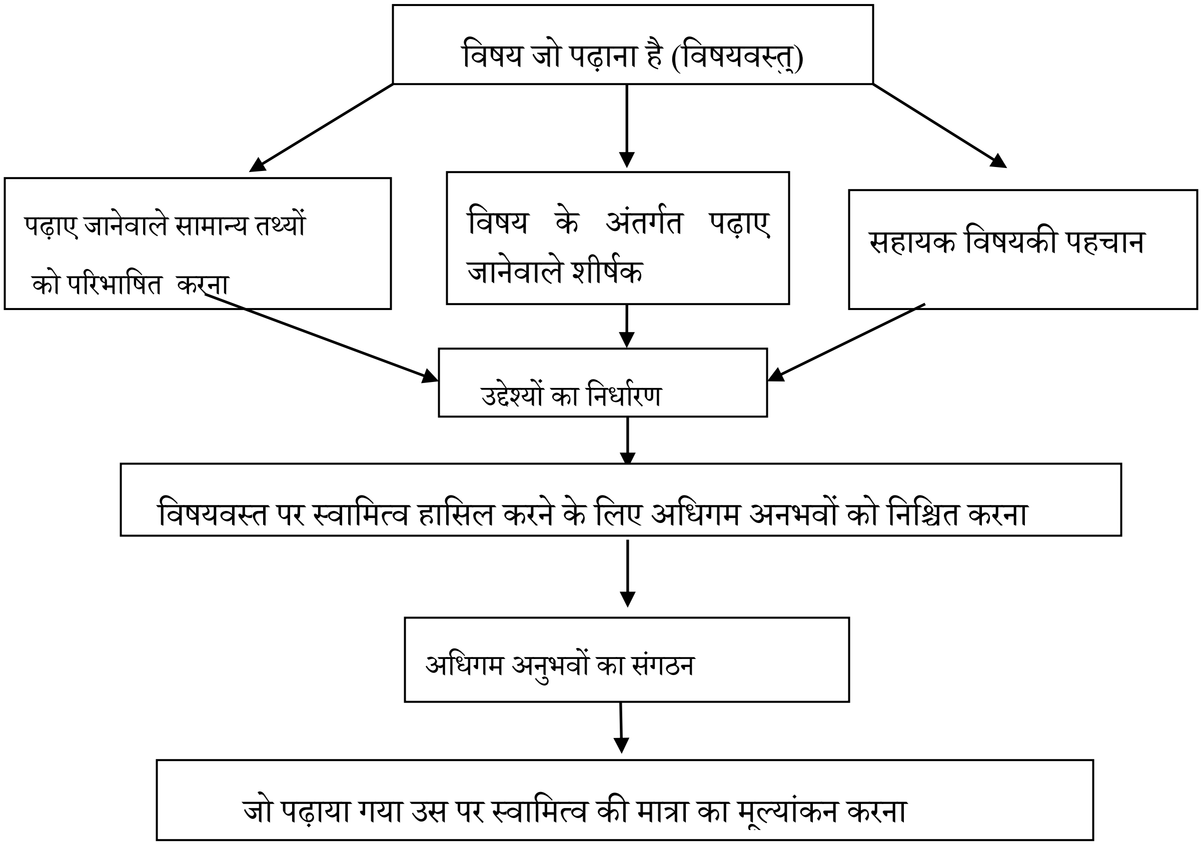

विषय केन्द्रित प्रारुप की सीमाएँ

1. इसमें अधिगम अत्यंत सीमित हो जाता है
2. यह विषयवस्तु पर इतना ज़्यादा ध्यान देता है कि बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों एवं रुचियों
   की ओर ध्यान नहीं दे पाता है।

अभ्यासप्रश्न

---

1. पाठयचर्या प्रारुप के कितने मुख्य प्रकार होते हैं?
2. पाठयचर्या का कौन सा प्रारुप विभिन्न विषयों को अपने केन्द्र में रखता है?
3. विषय केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप का निर्माण अत्यधिक सरल होने का क्या कारण है?

4. पाठयचर्या का विषय केन्द्रित प्रारुप, अधिगम को अत्यंत सीमित कर देता है। हाँ या नहीं

विषय केन्द्रित प्रारुप के प्रकार

इसके पाँच प्रकार होते हैं:

1. विषय प्रारुप
2. अनुशासन प्रारुप
3. सहसंबंधात्मक प्रारुप
4. प्रक्रिया प्रारुप
5. विस्तृत क्षेत्र प्रारुप

विषय प्रारुप

यह प्रारुप मुख्य रुप से इस मान्यता पर आधारित है कि मनुष्य को अद्वितीय उसकी बौद्धिकता बनाती है और ज्ञान की खोज एवं प्राप्ति बौद्धिकता की स्वाभाविक आवश्यकता है।

यह सबसे प्राचीन एवं प्रसिद्ध पाठयचर्या प्रारुप है। इस प्रारुप के तहत पाठयचर्या में मुख्य रुप से भाषा (वाचन, लेखन, व्याकरण एवं साहित्य), गणित, विज्ञान, इतिहास एवं विदेशी भाषाओं को ध्यान में रखा जाता है।

विषय प्रारुप की विशेषताएँ

1. इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं।
2. यह शाब्दिक क्रियाओं पर ज़्यादा बल देता है।
3. विद्यार्थियों को समाज के लिए आवश्यक ज्ञान से परिचित करता है।
4. क्रियान्वित करने में आसान होता है।
5. यह पारंपरिक है।

विषय प्रारुप की विशेषताएँ:

1. इसकी निम्नलिखित सीमाएँ हैं-
2. यह व्यक्ति विशेष पर बल नहीं दे पाता है।
3. विद्यार्थियों को हतोत्साहित करता है।
4. विद्यार्थियों के सामाजिक, शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास करने में असफल है।
5. अधिगम को सीमित करता है ।
6. विद्यार्थियों की रुचि, आवश्यकता एवं अनुभव को नकारता है।
7. निष्क्रियता को बढ़ाता है।

अनुशासन प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप सन् 1950 में प्रयोग में आना शुरु हुआ और सन् 1960 में इसका पूरे जोर-शोर से प्रयोग हो रहा था। पाठयचर्या का यह प्रारुप ब्रुनर के सिद्धांत पर आधारित है। ब्रुनर ने अपने सिद्धांत में कहा कि किसी भी उम्र के विद्यार्थी किसी भी विषय की मूलभूत बातों को समझने के योग्य होता हैं। इसके लिए किशोरावस्था या वयस्क होने का इंतज़ार नहीं करना पड़ता है। अतः पाठयचर्या को उस अनुशासन की संरचना के अनुसार व्यस्थित करना चाहिए जिसे पढ़ना है। पाठयचर्या के इस प्रारुप में पाठ्यवस्तु को जिस विधि से सीखना होता है वो विद्वानों द्वारा अपने क्षेत्र में अध्ययन करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। उदाहरणार्थ इतिहास का विद्यार्थी उसी विधि को प्रयोग में लाता है जो इतिहासविद् प्रयोग में लाते हैं।

अनुशासन प्रारुप की विशेषताएँ:

1. इस प्रारुप की निम्नलिखित विशेषताएँ थी
2. विद्यार्थी पाठ्यवस्तु पर स्वामित्व प्राप्त कर लेता है।
3. इस प्रारुप के तहत अधिगम स्बतंत्र होता है।
4. विकास के किसी भी अवस्था पर विद्यार्थी को कोई भी विषय सीखाया जा सकता है।

अनुशासन प्रारुप की सीमाएँ

इस प्रारुप की निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

1. यह ज्ञान एवं सूचनाओं की एक बड़ी मात्रा, जिन्हें किसी अनुशासन के रुप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता हैको नज़रअं ,दाज़ करता है।
2. विद्यार्थियों को पाठयचर्या को अपने अनुसार अनुकुलित करना पड़ता है।

अभ्यासप्रश्न

---

5. सहसंबंधात्मक प्रारुप .... का एक प्रकार है।
6. पाठयचर्या का अनुशासन प्रारुप सन् .... में शुरु हुआ।
7. .... ने अपने सिद्धांत में कहा कि कोई भी बालक विकास के किसी भीअवस्था में कुछ भी सीख सकता है।
8. विषय प्रारुप की एक सीमा यह है कि यह .... को हतोत्साहित करता है।

सहसंबंधात्मक प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप मुख्य रुप से इस बात पर बल देता है कि दो अलग-अलग विषयों को कैसे एक-दूसरे से संबंधित किया जाए ताकि उनके बीच सहसंबंध भी स्थापित हो जाए और उनकी अलग-अलग विषयों के रुप में पहचान भी बनी रहे। उदाहरणार्थ, अंग्रेजी साहित्य और इतिहास

माध्यमिक स्तर पर सहसंबंधित होनेवाले दो विषय है। इतिहास के चक्र में इतिहास पढ़ने के बाद विद्यार्थी अंग्रेजी के चक्र में उसी अवधि के अंग्रेजी साहित्य को पढ़ता है।

सहसंबंधात्मक प्रारुप की विशेषताएँ

इस प्रारुप की मुख्य विशेषता है कि इससे विषयों के बीच में अंतर्संबंध स्थापित होता है और विषयों की खंडता में कमी आती है;

सहसंबंधात्मक प्रारुप की सीमाएँ

इसकी सीमाएँ निम्नलिखित हैं:

1. इसके लिए एक वैकल्पिक समय सारणी की आवश्यकता होती है-।
2. अलग तरीके से योजना बनाने के लिए दक्ष शिक्षकों की आवश्यकता होती है।

प्रक्रिया प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप , सामान्य विधियों एवं सामान्य प्रक्रियाओं जो कि विषय विशेष के लिए नहीं बल्कि सभी विषयों को सीखने के लिए प्रयोग में लाई जा सकती हैं, को सीखने पर बल देता है। आलोचनात्मक और सर्जनात्मक चिंतन को सीखने के लिए प्रयोग में लाए जानेवाले पाठयचर्या , प्रक्रिया प्रारुप का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

यह प्रारुप इस मान्यता पर आधारित है कि कुछ कौशल एवं प्रक्रियाएँ किसी भी विषय को सीखने के लिए समान रुप से आवश्यक होती हैं। उन प्रक्रियाओं को सीखाना ही इस पाठयचर्या प्रारुप का मुख्य उद्देश्य है।

प्रक्रिया प्रारुप की विशेषता

इस प्रारुप की प्रमुख विशेषता यह है कि यह विद्यार्थियों को आलोचनात्मक रुप से चिंतन करना सीखाता है।

प्रक्रिया प्रारुप की सीमाएँ

यह विषयवस्तु पर बहुत कम ध्यान देता है।

विस्तृत क्षेत्र प्रारुप

इस प्रारुप को अंतर्नुशासनिक प्रारुप भी कहा जाता है। पाठयचर्या का यह प्रारुप उन विषयवस्तुओं को, जो एक-दूसरे के साथ तर्कसंगत रुप से जुड़ सकते हैँ, को जोडने का प्रयास करता है। उदाहरण के तौर पर भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र विषय के अलग-अलग पाठयचर्या को संलयित कर समाजशास्त्र का पाठयचर्या बनाया गया। पाठयचर्या के विस्तृत क्षेत्र प्रारुप को निम्नलिखित रेखाचित्र के माध्यम से और अच्छे तरीके से समझा जा सकता है:

रेखाचित्र संख्या-2 विस्तृत क्षेत्र पाठयचर्या प्रारुप

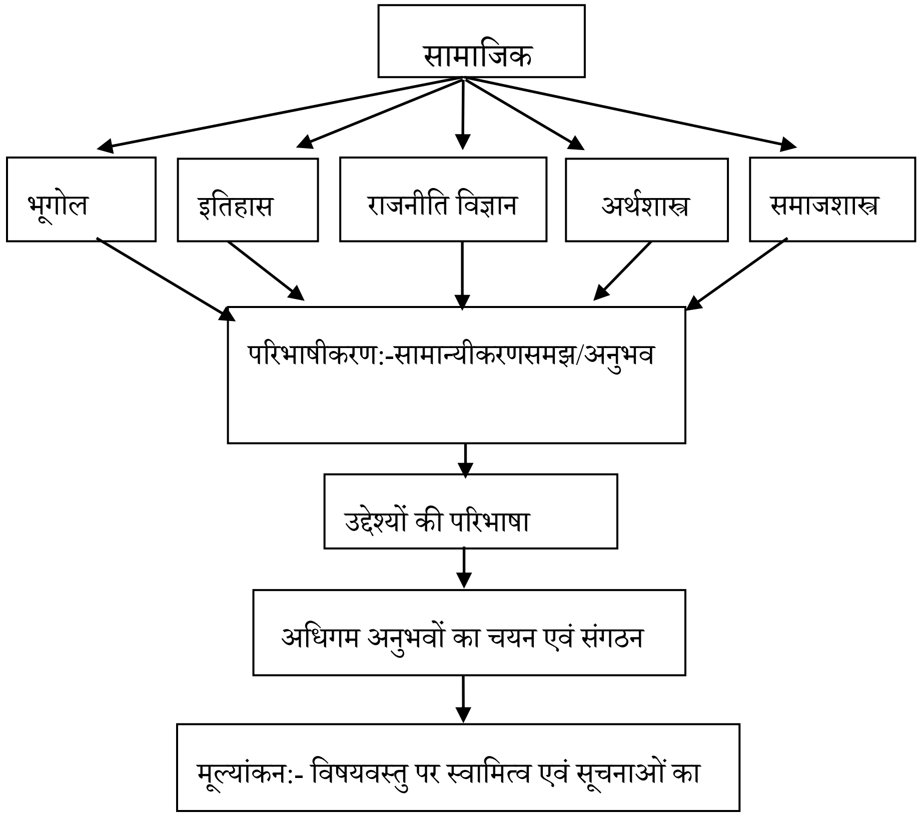

विस्तृत क्षेत्र पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताएँ

इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं:

1. विद्यार्थियों को विषयवस्तु के विभिन्न पक्षों के मध्य संबंध स्थापित करने की अनुमति देता है
2. ज्ञान का प्रसंकरण होता है।

विस्तृत क्षेत्र पाठयचर्या प्रारुप की सीमाएँ

पाठयचर्या के इस प्रारुप की मुख्य सीमा यह है कि पाठ्यवस्तु में विस्तार तो हो जाता है लेकिन उसकी गहनता खत्म हो जाती है।

अभ्यासप्रश्न

9. सहसंबंधात्मक प्रारुप के लिए वैकल्पिक समय-सारणी की आवश्यकता होती है।(सत्य/असत्य)
10. प्रक्रिया प्रारुप समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप का एक प्रकार है। (सत्य/असत्य)
11. प्रक्रिया प्रारुप विद्यार्थियों को आलोचनात्मक रुप से चिंतन करना सीखाने पर बल देता है। (सत्य/असत्य)
12. विस्तृत क्षेत्र प्रारुप में पाठ्यवस्तु में विस्तार होने के साथ-साथ उसकी गहनता भी बनी रहती है। (सत्य/असत्य)
13. विस्तृत क्षेत्र प्रारुप ज्ञान के प्रसंकरण को जन्म देता है।(सत्य/असत्य)

2.3.2 विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप मुख्यत: विद्यार्थियों की रुचि एवं आवश्यकता को केन्द्र में रखकर बनाया जाता है। इस प्रकार के प्रारुप में कुछ सामान्य कार्य-कलाप जैसे- खेल, चित्रकला, कहानी आदि जिसमें कि बच्चों को शामिल किया जा सकता है, को अध्ययन-अध्ययापन के केन्द्र में रखा जाता है। पाठ्यवस्तु अलग-अलग विषयों(गणित, विज्ञान) आदि में विभाजित होकर कार्य-कलापों (खेलना, कहानी- कथन) आदि में विभाजित रहता है। विद्यालय पूर्व स्तर पर इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप को काफी महत्व दिया जाता है।

विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप की विशेषताएँ

इस पाठयचर्या प्रारुप की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें थ्री आर (रिडिंग, राइटिंग एवं अर्थमेटिक) के संप्रत्यय को विभिन्न कार्य-कलापों में समाहित कर दिया जाता है।

विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप की सीमाएँ

यह विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के पक्ष को नकारता है।

विद्यार्थी केन्द्रित प्रारुप के प्रकार

इसके चार प्रकार हैं:

1. बाल केन्द्रित प्रारुप
2. अनुभव केन्द्रित प्रारुप
3. रुमानी या रैडिकल प्रारुप
4. मानवतावादी प्रारुप

बाल केन्द्रित प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप विद्यार्थियों को उनके वास्तविक वातावरण में सक्रिय रखकर अध्ययन-

अध्ययापन की बात करता है। अर्थात पाठयचर्या का यह प्रारुप शिक्षण को वास्तविक जीवन से अलग नहीं मानता है। पाठयचर्या के इस प्रारुप के निर्माण में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों की सक्रिय भूमिका होती है। दोनों मिलकर पाठयचर्या के लिए योजना बनाते हैं, उसके उद्देश्य तय करते हैं, कार्य-कलाप तथा प्रयोग में लाए जानेवाले साधनों को तय करते हैं। इस तरह के पाठयचर्या प्रारुप के समर्थकों में जॉन डीवी, रुसो, पेस्टालॉजी, फ्रॉबेल का नाम उल्लेखनीय है।

बाल केन्द्रित प्रारुप की विशेषताएँ

1. सरंचनात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करता है
2. पाठ्यवस्तु को अलग-अलग विषयों में नहीं बल्कि अनुभव की इकाइयों के रुप में विभाजित किया जाता है
3. कर के सीखने पर ज़्यादा बल देता है, फलस्वरुप विद्यार्थी शिक्षक और वातावरण के मध्य अंतर्क्रिया को भी बल मिलता है।

बाल केन्द्रित प्रारुप की सीमाएँ

1. पाठ्यवस्तु निश्चित नहीं होती है।
2. कर के सीखने की विधि हर तरह के पाठ्यवस्तु के लिए उपयुक्त नहीं होती है।

अनुभव केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप, बाल केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप से बहुत ज़्यादा मिलत-जुलता है। लेकिन इस तरह के पाठयचर्या प्रारुप में सबकुछ कार्यस्थल अर्थात विद्यालय में शिक्षण के समय हीं संपादित होता है। इसमें विद्यार्थियों की रुचियों एव आवश्यकताओं को पहले से कल्पित नहीं किया जाता है। पाठयचर्या का यह प्रारुप, बच्चों के विद्यालय की दुनिया को व्यवस्थित करने के लिए बालकों के विचार एवं सोच को प्रयोग में लाते हैं।

अनुभव केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताएँ

इसकी मुख्य विशेषता है कि यह विद्यार्थियों के स्वाभाविक अनुभव पर आधारित होता है।

अनुभव केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप की सीमाएँ

इसकी निम्नलिखित सीमाएँ हैं-

1. इसमें पाठयचर्या का कोई भी घटक विशिष्ट नहीं होता है।
2. एक सार्वभौम पाठयचर्या संरचना का निर्माण नहीं किया जा सकता है।
3. इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप का क्रियान्वयन अत्यंत हीं चुनौतीपूर्ण है।

रुमानी या रैडिकल प्रारुप

पठ्यक्रम का यह प्रारुप मुक्ति को शिक्षा का लक्ष्य मानता है। इसका मानना है कि विद्यार्थियों को, जागरुकता, दक्षता तथा अभिरुचि विकसित करने की आवश्यकता है ताकि अपने इन्द्रियों या अपने जीवनचर्या को नियंत्रित करने में वो सक्षम हो सके। इस सिद्धांत की पृष्ठभूमि में यह मान्यता कार्य करती है कि वर्तमान समाज भ्रष्ट एवं दमनकारी है तथा इसको ठीक करना भी संभव नहीं है।

रुमानी या रैडिकल प्रारुप की विशेषताएँ-

1. विद्यार्थी को मुक्ति मार्ग पर अग्रसर करता है।
2. इस प्रारुप का आधार दार्शनिक सिद्धांत है।
3. इस प्रकार का पाठयचर्या प्रारुप मनुष्यों के मध्य पारस्परिक अंतर्क्रिया को बढ़ावा देता है।

रुमानी या रैडिकल प्रारुप की सीमाएँ

1. यह समाज के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है।
2. सिर्फ मुक्ति को शिक्षा का उद्देश्य नहीं माना जा सकता है।

मानावतावादी प्रारुप

पाठयचर्या के इस प्रारुप के समर्थकों में अब्राहम मास्लो एवं कार्ल रोजर्स का नाम उल्लेखनीय है। यह मुख्य रुप से अब्राहम मास्लो द्वारा विकसित सेल्फ एक्चुलाइजेशन के सिद्धांत पर आधारित है। पाठयचर्या का यह प्रारुप मनुष्य अर्थात विद्यार्थी की क्षमताओं को विकसित करने और विद्यार्थी को स्वनिर्माण की प्रक्रिया में शामिल करने संबंधी एवं गतिविधियों एवं पाठ्यवस्तुओं को केन्द्र में रखता है। पाठयचर्या का यह प्रारुप मानता है कि 'स्व-निर्माण' अधिगम का अंतिम उद्देश्य है तथा संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक पक्ष अलग-अलग होते हुए भी एक-दूसरे से सार्थक रुप में सहसंबंधित हैं और इन तीनों को इसी रुप में पाठयचर्या में शामिल भी किया जाना चाहिए।

मानवतावादी प्रारुप की विशेषताएँ

1. यह व्यक्ति विशेष को सामर्थ्यवान बनाता है। प्रत्येक व्यक्ति खुद की आवश्यकताओं को भली-भाँति जानने में समर्थ हो जाता है
2. यह प्रारुप विद्यार्थियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को भी सम्मान देता है।
3. यह कक्षाकक्ष से बाहर की दुनिया के लिए आवश्यक शिक्षा तक विद्यार्थियों की पहुँच बनाने हेतु कक्षाकक्षगतिविधि एवं विद्यार्थी के मध्य एक प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करता है। परिणामस्वरुप, विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन में, विद्यालय में सीखे गए ज्ञान का आसानी से प्रयोग कर सकता है।

मानवतावादी प्रारुप की सीमाएँ

1. समाज की आवश्यकता की तुलना में व्यक्ति विशेष की आवश्यकता पर बल देता है
2. इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप के निर्माण के लिए शिक्षक को उत्तरदायी माना गया है।लेकिन शिक्षक के पर्याप्त मात्रा में योग्य नहीं होने के कारण तथा संसाधन एवं समय की कमी के कारण पाठयचर्या के इस प्रारुप का निर्माण कठिन हो जाता है
3. विद्यार्थियों की रुचियों एवं वर्तमान परिदृश्य के लिए आवश्यक कौशलों के मध्य संतुलन स्थापित करना एक दुष्कर कार्य है।

अभ्यासप्रश्न

---

14. समूह 'क' को समूह 'ख' से मिलाइए।

समूह क	**समूह ख**
1. मानवतावादी प्रारुप	(अ) पाठयचर्या निर्माण में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों की सक्रिय भूमिका
2. रुमानी या रैडिकल प्रारुप	(ब) विद्यार्थियों के स्वाभाविक अनुभव पर आधारित
3. अनुभव केन्द्रित प्रारुप	(स) समाज के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह
4. बाल केन्द्रित प्रारुप	(द) व्यक्ति विशेष की आवश्यकता पर अधिक बल

2.3.3समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप

किसी वास्तविक या उपकल्पित समस्या को केन्द्र में रखकर पाठ्यवस्तु को संगठित करने के लिए जब पाठयचर्या प्रारुप का निर्माण किया जाता है, तो इसे समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप कहा जात्ता है। पाठयचर्या के इस प्रारुप में विद्यार्थी अधिक शामिल होते हैं क्योंकि उनका उद्देश्य अपनी समस्या का समाधान करना होता है। इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप में मुख्य रुप से निम्नलिखित समस्याओं को ध्यान रखा जाता है:

1. जीवन की वास्तविक समस्याएँ
2. विद्यालयी जीवन की समस्याएँ
3. स्थानीय परिस्थिति जनित समस्याएँ
4. दार्शनिक एवं नैतिक समस्याएँ।

समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप की विशेषताएँ

इस प्रकार के पाठयचर्या प्रारुप की मुख्य विशेषताएँ यह है कि पाठयचर्या जिसके लिए बनाया जाता है वो सिर्फ सैद्धांतिक रुप से हीं नहीं वरन् व्यवहारिक रुप से भी अधिक सहभागिता प्रदर्शित

करता है।

समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप की सीमाएँ

इस पाठयचर्या प्रारुप की मुख्य सीमा यह है कि समय, धन एवं आवश्यक संसाधनों के अभाव में इसका क्रियान्वयन समुचित रुप से नहीं हो पाता है।

समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप के प्रकार

पाठयचर्या के इस प्रारुप के तीन प्रकार हैं-

1. जीवन-परिस्थिति प्रारुप
2. आधारभूत प्रारुप
3. सामाजिकि समस्या एवं सरंचनात्मकवादी प्रारुप

जीवन परिस्थिति प्रारुप

पाठयचर्या का यह प्रारुप हर्बर्ट स्पेंसर के पाठयचर्या संबंधी लेखों पर आधारित है। उन्होंने अपने पाठयचर्या संबंधी लेखों में उन क्रिया-कलापों जो जीवन को उन्नत करता है, व्यक्ति विशेष के सामाजिक और राजनैतिक संबंधों को बनाए रखता है, अवकाश के समय में तथा कार्य एवं महसूस करने की क्षमता में वृद्धि करता है, पर बल दिया गया है। जीवन परिस्थिति पाठयचर्या प्रारुप भी इससे प्रकार की क्रियाओं को पठ्यक्रम में शामिल करने पर बल देता है। पाठयचर्या का यह प्रारुप म्रुख्य रुप से तीन मान्याअताओं पर आधारित है:

जीवन की जटिल परिस्थितियाँ समाज को बेहतर एवं सफल कार्य प्राणली के लिए महत्वपूर्ण है परिणामस्वरुप उनको केन्द्र में रखकर एक पाठयचर्या बनाना आवश्यक है;

विद्यार्थी जो पढ़ते हैं, उसकी प्रासंगिकता सामाजिक जीवन के संदर्भ में देखते हैं, यदि पाठ्यवस्तु सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर संगठित किया गया है।विद्यार्थी समाज के विकास में प्रत्यक्ष रुप से सहभागी होंगे।

इस प्रकार जब पाठयचर्या प्रारुप का निर्माण विद्यार्थी की सामाजिक विकास में प्रत्यक्ष सहभागिता को बढ़ाने के उद्देश्य के साथ, विद्यार्थी के विगत एवं वर्तमान अनुभवों के द्वार जीवन के आधारभूत क्षेत्रों का विश्लेषण कर, उन क्षेत्रों को विकसित करनेवाले कार्य-कलापों को केन्द्र में रखकर किया जाता है, तो उसे जीवन-परिस्थिति पाठयचर्या प्रारुप कहते हैं।अति सरल शब्दों में यदि कहा जाय तो पाठयचर्या का यह प्रारुप जीवन की विभिन्न परिस्थितियों एवं समस्याओं जैसे स्वास्थ्य, आवास, व्यवसाय, नैतिकता आदि पर आधारित होता है।

जीवन परिस्थिति प्रारुप की विशेषताएँ

1. पाठ्यवस्तु का जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से संबंधित होने के कारण, पाठयचर्या की प्रासंगिकता में वृद्धि हो जाती है।
2. विषयवस्तु को खंडों के बजाय एक समग्र इकाई के रुप में प्रस्तुत करता है; तथा
3. समस्या समाधान विधि का पाठयचर्या के इस प्रारुप में बहुत प्रयोग किया जाता है।

जीवन परिस्थिति प्रारुप की सीमाएँ-

1. अधिगम के आवश्यक क्षेत्रों एवं उसके क्रम को कैसे निर्धारित किया जाएगा, पाठयचर्या का यह प, इस विषय पर मौन है।
2. विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक विरासत से बहुत अधिक परिचित नहीं करा पाता है।

आधारभूत (कोर) प्रारुप

इस प्रकार का पाठ्यक्रम प्रारुप औपचारिक शिक्षा पर आधारित होता है। समस्याएँ सामान्य मानवीय क्रियाओं पर आधरित होती हैं जिनका चयन शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों मिलकर कर सकते हैं या दोनों में से कोई एक भी। विद्यार्थियों के समक्ष क्रियान्वित करने से पहले पाठयचर्या पूरी तरह नियोजित हो जाता है लेकिन इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि यदि आवश्यकता पड़े तो उसमें सामंजन किया जा सके।

आधारभूत (कोर) प्रारुप की विशेषताएँ-

1. पाठ्यवस्तु में एकरुपता होती है।
2. पाठ्यवस्तु प्रासंगिक होती है।
3. कक्षाकक्ष में प्रजातंत्र की भावना के विकास का संवर्द्धन करता है।

आधारभूत (कोर) प्रारुप की सीमाएँ

1. इसके लिए विशेष रुप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है।
2. पाठ्यसामग्री की प्राप्ति भी एक दुष्कर कार्य है।

सामाजिक समस्या एवं पुनर्निर्माणवादी प्रारुप

पाठयचर्या के इस प्रारुप का मुख्य लक्ष्य अनेक गंभीर मानवीय समस्याओं के विश्लेषण प्रक्रिया में, विद्यार्थी को शामिल करना होता है। यह मुख्य रुप से उन क्रिया-कलापों पर आधारित होता है जो विद्यार्थी को स्थानीय, राष्ट्रीयएवं अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का आलोचनात्मक विश्लेषण करने में सहायता प्रदान करते हैं। व्यापारियों एवं समाज के राजनीतिक क्रिया-कलापों तथा अर्थव्यवस्था पर उसके प्रभाव को भी पाठ्यवस्तु के अंतर्गत रखा जाता है।

सामाजिक प्रारुप की विशेषताएँ

1. इस पाठयचर्या प्रारुप की प्रमुख विशेषता यह है कि पाठ्यवस्तु एवं शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण उसी के द्वारा किया जाता है जो वास्तविक रुप से पाठयचर्या का निर्माण करता है।
2. पाठयचर्या के इस प्रारुप का उद्देश्य समाज का पुनर्निर्माण है।

सामाजिक प्रारुप की सीमाएँ:

इस प्रारुप की मुख्य सीमा यह है कि यह सामाजिक विकास को व्यक्तिगत विकास की तुलना में अधिक बल देता है।

अभ्यासप्रश्न

---

15. निम्न में से कौन समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप का प्रकार नहीं है:
    i. जीवन परिस्थिति प्रारुप
    ii. आधारभूत प्रारुप
    iii. सामाजिक समस्या एवं सरंचनात्मकतावादी प्रारुप
    iv. मानवतावादी प्रारुप
16. समस्या केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्यहै-
    i. अधिगमकर्ता सिर्फ सैद्धांतिक रुप से शामिल होता है।
    ii. सैद्धंतिक एवं व्यावहारिक दोनों रुपों में शामिल होता है।
    iii. आवश्यक संसाधनों के अभाव में अनुचित क्रियान्वयन।
    iv. उपयुक्त सभी सत्य है।
17. जीवन परिस्थिति प्रारुप किसके लेखों पर मुख्य रुप से आधारित है:
    i. अब्राहाम मॉस्लो
    ii. कार्ल रोजर्स
    iii. फ्रोबेल
    iv. हर्बर्ट स्पेंसर
18. आधारभूत(कोर) प्रारुप के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है:
    i. पाठ्यवस्तु में एकरुपता होती है
    ii. पाठ्यवस्तु प्रासंगिक होती है
    iii. पाठ्यसामग्री की प्राप्ति एक दुष्कर कार्य है
    iv. इसके लिए विशेष रुप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता नहीं है।

2.4 सारांश

शिक्षा प्रणाली के एक महत्वपूर्ण अंग, पाठयचर्या के निर्माण से पहले उसके रुप-रेखा अर्थात उसके प्रारुप के विभिन्न प्रकार का ज्ञान विद्यार्थी के लिए अति उपयोगी है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत इकाई में पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकार की विस्तृत व्याख्या उनकी विशेषताओं एवं सीमाओं के साथ की गई है। स्थान-स्थान पर उपयुक्त उदाहरणों एवं रेखाचित्रों के द्वारा विषयवस्तु को और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है ताकि विषयवस्तु अधिगम कर्ता के लिए सुग्राह्य हो सके। पाठयचर्या प्रारुप के मुख्य प्रकार के साथ-साथ उनके उप प्रकारों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है ताकि विषयवस्तु अधिगमकर्ता को अधिक स्पष्ट हो सके और अधिगमकर्ता जीवन की वास्तविक परिस्थिति में इसका उपयोग कर सके। इस प्रकार यह इकाई विद्यार्थी के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगी।

2.5 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पाठयचर्या प्रारुप के 3प्रकार होते हैं
2. विषय केन्द्रित प्रारुप
3. अत्यधिक संरचनात्मक स्वरुप
4. हाँ
5. विषय केन्द्रित प्रारुप
6. 1950
7. ब्रुनर
8. विद्यार्थियों
9. सत्य
10. असत्य
11. असत्य
12. सत्य
13. सत्य
14. (1) द (2) स (3) ब (4) अ
15. iv मानवतावादी प्रारुप
16. i अधिगमकर्ता सिर्फ सैद्धांतिक रुप से शामिल होता है।
17. iv हर्बर्ट स्पेंसर
18. iv इसके लिए विशेष रुप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता नहीं है।

2.6 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Retrived from www.slideshare.com on 15 March,2013

2. Retrived from www.slideshare.com on 17 March,2013

2.7सहायक/उपयोगी पाठ्यसामग्री

1. Anderson, D.C. (1980). Evaluating Curriculum proposals : A critical Guide. Wiley, New York.
2. Rug, H.O. (1927). The foundations of curriculum making. Twenty-sixth yearbook of the
3. National Society for the Study Of Education. Part II, Public school publishing. Bloomington, Illinois.
4. Schubert, W.H. (1980). Curriculum Books : the first eighty years : context, commentary andbibliography. University press of America, Lanham, Maryland.

2.8निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकारों का उनकी विशेषताओं एवं सीमाओं के साथ वर्णन करें।
2. विषय केन्द्रित प्रारुप के विभिन्न प्रकारों का उनकी विशेषताओं एवं सीमाओं के साथ वर्णन करें।
3. विद्यार्थी केन्द्रित पाठयचर्या प्रारुप के विभिन्न प्रकारों का वर्णन उनकी विशेषताओं एवं सीमाओंके साथ करें।
4. आप जिस पाठयचर्या का अध्ययन कर रहे हैं वो किस पाठयचर्या प्रारुप का अनुपालन करता है ? तर्कसंगत उत्तर दें।

इकाई 3 पाठयचर्या निर्माण के विभिन्न प्रतिमान

3.1 प्रस्तवाना
3.2उद्देश्य
3.3 पाठयचर्या प्रतिमान का अर्थ एवं संप्रत्यय
3.4 पाठयचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण
3.4.1 पाठयचर्या का उद्देश्य/मूल्यांकन प्रतिमान
3.4.2 पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान
3.4.3 पाठयचर्या का परिस्थिति प्रतिमान
3.5 पाठयचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण: स्वरुप के आधार पर
3.5.1 पाठयचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान
3.5.2 पाठयचर्या विकास का विशिष्ट प्रतिमान
3.6 सारांश
3.7 शब्दावली
3.8 अभ्यासप्रश्नों के उत्तर
3.9 संदर्भ ग्रंथ
3.10 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा एक आवश्यक प्रक्रिया है जिसके संपादन के लिए पाठयचर्या एक आवश्यक शर्त्त है। पाठयचर्या राष्ट्र की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक स्थिति आदि पर निर्भर करता है। अब चूकि, राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थितियाँ परिवर्तनशील है फलस्वरुप पाठयचर्या भी परिवर्तित होते रहता है। इस प्रकार, देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार, पाठयचर्या के कई रुप सामने आए लेकिन ये अस्पष्ट थे और इनके पीछे कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था। कालांतर में जब पाठयचर्या निर्माण के क्षेत्र में शोधकार्य प्रारंभ हुए, तो पाठयचर्या निर्माण के अनेक प्रतिमान विकसित हुए। प्रस्तुत इकाई इन्हीं पाठयचर्या प्रतिमानों पर प्रकाश डालती है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. पाठयचर्या निर्माण के अर्थ एवं संप्रत्यय को समझ सकेंगे
2. पाठयचर्या प्रतिमान का विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण कर सकेंगे
3. विभिन्न पाठयचर्या प्रतिमानों का उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे।

3.3 पाठयचर्या प्रतिमान का अर्थ एवं संप्रत्यय

प्रतिमान शब्द आंग्ल भाषा के शब्द 'मॉडल' का हिन्दी रुपांतर है, जिसका अर्थ होता है, किसी व्यक्ति, वस्तु, अथवा क्रिया के वास्तविक स्वरुप का बोध कराने वाला परिकल्पनात्मक या कार्यात्मक रुप। हेनरी सीसिल वील्ड ने 'युनिवर्सल डिक्शनरी ऑफ एंगलिश लैंग्वेज' में मॉडल को परिभाषित करते हुए लिखा है – " किसी आदर्श के अनुरुप व्यवहार क्रिया को ढ़ालने तथा क्रिया की ओर निर्देशित करने की प्रक्रिया, मॉडल या प्रतिमान होती है।

पाठयचर्या शब्द को प्रतिमान के साथ जोड़ देने पर यह पाठयचर्या प्रतिमान हो जाता है, जिसका अर्थ होता है 'पाठयचर्या का स्वरुप' जो शैक्षिक लक्ष्यों पर आधारित होता है। पाठयचर्या प्रतिमान को निम्न शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है- पाठयचर्या प्रतिमान से आशय शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु, पाठयचर्या के निर्माण या इसके लिए दिशा-निर्देशन की प्रक्रिया के स्वरुप निर्धारण से है।

अभ्यासप्रश्न

1. प्रतिमान शब्द आंग्ल भाषा के शब्द 'मॉडल' का हिन्दी रुपांतर है?
2. हेनरी सीसिल वील्ड द्वारा 'युनिवर्सल डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लैंग्वेज' में 'मॉडल' शब्द के लिए जो अर्थ दिया है उसे लिखें।

3.4 पाठयचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण

चूँकि पाठयचर्या में उद्देश्य, प्रक्रिया एवं परिस्थिति तीन तथ्यों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है, इसलिए इन तीन तथ्यों में परिवर्तन के साथ पाठयचर्या विकास के प्रतिमान में भी परिवर्तन होते रहते हैं। वर्तमान में मौजूद पाठयचर्या प्रतिमान को उपर्युक्त तीन तथ्यों के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है। ये तीन वर्ग निम्नलिखित हैं:

1. उद्देश्य या मूल्यांकन प्रतिमान
2. प्रक्रिया प्रतिमान
3. परिस्थिति प्रतिमान

3.4.1 पाठयचर्या का उद्देश्य/मूल्यांकन प्रतिमान

इस प्रतिमान में शैक्षिक उद्देश्यों को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हुए पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है। उद्देश्यों की प्राप्ति का ज्ञान शिक्षार्थी के व्यवहार में वांछित परिवर्तन से होता है और शिक्षार्थी के व्यवहार में परिवर्तन का ज्ञान मूल्यांकन से होता है। अत:इसे मूल्यांकन प्रतिमान भी कहते हैं। इस प्रतिमान में निम्नलिखित सोपान का अनुसरण किया जाता है:

i. शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण
ii. उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अधिगम
iii. वांछित व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन

पाठयचर्या विकास का यह प्रतिमान व्यावहारिक मनोविज्ञान पर आधारित होता है।

3.4.2 पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान

इस प्रकार के प्रतिमान में प्रक्रिया को प्राथमिकता दी जाती है। इस प्रकार के प्रतिमान में पाठ्यवस्तु की सहायता से मानवीय गुणों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। चूँकि यह एक प्रक्रिया प्रतिमान है और शिक्षण प्रक्रिया का संपादन मुख्य रुप से शिक्षक के द्वारा होता है। अतः इस प्रकार के प्रतिमान में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह प्रतिमान 'मानव-व्यवस्था सिद्धांत' पर निर्भर करता है। इस प्रकार के प्रतिमान में शिक्षण व्यवस्था छात्र-केन्द्रित होती है तथा इसमें छात्रों की अवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाता है। इसी प्रतिमान के आधार पर पाठयचर्या को अनुभव-केन्द्रित, कार्य-केन्द्रित तथा एकीकृत पाठयचर्या का निर्माण किया गया है।

3.4.3 पाठयचर्या का परिस्थिति प्रतिमान

इस प्रतिमान के अंतर्गत उन परिस्थितियों को महत्व दिया जाता है जो शिक्षा एवं पाठयचर्या को प्रभावित करती है। प्रणाली उपागम के प्रयोग द्वारा शैक्षिक परिस्थितियों के वाह्य एवं आंतरिक घटकों को पहचाना जाता है। तत्पश्चात इन घटकों को ध्यान में रखकर पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है। इस प्रतिमान के आधार पर विषय केन्द्रित पाठयचर्या , कोर पाठयचर्या , बाल-केन्द्रित पाठयचर्या तथा सुसंबद्ध पाठयचर्या आदि का निर्माण किया गया है।

अभ्यास प्रश्न

---

3. पाठयचर्या प्रतिमान के सामान्य वर्गीकरण के अनुसार उसके कितने प्रतिमान हैं?
4. पाठयचर्या के उद्देश्य/मूल्यांकन प्रतिमानमें -------------को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हुए पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है।
5. -------------प्रतिमान 'मानव-व्यवस्था सिद्धांत' पर निर्भर करता है।

6. पाठयचर्या के उद्देश्यप्रतिमानको मूल्यांकन प्रतिमान भी कहते हैं। (सत्य/असत्य)
7. -------------- प्रतिमान के आधार पर विषय केन्द्रित पाठयचर्या , कोर पाठयचर्या , बाल-केन्द्रित पाठयचर्या तथा सुसंबद्ध पाठयचर्या आदि का निर्माण किया गया है।
8. पाठयचर्या के परिस्थिति प्रतिमान केअंतर्गत उन परिस्थितियों को महत्व दिया जाता है जो शिक्षा एवं पाठयचर्या को प्रभावित करती है। (सत्य/असत्य)
9. -------------- प्रकार के प्रतिमान में शिक्षण व्यवस्था छात्र-केन्द्रित होती है।

3.5 पाठयचर्या प्रतिमान का वर्गीकरण

स्वरुप के आधार पर पाठयचर्या प्रारुप को दो मुख्य भागों में बाँटा गया है:

1. पाठयचर्या विकास का सामान्य प्रतिमान
2. पाठयचर्या विकास के कुछ विशिष्ट प्रतिमान।

3.5.1 पाठयचर्या विकासकासामान्यप्रतिमान

इस प्रकार के पाठयचर्या प्रतिमान का विकास शिक्षकों एवं शिक्षण प्रक्रिया के अन्य सहभागी घटकों के सहयोग से सामान्य रुप में कर लिया जाता है। इस प्रकार के प्रतिमान का निर्माण में मुख्य रुप से निम्न सोपानों का प्रयोग किया जाता है:

1. शिक्षक तथा शिक्षण प्रक्रिया के अन्य सजीव तथा मूर्त घटक के दल द्वारा पाठयचर्या के क्षेत्रका सर्वेक्षण तथा उपल्ब्ध साधानों का आकलन।
2. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण।
3. शैक्षिक उद्देश्यों के अनुकूल पाठ्यवस्तु का चयन एवं निर्माण।
4. विद्यालयों में पाठ्यवस्तु के पूर्व परीक्षण, पुनःमूल्यांकन एवं संशोधन।
5. पाठ्यवस्तु का कुछ विद्यालयों में पूर्व परीक्षण।
6. पूर्व-परीक्षण के आधार पर पाठ्यसामग्री का मूल्यांकन एवं आवश्यकतानुसार संशोधन।
7. आवश्यकता पड़ने पर व्यापक स्तर पर पूर्व-परीक्षण पुनः मूल्यांकन तथा संशोधन।
8. तैयार सामग्री का प्रकाशन एवं प्रसार तथा उसके उपयोग के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण काआयोजन।
9. पाठयचर्या का क्रियान्वय़न।
10. पाठयचर्या का मूल्यांकन एवं आवश्यकतानुसार संशोधन ।

3.5.3 पाठयचर्या विकास के विशिष्ट प्रतिमान

जब पाठयचर्या विशेषज्ञों द्वारा पाठयचर्या विकास के प्रतिमान तैयार किए जाते हैं तो इसे पाठयचर्या विकास के विशिष्ट प्रतिमान कहे जाते हैं। विशेषज्ञों ने कई महत्वपूर्ण प्रतिमान विकसित किए हैं जिनमें से कुछ प्रमुख का निम्नलिखित हैं:

1. पाठयचर्या विकास का व्यस्था आधारित प्रतिमान
2. पाठयचर्या विकास का कार्यात्मक प्रतिमान
3. पाठयचर्या आयोजन का प्रक्रिया प्रतिमान
4. हिल्दा टाबा का व्यापक मूल्यांकन पाठयचर्या प्रतिमान
5. मुखोपाध्याय निर्मित पाठयचर्या प्रतिमान
6. सरन अदा प्रणाली पाठयचर्या प्रतिमान
7. टेलर का प्रतिमान।

पाठयचर्या का व्यवस्था आधारित प्रतिमान

पाठयचर्या के व्यवस्था आधारित प्रतिमान के प्रतिपादक श्री एम0 एस0 हक महोदय है। इस प्रतिमान में पाठयचर्या को निवेश के रुप में तथा शिक्षित मानव शक्ति को उत्पाद माना जाता है। यह प्रतिमान पाठयचर्या परिवर्तन के समय स्वीकृत सामाजिक मूल्यों कोराष्ट्रीय लक्ष्यों का एक आवश्यक अंग मानाता है।

अभ्यासप्रश्न

---

10. जब पाठयचर्या विशेषज्ञों द्वारा पाठयचर्या विकास के प्रतिमान तैयार किए जाते हैं तो वेपाठयचर्या विकास के--------- कहे जाते हैं।
11. पाठयचर्या के व्यवस्था आधारित प्रतिमान के प्रतिपादक हैं -----------।
12. पाठयचर्या के व्यवस्था आधारित प्रतिमान में पाठयचर्या को निवेश के रुप में तथा शिक्षित मानव शक्ति को उत्पाद माना जाता है।(सत्य/ असत्य)

पाठयचर्या विकास का कार्यात्मक प्रतिमान

इस प्रतिमान का प्रतिपादन जॉन एफ0 केर ने किया था। इस प्रतिमान को निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है:

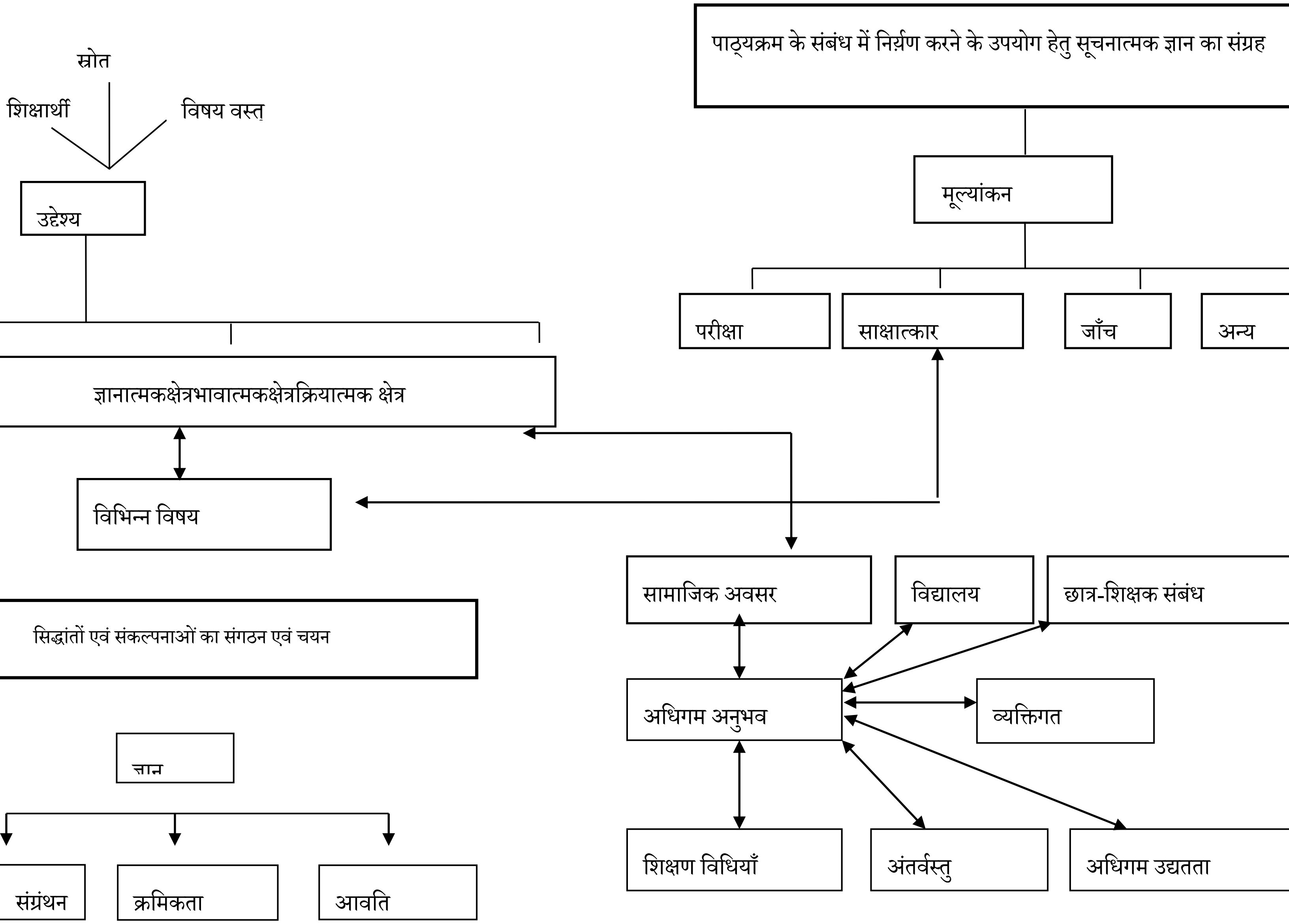

स्रोत
शिक्षार्थी
विषय वस्त्
उद्देश्य
ज्ञानात्मकक्षेत्रभावात्मकक्षेत्रक्रियात्मक क्षेत्र
विभिन्न विषय
सिद्धांतों एवं संकल्पनाओं का संगठन एवं चयन
ज्ञान
संग्रंथन
क्रमिकता
आवति
पाठ्यक्रम के संबंध में निर्यण करने के उपयोग हेतु सूचनात्मक ज्ञान का संग्रह
मूल्यांकन
परीक्षा
साक्षात्कार
जाँच
अन्य
सामाजिक अवसर
विद्यालय
छात्र-शिक्षक संबंध
अधिगम अनुभव
व्यक्तिगत
शिक्षण विधियाँ
अंतर्वस्तु
अधिगम उद्यतता

पाठयचर्या आयोजन का प्रक्रिया प्रतिमान- इसका प्रतिपादन सेलर एवं अलेक्जेंडर ने किया था। इस प्रतिमान में विभिन्न कार्य-कलापों को निम्नलिखित क्रम में संपादित किया जाता है:

1. पाठयचर्या के निर्धारक तत्वों जो कि पाठयचर्या नियोजन के प्रश्नों से संबंधित होते हैं, के संबंध में किया जाता है। पाठयचर्या के निर्धारक तत्वों में छात्र, सामाजिक मूल्य संरचना एवं माँग, विद्यालयों के लक्ष्य एवं कार्य, ज्ञान की प्रकृति तथा अधिगम प्रक्रिया को शामिल किया जाता है। शिक्षक या पाठयचर्या निर्माणकर्ता, इन निर्धारक तत्वों के संबंध में आँकड़ों का संकलन करते हैं। ये संकलित आँकड़े, पाठयचर्या आयोजकों का विभिन्न कार्यात्मक स्तरों पर मार्गदर्शन करते हैं।
2. इस प्रतिमान के दूसरे पड़ाव पर पाठयचर्या की पाठ्यवस्तु के चयन एवं संगठन तथा शिक्षण कार्य के संबंध में पाठयचर्या आयोजकों द्वारा निर्णय लिए जाते हैं। ये निर्णय कक्षा स्तर पर, विद्यालय स्तर पर तथा राष्ट्रीय स्तर पर लिए जाते हैं।
3. इसके बाद इस प्रतिमान का तीसरा एवं आखिरी पड़ाव आता है जहाँ पर पाठयचर्या के पाठ्यवस्तु संबंधी लिए गए निर्णय के परिणामस्वरुप विद्यालयों द्वारा पाठयचर्या योजनाएँ बनाई जाती हैं तथा उन्हें प्रस्तुत किया जाता है। इन पाठयचर्या योजनाओं में विद्यार्थियों के वैयक्तिक एवं वर्गगत अधिगम अनुभवों के लिए पाठयचर्या संगठन तथा शिक्षण की व्यवस्था सम्मिलित रहती है। इन प्रस्तुत योजनाओं में से कुछ को शिक्षकों एव अन्य संबंधित व्यक्तियों के निर्देशन के लिए पाठयचर्या निर्देशिकाओं के रुप में लिपिबद्ध भी की जाती है। इस प्रकार, अंत में पाठयचर्या अपने रुप में आ जाता है।

हिल्दा टाबा का व्यापक मूल्यांकन पाठयचर्या प्रतिमान

टाबा के इस प्रतिमान को पाठयचर्या विकास के ग्रास-रुट उपागम के रुप में जाना जाता है। उनका मानना था कि पाठयचर्या का निर्माण शिक्षकों के द्वारा होना चाहिए न कि शीर्षस्थ अधिकारियों द्वारा। वो ये भी मानती थी कि पाठयचर्या निर्माण की प्रक्रिया शिक्षकों द्वारा अपने विद्यालय में ही प्रारंभ की जानी चाहिए न कि प्रारंभ में ही एक सामान्य पाठयचर्या बनाना चाहिए। इस प्रतिमान में 'विशिष्ट से सामान्य की ओर' के शिक्षण सूत्र को ध्यान में रखते हुए पाठयचर्या निर्माण किया जाता है। अर्थात पहले विद्यालय स्तर पर फिर उस कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए चाहे वो किसी भी विद्यालय के हो पाठयचर्या का निर्माण किया जाता है।पाठयचर्या विकास के इस प्रतिमान का मानना है कि पाठयचर्या प्रारुप को विकसित करने में मूल्यांकन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। टाबा ने अपने इस प्रतिमान में मूल्यांकन शब्द का प्रयोग उसी अर्थ में किया है, जिस अर्थ में ब्लूम ने किया है। टाबा ने अपने प्रतिमान में चार प्रमुख सोपानों का वर्नन किया है जिसे निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है-

हिल्दा टाबा का पाठयचर्या प्रतिमान

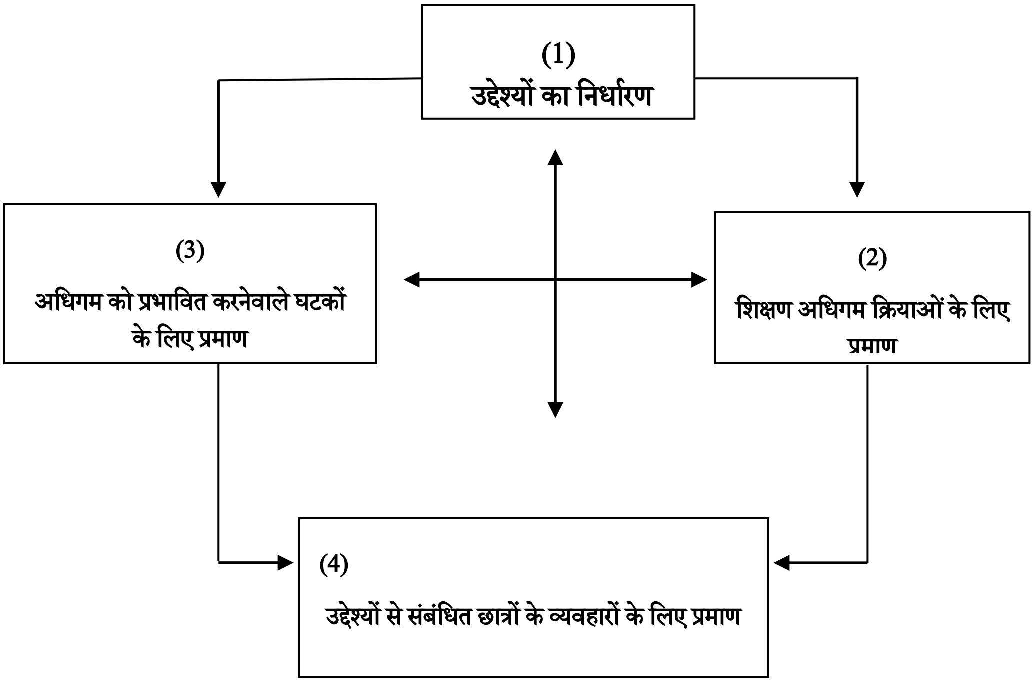

1. **उद्देश्यों के निर्धारण -** इस प्रतिमान के प्रथम सोपान अर्थात उद्देश्यों के निर्धारण में शैक्षिक उद्देश्यों की दृष्टि से पाठयचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें उद्देश्यों के विभिन्न आयामों, जैसे- ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, सृजनात्मक एवं प्रत्यक्षीकरण से संबंधित प्रमाणों को एकत्रित करके शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है।
2. **शिक्षण अधिगम क्रियाओं के लिए प्रमाण** – इस पड़ाव पर अधिगम के लिए परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती है तथा अधिगम अनुभवों हेतु प्रमाण एकत्रित किए जाते हैं।
3. **अधिगम को प्रभावित करनेवाले घटकों के लिए प्रमाण-** इस सोपान में अधिगम को प्रभावित करनेवाले घटकों के लिए प्रमाण एकत्रित किए जाते हैं।
4. **उद्देश्यों से संबंधित छात्रों के व्यवहारों के लिए प्रमाण-** इस पड़ाव पर आकर पाठयचर्या की सार्थकता की जाँच की जाती है, वो भी शैक्षिक उद्देश्यों की दृष्टि से। अतः,व्यवहार परिवर्तन के लिए प्रमाणों का संकलन किया जाता है।

मुखोपाध्याय निर्मित पाठयचर्या मूल्यांकन का प्रतिमान

पाठयचर्या विकास का यह प्रतिमान हिल्दा टाबा के प्रतिमान से लगभग मिलता-जुलता है। पाठयचर्या विकास के इस प्रतिमान का विकास मुखोपाध्याय ने किया है। मुखोपाध्याय जी ने भी अपने प्रतिमान में मूल्यांकन शब्द का प्रयोग ब्लूम के अर्थ में ही किया है। इस प्रतिमान का विकास विशेष रुप से भारतीय परिस्थितियों के लिए किया गया है। इस प्रतिमान में पाठयचर्या

विकास की प्रक्रिया को, जिन्हें कुल पाँच सोपानों में प्रतिपादित किया जाता है। इन पाँच सोपानों में से प्रथम तीन पाठयचर्या विकास की प्रथम अवस्था से संबंधित होते हैं तथा अंतिम दो सोपान पाठयचर्या विकास की दित्तीय या अंतिम अवस्था से संबंधित होते हैं। इन सोपानों का क्रमवार विवरण निम्नलिखित है:

1. पाठयचर्या विकास की प्रथम अवस्था-
   i. सोपान 1-प्रारंभिक उद्देश्योंका निर्धारण(छात्र, समाज एवं पाठ्यवस्तु के आधार पर)
   ii. सोपान2उद्देश्यों का विशिष्टीकरण(व्यावहारिक रुप में लिखना),पाठ्यवस्तु कीव्यवस्था,अनुदेशन तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के स्वरुप को निश्चित करना जिससे छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।
   iii. सोपान 3उपलब्ध साधनों का समुचित उपयोग।

2. पाठयचर्या विकास की द्वितीय अवस्था
   i. सोपान 4 - शिक्षकों एवं विकास स्रोत के आधार पर पाठयचर्या के प्रारुप में सुधार(निरंतर निरीक्षण एवं मूल्यांकन द्वारा)
   ii. सोपान 5-पाठयचर्या के प्रारुप में किया गया सुधार कितना उपयोगी एवं सार्थकरहा है, इसके लिए शिक्षणअधिगम क्रियाओं के निरीक्षण एवं मूल्यांकन के द्वारा पाठयचर्या का मूल्यांकन। पाठयचर्या का यह मूल्यांकन भी उद्देश्य केन्द्रित होना चाहिए।

अभ्याससप्रश्न

---

13. स्तंभ ‘अ’ स्तंभ ‘ब’ को मिलाइए

(अ)	**(ब)**
(अ) व्यवस्था आधारित प्रतिमान	(1) हिल्दा टाबा
(ब) कार्यात्मक प्रतिमान	(2) सेलर एवं अलेक्जेंडर
(स) आयोजन का प्रक्रिया प्रतिमान	(3) जॉन एफ0 केर
(द) व्यापक मूल्यांकन प्रतिमान	(4) एम0 एस0 हक

सरन अदा प्रणाली पाठयचर्या प्रतिमान

वाई0 सरन ने सन् 1976 में इस प्रतिमान का विकास किया। चूकि इस प्रतिमान का विकास भारतीय परिस्थिति को ध्यान में रखकर किया गया है इसलिए यह प्रतिमान भारत में बहुत प्रचलित हुआ। प्रणाली विश्लेषण के माध्यम से विकसित इस प्रतिमान में विशिष्ट उद्देश्यों को प्राथमिकता दी जाती है तथा तकनीकी के तीन प्रमुख पक्षों- अदा, प्रदा एवं प्रक्रिया के आधार पर पाठयचर्या को विश्लेषित किया जाता है। इस विश्लेषण के पश्चात पाठयचर्या का विकास एवं सुधार किया जाता है। इस प्रतिमान की प्रमुख मान्यताएँ निम्नलिखित हैं:

1. कोई भी पाठयचर्या हो उसमें सुधार एवं विकास की संभावना सदैव रहती है क्योंकि वह पूर्ण नहीं होता है;
2. कोई नव-निर्मित पाठयचर्या भी पूर्ण नहीं हो सकता है, लेकिन वर्तमान पाठयचर्या के कमजोरियों एवं समस्याओं को दूर कर उसे उन्नत बनाया जा सकता है जिससे वह अत्यधिक उपयोगी हो जाए;
3. प्रणाली विश्लेषण से की सहायता से सुधारा गयापाठयचर्या अधिक उपयोगी होता है।

सरन अदा प्रतिमान के प्रमुख पक्ष- इस प्रतिमान के तीन प्रमुख पक्ष हैं जो निम्नलिखित हैं:

1. अदा- इस पक्ष के अंतर्गत विशेषज्ञों के सुझाव एवं आवश्यकता के आधार पर पाठ्यवस्तु के स्रोतों की पहचान की जाती है। उद्देश्यों का प्रतिपादन आवश्यकता के अनुकूल किया जाता है तथा उद्देश्यों के अनुकूल अन्तर्वस्तु चयनित की जाती है। इसके पश्चात उद्देश्य एवं पाठ्यवस्तु की सहायता लेकर पाठयचर्या के प्रारुप का निर्माण किया जाता है।
2. प्रक्रिया- जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है इस पक्ष में क्रिया होती है । ये क्रिया उद्देश्यों को व्यावहारिक रुप में लिखा जाता है अर्थात उन्हें व्यावहारिक रुप दिया जाता है। पाठयचर्या के क्रियान्वयन के लिए उपयुक्त संसाधनों का विकास भी इसी पक्ष में किया जाता है। पाठयचर्या का क्रियान्वयन भी इसी पक्ष का हिस्सा है।अधिगम अनुभवों का प्रस्तुतीकरण भी इसी पक्ष का एक अंग है।
3. प्रदा- प्रदा पक्ष का इस प्रतिमान में अपना अलग महत्व है। वांछित उद्देश्य प्राप्त हुए की नहीं, यदि प्राप्त हुए तो किस सीमा तक, इन बातों की जानकारी प्रदा पक्ष के द्वारा हीं होती है। इस पक्ष का सबसे महत्वपूर्ण अंग मूल्यांकन प्रणाली होता है। यह प्रणाली उद्देश्य केन्द्रित होती है। इस प्रणाली का प्रयोग दो प्रमुख कार्यों को संपादित करने के लिए किया जाता है। ये दो प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं:

- पहला, इस बात का निर्णय करना कि वांछित उद्देश्य प्राप्त हुए हैं कि नहीं और यदि हुए है तो किस सीमा तक;
- दूसरा, यदि वांछित उद्देश्य प्राप्त नहीं हुए या कुछ सीमा तक ही हुए तो इसका कारण क्या है और इसका निवारण क्या होगा?

इस प्रकार, प्रतिमान के ये तीन पक्ष महत्वपूर्ण हैं एवं पाठयचर्या विकास को दिशा प्रदान करते हैं। सरन अदा प्रतिमान के प्रमुख सोपान- इस प्रतिमान में नौ सोपानों का अनुसरण किया जाता है। ये नौ सोपान निम्नलिखित है:

1. आवश्यकताओं के अनुमान हेतु सर्वेक्षण- साक्षात्कार, निरीक्षण एवं प्रश्नावली आदि का प्रयोग कर, छत्र, समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं का अनुमान लगया जाता है;

2. भविष्य की आवश्यकताओं का आकलन- इस पड़ाव पर व्यक्ति, समाज, एवं राष्ट्र के भविष्य की आवश्यकताओं का अनुमान लगाया जाता है। चूँकि शिक्षा विद्यार्थी को वर्तमान के साथ-साथ भावी जीवन के लिए भी तैयार करती है, इसलिए भविष्य की आवश्यकताओं का आकलन आवश्यक है।
3. उद्देश्यों की पहचान- सोपान एक तथा सोपान दो में अनुमानित आवश्यकताओं के आधार पर शैक्षिक उद्देश्यों की पहचान की जाती है।
4. उद्देश्यों को व्यवहारिक रुप में लिखना- इस पड़ाव पर रॉबर्ट मेगर्ट विधि या क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय मैसूर विधि (आर0 सी0 ई0 एम0 मेथड) का प्रयोग कर उद्देश्यों को व्यावहारिक रुप में लिखा जाता है। उद्देश्यों का व्यावहारिक रुप में लिखा जाना शिक्षणअधिगम क्रियाओं को सुनिश्चित करता है।
5. पाठ्यवस्तु का चयन- पाठ्यवस्तु, शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रमुख साधन है। अतः, उद्देश्यों, शिक्षण स्तर, तथा छात्रों की बोधगम्यता को ध्यान में रखकर इसका चयन किया जाता है।
6. मूल्यांकन प्रणाली का प्रारुप- इस प्रतिमान का छँठा सोपान मूल्यांकन प्रणाली के प्रारुप के निर्धारण का है। पाठयचर्या के सुधार एवं विकास हेतु ठोस आधार मूल्यांकन से ही प्राप्त होते हैं। अतः मूल्यांकन के लिए एक सुपरिभाषित प्रणाली का होना आवश्यक है।
7. संसाधनों का विकास- पाठयचर्या के बेहतर क्रियान्वयन के लिए संसाधनों का विकास आवश्यक है।
8. जाँच करना- छात्रों एवं उद्देश्यों के संदर्भ में पाठयचर्या की सार्थकता की जाँच की जाती है। यह कार्य अति महत्त्वपूर्ण है।
9. समीक्षा- इस पड़ाव पर पूरे प्रारुप की समीक्षा होती है और इस समीक्षा के पश्चात पाठयचर्या को अंतिम रुप दिया जाता है।

   इस प्रकार यह प्रतिमान अधिक व्यावहारिक है।

टेलर का प्रतिमान-

सन् 1949 में टेलर ने एक पुस्तक 'बेसिक प्रिंसिपल्स ऑफ करिकुलम एण्ड इन्स्ट्रक्शंस' प्रकाशित कराई जिसमें उन्होंने पाठयचर्या विकास के लिए एक प्रतिमान दिया। यह पाठयचर्या विकास का सर्वाधिक वैज्ञानिक प्रतिमान है। इस प्रतिमान के चार प्रमुख सोपान हैं, जो निम्नलिखित हैं:

1. उद्देश्यों का निर्धारण
2. उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अधिगम-अनुभवों का निर्धारण
3. अधिगम अनुभवों का प्रभावपूर्ण संगठन
4. उद्देश्यों की प्राप्ति का मूल्यांकन।

इस प्रतिमान के प्रथम सोपान में शिक्षक, सलाहकार समिति, विश्वविद्यालय के प्रशासक एवं शिक्षा उद्योग में शामिल अन्य लोग, समाज एवं शिक्षार्थी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, शिक्षा के उद्देश्यों के संबंध में निर्ण्ण लेते हैं। उद्देश्यों का निर्धरण इस प्रतिमान के अन्य सोपानों के सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है क्योंकि स्पष्ट एवं सुपरिभाषित उद्देश्य ही शिक्षण प्रक्रिया को दिशा-निर्देशित करते हैं।

इस प्रतिमान का दूसरा सोपान उन अधिगम अनुभवों का निर्धारण करना है जो कि उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं।

तीसरे सोपान में यह विशेष रुप से ध्यान रखा जाता है कि जो भी अधिगम अनुभव निर्धारित किए जाए वो अधिगम के तीनों क्षेत्रों- संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक को अपने में समाहित किए हुए हो। अधिगम अनुभवों को सरल से जटिल की ओर तथा सामान्य से विशिष्ट की ओर के क्रम में व्यवस्थित किया जाए। इस प्रकार, तीसरा सोपान पूर्ण रुप से अधिगम अनुभवों के निर्धारण से संबंधित होता है।

चौथे सोपान में इस बात का निर्धारण किया जाता है कि वो कौन से तरीके होंगे जो यह मूल्यांकित करेंगे कि शिक्षण प्रक्रिया के उपरांत निर्धारित अधिगम मूल्यों की प्राप्ति हुई कि नहीं। अर्थात इस सोपान में निर्धारित अधिगम मूल्यों के शिक्षण प्रक्रिया के उपरांत प्राप्ति का मूल्यांकन के तरीके निर्धारित किए जाते हैं। मूल्यांकन के लिए मुख्य रुप से 'फॉलो-अप स्टड्जीस', 'स्नातक उपाधि धारक विद्यार्थियों के साक्षात्कार' एवं 'कार्यक्रम-समीक्षा' का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार इन चार सोपानों की सहायता से पाठयचर्या का विकास किया जाता है।

अभ्यासप्रश्न

---

14. सरन अदा प्रणाली पाठयचर्या का विकास सन् -------------------- ई0 में किया गया।
15. टेलर की पुस्तक का नाम -------------------------------- है।

3.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई शिक्षण प्रणाली के एक महत्वपूर्ण घटक पाठयचर्या से संबंधित है। बदलती हुई शिक्षण प्रणाली के कारण पाठयचर्या के कई रुप सामने आए। उन विभिन्न रुपों को विद्वानों द्वारा विभिन्न समूहों में वर्गीकृत किया गया। कालांतर में पाठयचर्या विकास के क्षेत्र में हो रहे शोध कार्यों के परिणामस्वरुप विद्वानों द्वारा पाठयचर्या विकास के प्रतिमान निर्मित किए गए, जिनमें पाठयचर्या निर्माण के लिए सुनिश्चित एवं क्रमबद्ध सोपान बताए गए ताकि पाठयचर्या विकास की क्रिया सरल एवं वैज्ञानिक हो जाए। प्रस्तुत इकाई में इन्हीं प्रतिमानों की विस्तृत चर्चा की गई है। पाठयचर्या विकास के प्रतिमान के अर्थ एवं संप्रत्यय, पाठयचर्या विकास के प्रतिमान के वर्गीकरण एवं विभिन्न

पाठयचर्या प्रतिमानों को समाहित किएहुए यह इकाई अपने-आप में अति उपयोगी है। साथ ही साथ यह पाठयचर्या विकास की प्रक्रिया में शामिल अन्य व्यक्तियों के लिए भी उपयोगी है।

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. प्रतिमान शब्द आंग्ल भाषा के शब्द 'मॉडल' का हिन्दी रुपांतर है
2. 'युनिवर्सल डिक्शनरी ऑफ एंगलिश लैंग्वेज' में मॉडल को परिभाषित करते हुए लिखा है – " किसी आदर्श के अनुरुप व्यवहार क्रिया को ढ़ालने तथा क्रिया की ओर निर्देशित करने की प्रक्रिया, मॉडल या प्रतिमान होती है।
3. पाठयचर्या प्रतिमान के सामान्य वर्गीकरण के अनुसार उसके तीन प्रतिमान हैं
4. शैक्षिक उद्देश्यों
5. पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान
6. सत्य
7. पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान
8. सत्य
9. पाठयचर्या का प्रक्रिया प्रतिमान
10. विशिष्ट प्रतिमान
11. एम0 एस0 हक
12. सत्य
13. (अ) – 4
    (ब) – 3
    (स) - 2
    (द) – 1
14. 1976
15. बेसिक प्रिंसिपल्स ऑफ करिकुलम एण्ड इन्स्ट्रक्शंस

3.8 संदर्भ ग्रंथ

1. Howson, A.G. (ed.) (1970)**Developing a New Curriculum,** London, Hieneman Educational Books Ltd.
2. Kerr, John F. (ed.) (1977) **Changing the Curriculum**, London, University of London PressLtd.

1. Tyler, R.W. (1969)**Basic Principales of Curriculum and Instruction**, University of Chicago Press.
2. Wyld, C. Henery (1961), **The Universal Dictionary of English Language London**.
3. Agrawal, J.C. (1993) **Development and Planning of Modern Education** New Delhi, Vikas Publishing House.
4. यादव, सियाराम (2011), **पाठयचर्या विकास**, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशंस

3.9 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या विकास के प्रतिमान का अर्थ स्पष्ट करें।
2. पाठयचर्या विकास के प्रतिमान को वर्गीकृत करें।
3. पाठयचर्या विकास के सामान्य प्रतिमान का वर्णन करें।
4. सरन अदा प्रणाली पाठयचर्या प्रतिमान की व्याख्या करें।
5. हिल्दा टाबा द्वारा प्रतिपादित व्यापक मूल्यांकन पाठयचर्या प्रतिमान का वर्णन करें।

इकाई– 4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना
4.4 पाठ्यचर्या निर्माण के चरण
4.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उद्देश्य
4.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार
4.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता
4.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व
4.9 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण
4.10 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की तकनीकें
4.11 सारांश
4.12 शब्दावली
4.13 अभ्यासप्रश्नों के उत्तर
4.14 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.15 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक में निहित शक्तियों को जागृत कर उन्हें चरमोत्कर्ष पर ले जाना है। इसके द्वारा उसके व्यवहार में ऐसा परिवर्तन लाना है कि भविष्य की कठिनाइयों का सामना वह आसानी से कर जीवन को सरल तथा सहज बना सके। शिक्षा मात्र जानकारी प्राप्त करना नहीं बल्कि प्राप्त ज्ञान को कक्षा से इतर वास्तविक जीवन एवं वास्तविक परिस्थितियों में व्यवहार में लाना भी है। इस हेतु शिक्षा के कुछ लक्ष्य एवं उद्देश्य हैं। पाठ्यचर्या के माध्यम से यह प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थी उन लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें। लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि पाठ्यचर्या के विभिन्न पथों एवं क्रियाकलापों में वे सन्निहित हो। पाठ्यचर्या बालक में उन शक्तियों, उन गुणों को जागृत करने में तथा भविष्य के लिए तैयार करने में सक्षम है, यह जानने हेतु पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई में पाठ्यचर्या मूल्यांकन से सम्बंधित विभिन्न बिन्दुओं का अध्ययन किया जाएगा।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. पाठ्यचर्या की संकल्पना को स्पष्ट कर सकेंगे।
2. मूल्यांकन को परिभाषित कर सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना का विश्लेषण कर सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या विकास के विभिन्न चरणों को बता सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों का नामोल्लेख कर सकेंगे।
6. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों का अन्तर स्पष्ट करते हुए उनकी व्याख्या कर पाएंगें।
7. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता को स्पष्ट कर सकेंगे।
8. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के महत्व को बता सकेंगे।
9. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न चरणों की व्याख्या कर सकेंगे।
10. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली विभिन्न तकनीकों की व्याख्या कर पाएंगें।

4.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना

इस इकाई में मुख्य बिन्दुओं के साथ कुछ अन्य बिन्दुओं का अध्ययन किया जाएगा जो पाठ्यचर्या मूल्यांकन से सम्बंधित हैं तथा पाठ्यचर्या मूल्यांकन को समझने हेतु उनका उल्लेख करना आवश्यक है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन में दो शब्द निहित हैं; पहला शब्द है पाठ्यचर्या और दूसरा मूल्यांकन। सबसे पहले पाठ्यचर्या क्या है? पिछली इकाईयों में पाठ्यचर्या क्या है इसका अध्ययन किया जा चुका है अतः यहाँ हम अत्यंत संक्षिप्त रूप में जानेंगे कि पाठ्यचर्या क्या है।

पाठ्यचर्या- पाठ्यचर्या को सभी अनुभवों के योग या राशि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक शैक्षिक संस्थान में प्रदान किए जाते हैं। व्हीलर (1967) के अनुसार "पाठ्यचर्या का अर्थ विद्यालय के मार्गदर्शन में शिक्षार्थियों को नियोजित अनुभवों को देना है।" टैनर एवं टैनर (1975) ने भी पाठ्यचर्या को नियोजित एवं निर्देशित शिक्षण अनुभवों के रूप में माना है जो विद्यार्थियों में विद्यालय के तत्वावधान में व्यवस्थित पुनर्निर्माण के माध्यम से ज्ञान एवं अनुभवों के द्वारा विद्यार्थी का अकादमिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षमता में सतत एवं वांछित विकास करती है।

इस प्रकार से देखा जा सकता है कि पाठ्यचर्या उन अनुभवों का संकलन है जो विद्यालय के परिवेश में शिक्षार्थी को दी जाती हैं। परन्तु कुछ विद्वान इसे मात्र विद्यालय के वातावरण में दिए जा रहे अनुभवों से जोड़ कर नहीं देखते बल्कि इसे उच्चतर जीवन के लिए की जा रही प्रत्येक क्रियायें जो प्रतिदिन और दिन के प्रति घंटे में की जाती हैं, से जोड़कर देखते हैं। अगर व्यापक परिप्रेक्ष्य में दी गयी पाठ्यचर्या की परिभाषाओं को देखा जाए तो ये मात्र विद्यालय और विद्यालयी अनुभवों एवं

विद्यालय में दिया जा रहा ज्ञान ही नहीं है बल्कि इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है।ले का मानना है कि "पाठ्यचर्या का विस्तार वहां तक है जहाँ तक जीवन का विस्तार है।" फ्रोबेल के अनुसार "पाठ्यचर्या संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए।" इस प्रकार विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या जीवन जीने के लिए आवश्यक कला को सीखने में मदद करती है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठ्यचर्या को परिभाषित करते हुए कहा है कि-
"पाठ्यचर्या का अर्थ केवल उन सैद्धांतिक विषयों से नहीं है जो विद्यालयों में परंपरागत रूप से पढ़ाये जाते हैं, बल्कि इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं विद्यार्थियों के अनेकों अनौपचारिक संबंधों से प्राप्त करता है। इस प्रकार से विद्यालय का संपूर्ण जीवन पाठ्यचर्या ही हो जाती है जो विद्यार्थियों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करती है और उनके संतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देती है।"
विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या का अर्थ मात्र विद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगींण विकास के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रम से नहीं है बल्कि विद्यालय से बाहर के भी उन अनुभवों से है जो दिन के प्रत्येक घंटे में विद्यार्थी आजीवन प्राप्त करता रहता है । किन्तु समस्या यह है की विद्यालय से बाहर के अनुभवों को नियोजित नहीं किया जा सकता है या उन्हें मूल्यांकित कर उनमें संशोधन या परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत पाठ में हम पाठ्यचर्या के रूप में विद्यालय के अन्दर चलाए जा रहे शैक्षिक कार्यक्रम को ही संबोधित करेंगे।

पाठ्यचर्या के पश्चात् अब अगला प्रश्न है कि मूल्यांकन क्या है ?

मूल्यांकन - मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह दो शब्दों से मिलकर बना है मूल्य तथा अंकन, अर्थात् किसी भी चीज को मूल्य प्रदायित करनाया या मूल्य का निर्धारण करना. रेमर्स तथा गेज (1955) ने मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहा है कि "मूल्यांकन के अंतर्गत व्यक्ति या समाज या दोनों की दृष्टि से जो उत्तम एवं वांछनीय हो उसका ही प्रयोग किया जाता है ।"

प्रो. दांडेकर ने मूल्यांकन की परिभाषा इस प्रकार दिया है "मूल्यांकन की परिभाषा एक व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप में की जा सकती है जो इस बात को निश्चित करती है की किस सीमा तक विद्यार्थी शैक्षिक उद्देश्य प्राप्त करने में समर्थ रहा है ।"
कोठारी कमीशन ने मूल्यांकन की व्याख्या इस प्रकार से की है "अब यह माना जाने लगा है कि मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, जो कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा उसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है।"
NCERT के अनुसार "यह एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जो देखती है कि (i) निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों (specified educational objectives)की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है (ii) कक्षा में दिए गए

अधिगम अनुभव (learning experiences) कितने प्रभावशाली रहे हैं तथा शिक्षा के लक्ष्य (goals of education) कितने अच्छे से पूर्ण हो रहे हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया से सम्बंधित है जो यह सुनिश्चित करता है की किन-किन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुयी है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन- इससे पहले इस इकाई में हम देख चुके हैं कि पाठ्यचर्या क्या है और मूल्यांकन क्या है। पाठ्यचर्या विकास का एक अभिन्न अंग पाठ्यचर्या मूल्यांकन है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह पाठ्यचर्या एवं मूल्यांकन दोनों को अपने अन्दर समेटे हुए है। अगर इसे और भी स्पष्ट रूप में कहा जाए तो यह कहा जा सकता है की पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत दो अति महत्वपूर्ण तथ्य समाहित हैं, प्रथम; यह कि जिन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित पाठ अथवा पाठ्यचर्या का अध्यापन किया गया है उनमें से किन-किन उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है और इसके साथ ही साथ कौन कौन से उद्देश्य अप्राप्य रह गए हैं, द्वितीय; यह कि कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षण के प्रति छात्रों के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं। यही नहीं चूँकि पाठ्यचर्या स्वयं में एक अति विस्तृत अवधारणा है जो अपने अन्दर पाठयचर्या , पाठ्यवस्तु तथा इसके साथ- साथ पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को भी लिए हुए है तो पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत इन सभी का मूल्यांकन भी सम्मिलित किया जाता है कि उपर्युक्त सभी के साथ विद्यार्थी के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं।

McNeil (1977) के अनुसार, "पाठयचर्या मूल्यांकन में दो प्रश्नों पर प्रकाश डाल करने का प्रयास किया जाता है: क्या नियोजित अधिगम अवसरों, कार्यक्रमों, पाठयचर्या , और गतिविधियों का विकास एवं आयोजन इस प्रकार किया गया कि वे वांछित परिणाम ला सकते हैं? सीखने के रूप में विकसित की है और आयोजन वास्तव में वांछित परिणाम का उत्पादन की योजना बनाई है? आयोजित पाठ्यचर्या में सर्वोत्तम होने के लिए सुधार किस प्रकार हो सकता है?

Worthen & Sanders (1987) पाठ्यचर्या मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि पाठ्यचर्या मूल्यांकन "किसी कार्यक्रम, उत्पाद, योजना, प्रक्रिया उद्देश्य या पाठ्यचर्या की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्यों का निर्धारण है।"

Gay (1985) के अनुसार, "पाठ्यचर्या मूल्यांकन का लक्ष्य पाठ्यचर्या से सम्बंधित दुर्बल एवं सबल पक्षों के साथ-साथ कार्यान्वियन में आई समस्याओं की पहचान करना, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया में सुधार करना, पाठ्यचर्या एवं आवंटित वित्त की प्रभावकारिता का निर्धारित करना है।"

पाठ्यचर्या में उद्देश्यों एवं अनुभवों की प्राप्ति को दो स्तरों पर मूल्यांकित किया जा सकता है । इसमें एक मूल्यांकन को शिक्षक के द्वारा किए गए मूल्यांकन के रूप में देखा जा सकता है जो छोटे स्तर पर

होता है जिसमे अध्यापक किसी पाठ या किसी इकाई या किसी विषय से सम्बंधित उद्देश्यों तथा अनुभवों का मापन एवं मूल्यांकन करता है और दूसरे स्तर पर पाठ्यचर्या का वृहद् और विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है जिसमें संपूर्ण पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है कि पाठ्यचर्या कितनी प्रभावी रही है अर्थात संपूर्ण पाठ्यचर्या किस स्तर तक विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन करने में सक्षम हुयी है तथा साथ ही विद्यार्थी के अनुभव कैसे रहे हैं।

पाठ्यचर्या को संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए। इसके अभाव में पाठ्यचर्या को सही नहीं माना जा सकता है।

अभ्यासप्रश्न

1. "पाठ्यचर्या संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए।" पाठ्यचर्या की यह व्यापक परिभाषा किस विद्वान ने दी है ?
2. "मूल्यांकन एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जो देखती है कि(i) निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों (specified educational objectives)की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है(ii) कक्षा में दिए गए अधिगम अनुभव (learning experiences) कितने प्रभावशाली रहे हैं तथा शिक्षा के लक्ष्य (goals of education) कितने अच्छे से पूर्ण हो रहे हैं।" मूल्यांकन को यह परिभाषा किसके द्वारा दी गयी है।
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत किन महत्वपूर्ण तथ्यों का अध्ययन किया जाता है?

4.4 पाठ्यचर्या निर्माण के चरण

कोई भी पाठ्यचर्या कई स्तरों या चरणों से गुजरती हुयी सम्पूर्णता को प्राप्त करती है और यह सम्पूर्णता भी समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही होता है जिसमे समाज की नयी आवश्यकताओं को देखते हुए पुरानी पाठ्यचर्या अव्यावहारिक हो जाती है। पाठ्यचर्या के निर्माण में कई चरण होते हैं। इन सभी चरणों से गुजरते हुए ही पाठ्यचर्या अपने वास्तविक रूप में आती है। ये चरण इस प्रकार हैं-

i. पाठ्यचर्या आवश्यकता विश्लेषण चरण
ii. पाठ्यचर्या अभिकल्प चरण
iii. पाठ्यचर्या क्रियान्वयन चरण
iv. पाठ्यचर्या मूल्यांकन चरण

पाठ्यचर्या के निर्माण की प्रक्रिया को इस रेखाचित्र (11.1) के माध्यम से समझा जा सकता है। निर्माण के प्रथम चरण में सर्वप्रथम यह निर्धारित किया जाता है कि किन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाना है। तद्पश्चात उन आवश्यकताओं के आधार पर पाठ्यचर्या की डिज़ाइन या प्रारूप तैयार किया जाता है। प्रारूप के निर्माण के पश्चात् उस पाठ्यचर्या का

क्रियान्वन किया जाता है और उसके उपरांत पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इन सभी स्तरों पर पृष्ठ-पोषण लिया जाता रहता है तथा उसके आधार पर हर एक स्तर पर संशोधन भी किया जाता रहता है।

आरेख: 11.1 पाठ्यचर्या विकास के चरण

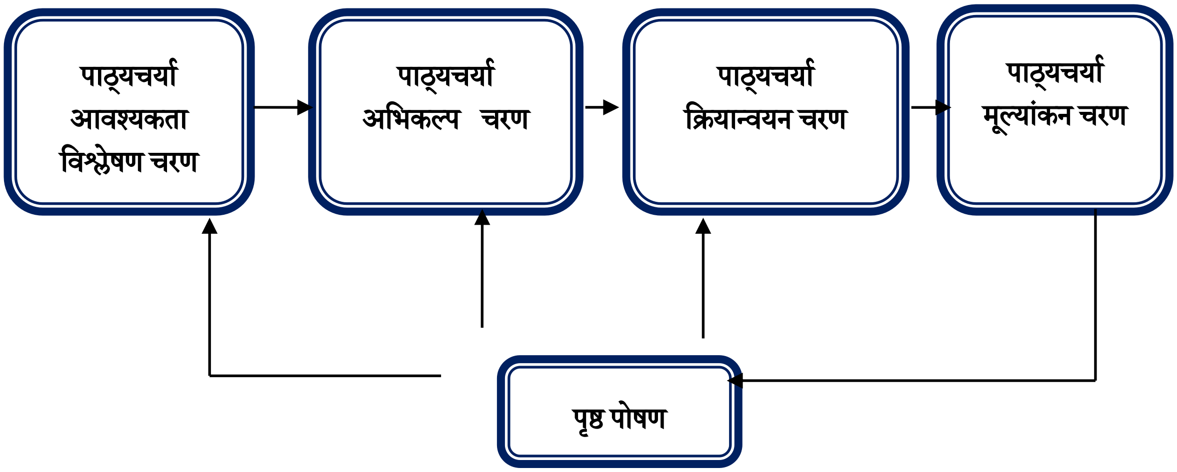

4.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन केप्रमुख उद्देश्य

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के कुछ उद्देश्यों को लेकर किए जाते हैं। मूल्यांकन से सम्बंधित विभिन्न उद्देश्य इस प्रकार हैं-

i. पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु
ii. पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु
iii. व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु
iv. प्रशासनिक नियमन हेतु

4.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार

जैसा की पहले ही बताया जा चुका है कि पाठ्यचर्या का मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण एवं विकास से सम्बंधित एक अहम् बिन्दु है जिसके अभाव में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कई विधियों का प्रयोग किया जाता है जो पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार के रूप में इस खंड में वर्णित हैं। बिना मूल्यांकन के पाठ्यचर्या उन उद्देश्यों की पूर्ति करेगी अथवा नहीं, जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है, के

विषय में भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है ।पाठ्यचर्या मूल्यांकन के ये प्रकार मूल्यांकन की प्रक्रिया को अत्यन्त व्यापक बना देते हैं । मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं-

निर्माणात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन

निर्माणात्मक मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के दौरान किया जाता है। निर्माणात्मक मूल्यांकन में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए आंकड़ो का संकलन पाठ्यचर्या की योजना, विकास अथवा निर्माण के दौरान किया जाता है जिसके द्वारा निर्माण के दौरान ही पाठ्यचर्या का पुनरावलोकन करते हुए दोषों को दूर किया जा सके। इस प्रकार से निर्माणात्मक मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या में संशोधन का अवसर देता है । निर्माणात्मक मूल्यांकन के परिणाम पाठ्यचर्या निर्माण के जिन प्रयोजनों में सहायक सिद्ध होते हैं वे हैं, (1) पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों का चयन एवं (2) पाठ्यचर्या में शामिल दूषित तत्वों का संशोधन। निर्माणात्मक मूल्यांकन सर्वप्रथम यह निश्चित करता है कि पाठ्यचर्या कि आवश्यकता किसे है, उसे पाठ्यचर्या की आवश्यकता किस सीमा तक है और निर्धारित पाठ्यचर्या किस प्रकार उन आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। शिक्षा में, निर्माणात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य पाठ्यचर्या या कार्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए सूचनाएं इकठ्ठी करनी है। पाठ्यचर्या में संशोधन के लिए मूल्यांकन दो स्तरों पर किया जाता है पहला पाठ्यचर्या विकास के प्रक्रिया स्तर पर जहाँ प्रक्रिया का मूल्यांकन किया जाता है तथा दूसरा पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन स्तर पर जहाँ विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है।

योगात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत आंकड़ो का संकलन पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के उपरांत किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन तब किया जाता है जब कोई नवीन पाठ्यचर्या को लागू किया गया हो। इसके लिए नए कार्यक्रम को लागू करने के संपूर्ण वर्ष के पश्चात् या कुछ महीनों के पश्चात् परीक्षा के माध्यम से पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन में मूल्यांकन से पूर्व यह निश्चित कर लेने की आवश्यकता होती है कि मूल्यांकन के द्वारा किन प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने का प्रयास किया जा रहा है तथा मूल्यांकन द्वारा प्राप्त परिणामों से क्या निर्णय लिए जाएगें। इसमे यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थियों ने पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त किया है अथवा पाठ्यचर्या के द्वारा वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है अथवा नहीं। इन परिणामों का निर्धारण औपचारिक मूल्यांकन जैसे परीक्षणों और परीक्षाओं में प्राप्त अंको के आधार पर किया जा सकता है।यह इसका भी मूल्यांकन करता है कि क्या नवाचार प्रभावी था, क्या पाठ्यचर्या को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया गया, क्या प्राप्त परिणामों में कुछ ऐसे भी परिणाम थे जो अप्रत्याशित थे?

निर्माणात्मक और योगात्मक मूल्यांकन को रोबर्ट स्टेक्स के इस कथन से समझा जा सकता है कि "When the cook tastes the soup, that's formative evaluation;When the guests taste the soup, that's summative evaluation" अर्थात् जब कुक यानि भोजन पकाने वाला

सूप चखता है तो यह निर्माणात्मक मूल्यांकन होगा, जब मेहमान सूप चखेंगे तो यह योगात्मक मूल्यांकन होगा।

निकष संदर्भित तथा मानक संदर्भित मूल्यांकन

निकष संदर्भित परीक्षण के द्वारा भी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करते हैं। इस प्रकार के मूल्यांकन में सर्वप्रथम पाठ्यचर्या के सभी उद्देश्यों की सूची तैयार की जाती है इस सूची में सभी उद्देश्य व्यवहारात्मक रूप में लिखे गए होते हैं साथ ही साथ कसौटियों के परीक्षण के लिए परिस्थितियों का भी निर्धारण किया जाता है । इसके साथ ही मूल्यांकनकर्ता इसका निर्धारण भी करता है कि किस सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति पर पाठ्यचर्या को उपयुक्त माना जाएगा। इसके बाद विद्यार्थियों का परीक्षण किया जाता है और यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है।

मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है। किसी अन्य पाठ्यचर्या को मानक मानते हुए उसके सापेक्ष में नयी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार के पाठ्यचर्या मूल्यांकन में पाठ्यचर्या के दो सेट होते हैं और जिसमें एक का मानकीकरण पहले किया जा चुका होता है। मानकीकृत पाठ्यचर्या के सापेक्ष में नवीन पाठ्यचर्या का मूल्यांकन उससे सहसम्बन्धित करते हुए किया जाता है।

पूर्व तथा पश्च परीक्षण

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए पूर्व तथा पश्च परीक्षण सामान्यतया सर्वाधिक प्रयोग में लायी जाती है. इस मूल्यांकन विधि में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या समाप्त होने के पश्चात सत्रोपरांत में विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन के आकलन हेतु किया जाता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इस परीक्षण में दो बार परीक्षा ली जाती है एक पहले और दूसरी बाद में। दो बार के व्यवहार के आकलन हेतु परीक्षणों के दो सेट पहले ही तैयार कर लिए जाते हैं। किसी पाठ्यचर्या को पढ़ाने से पूर्व ही एक सेट का प्रशासन विद्यार्थियों पर करके विशिष्ट क्षेत्र में उनके ज्ञान का मूल्यांकन कर लिया जाता है तत्पश्चात विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यचर्या को पढाया जाता है। उसके बाद विद्यार्थियों पर दूसरे सेट का प्रशासन कर व्यवहार एवं ज्ञान में आए परिवर्तन का आकलन किया जाता है । विद्यार्थियों के ज्ञान में आए सकारात्मक अंतर को पाठ्यचर्या का परिणाम माना जाता है साथ ही यह भी देखा जाता है की जिन उद्देश्यों की प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया था वे उद्देश्य प्राप्त हुए हैं की नहीं। यदि व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आया है और उद्देश्यों की प्राप्ति निश्चित सीमा तक हो गयी है तो पाठ्यचर्या को प्रभावशाली मान लिया जाता है।

आरेख 11.2

पूर्व तथा पश्च परीक्षण

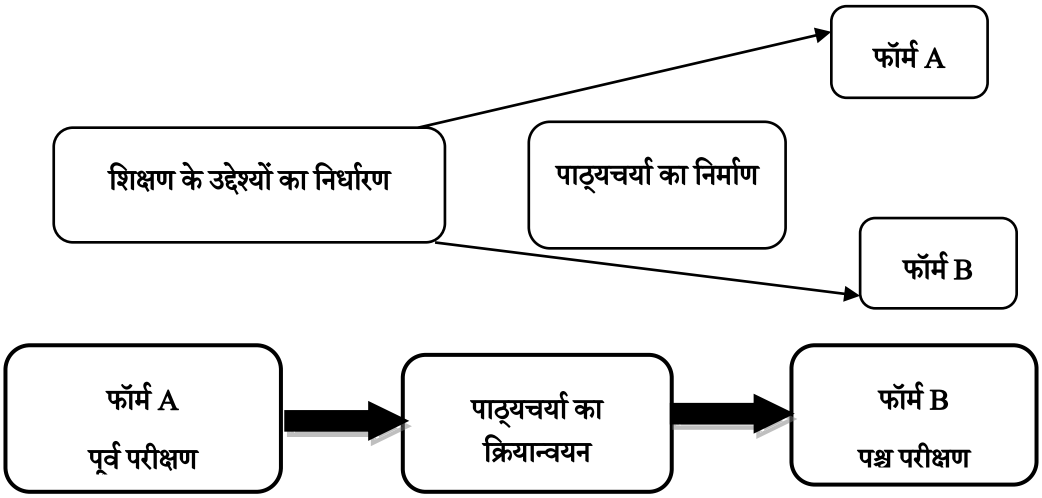

रेखाचित्र 11.2 के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि किस प्रकार पूर्व और पश्च परीक्षण विधि से पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार के मूल्यांकन में शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात विशेषज्ञों के द्वारा पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है और इसके साथ ही परीक्षण के लिए दो सेट तैयार कर लिए जाते हैं जिसमें से एक का प्रशासन पाठ्यचर्या के प्रशासन के पूर्व करके छात्रों के ज्ञान का मूल्यांकन उस निश्चित क्षेत्र में कर लिया जाता है। तद्पश्चात दूसरे सेट का प्रशासन पाठ्यचर्या को पढ़ाने के पश्चात किया जाता है और अंकों के आधार पर पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कर लिया जाता है।

अभ्यासप्रश्न

4. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उद्देश्य कौन-कौन से हैं?
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार बताएं I
6. निर्माणात्मक मूल्यांकन के परिणाम पाठ्यचर्या निर्माण के किन प्रयोजनों में सहायक सिद्ध होते हैं?

4.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

समाज की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यचर्या में परिवर्तन होता है । यदि अगर बहुत लम्बे समय तक किसी पाठ्यचर्या में परिवर्तन या संशोधन न किया जाए तो परिवर्तनशील युग के लिए पाठ्यचर्या पुरानी हो जाएगी और नवीन आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ और प्रभावी सिद्ध

नहीं होगी। समय के साथ नवीन ज्ञान अथवा तथ्यों का पाठ्यचर्या में समावेश किया जाना अनिवार्य है। अतएव समय-समय पर पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है ताकि इसे समय की मांग के हिसाब से प्रभावी बनाया जा सके। इस प्रकार पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण/विकास का एक अभिन्न अंग है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

नवीन पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु: किसी भी नयी पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु पाठ्यचर्या मूल्यांकन आवश्यक है । वास्तव में समाज को उपयुक्त दिशा पर ले जाने का बोझ शिक्षा के ऊपर ही है। किसी भी नयी पाठ्यचर्या को बिना मूल्यांकित किए विद्यालयों में लागु नहीं किया जा सकता है। पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में यह देखा जाना आवश्यक है कि वह शिक्षा से जुड़े लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है अथवा नहीं। अतः नवीन पाठ्यचर्या के निर्माण के साथ छात्रों पर उसके क्रियान्वयन से पहले पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक होता है

पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु: जो ज्ञान आज नवीन है समय के साथ कल पुराना हो जाएगा और उसके पश्चात् वह अपचलित हो जाएगा। ऐसी निष्क्रिय सामग्री को पाठ्यचर्या से हटाना अनिवार्य हो जाता है। पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के द्वारा इन सामग्रियों को पाठ्यचर्या से हटाया जा सकता है।
अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाने हेतु: अप्रचलित और निष्क्रिय सामग्रियों को हटाने के साथ सामयिक तथ्यों को पाठ्यचर्या में जोड़ा जाना भी आवश्यक है ताकि पाठ्यचर्या व्यावहारिक एवं उपयुक्त बनी रहे । इस हेतु नवीन ज्ञान, तथ्य. सामग्रियों को पाठ्यचर्या में शामिल किया जाता है इन तथ्यों को सही रूप में पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने के लिए पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक होता है।
पाठ्यचर्या की व्यवहारिकता एवं प्रभावशीलता ज्ञात करने हेतु: इसी प्रकार कोई पाठ्यचर्या सैद्धान्तिक रूप से अच्छी हो सकती है परन्तु आवश्यक नहीं कि वह व्यवहारिक रूप से प्रयुक्त की ही जा सके। उसकी निष्पति में कई समस्याएं हो सकती है। उदाहरणस्वरुप- वर्तमान युग के लिए कंप्यूटर शिक्षा आवश्यक है और इसे पाठ्यचर्या में शामिल किया जाना चाहिए। परन्तु इसे हर जगह व्यवहारिक बनाना संभव नहीं है। भारत में कई गाँव ऐसे हैं जहाँ बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे स्थानों के विद्यालयों में कंप्यूटर की शिक्षा देना संभव नहीं है और यदि दी भी जाती है तो छात्रों के लिए उतनी व्यवहारिक नहीं है जितना कृषि या कोई अन्य विषय होगा। ऐसे में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा ऐसे विषयों में परिशोधन किया जा सकता है और पाठ्यचर्या तथा शिक्षा की प्रभावशीलता को बढाया जा सकता है।

शिक्षा के उत्पाद के सम्बन्ध में जानकारी हेतु: शिक्षा मात्र विषय की जानकारी देने से सम्बंधित न होकर मनुष्य को सही रूप में संसाधन बनाने से भी सम्बंधित है। पाठ्यचर्या के द्वारा व्यक्ति की कुशलता में वृद्धि हो रही है या नहीं और वह समाज और देश के लिए कितना उपयोगी सिद्ध होगा

यह आकलन करना भी आवश्यक है। इसके लिए निवेश और उसके पश्चात उत्पादन का विश्लेषण किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा इसे ज्ञात किया जा सकता है।

4.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व

पाठ्यचर्या का मूल्यांकन उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या स्वयं है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन का सबसे बड़ा महत्व यह है कि अधिगम में सुधार के साथ-साथ शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु यह सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। बिना मूल्यांकन के पाठ्यचर्या को उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के महत्व निम्नलिखित हैं-

किसी भी स्तर पर नयी पाठ्यचर्या के विकास हेतु पुरानी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है कि विद्यमान पाठ्यचर्या में कहाँ कमी है तथा किन संशोधनों के पश्चात् पाठ्यचर्या नयी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के अनुरूप हो जाएगी। नयी पाठ्यचर्या के विकास पर निर्णय के लिए चल रही पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा नीति निर्माताओं, प्रशासकों और समाज के अन्य सदस्यों को सूचना मिल जाती है कि निर्मित पाठ्यचर्या आवश्यताओं की पूर्ति में सक्षम है कि नहीं। इसके साथ ही इसके द्वारा शिक्षकों, पाठ्यचर्या विशेषज्ञों, विद्यालय प्रशासकों और उन सभी को जो पाठ्यचर्या विकास में सम्मिलित होते हैं उन्हें भी पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में जानकारी मिल जाती है।यह पाठ्यचर्या के मजबूत और कमजोर पक्षों के सम्बन्ध में पृष्ठपोषण प्रदान करता है कि पाठ्यचर्या मानकों के अनुरूप है अथवा नहीं।

पाठ्यचर्या समय के साथ पुरानी होने लगती है तथा समय के साथ उसमें वर्णित तथ्य तथा विचार अव्यवहारिक हो जाते हैं जिन्हें हटा कर नए तथ्यों और को सम्मिलित करना आवश्यक हो जाता है जिससे पाठ्यचर्या व्यवहारिक और उपयोगी बनी रहे। यदि पुराने तथ्य या ज्ञान व्यवहारिक और उपयोगी हों तब भी पाठ्यचर्या में समय के साथ आए परिवर्तनों से सम्बंधित ज्ञान को जोड़ा जाना जरुरी होता है ताकि पाठ्यचर्या वर्तमान की मांग को पूरी कर सके।

पाठ्यचर्या का निर्माण विभिन्न उद्देश्यों के आधार किया जाता है। उन उद्देश्यों की प्राप्ति पाठ्यचर्या का लक्ष्य होता है। अतः यह देखना अत्यन्त जरुरी है कि जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यचर्या का निर्माण किया गया है क्या वे उद्देश्य पूर्ण हो रहे हैं।पाठ्यचर्या एक विशेष समूह के लिए भी निर्मित की जाती है तो मूल्यांकन के द्वारा यह निश्चित किया जाता है की उन विशेष समूहों की आवश्यकता को पाठ्यचर्या पूरी कर रही है या नहीं।

पाठ्यचर्या मात्र सूचना देने या जानकारी देने से सम्बंधित नहीं है। मूल्यांकन के द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है की पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को ज्ञान देने के साथ-साथ उनमे गहरी समझ का विकास करने में भी सक्षम है।

4.9 पाठयचर्या मूल्यांकन के चरण

पाठयचर्या मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है जिसके विभिन्न चरणों से गुजरते हुए मूल्यांकन कार्य किया जाता है। इस प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को चार भाग में विभाजित किया जा सकता है, जो आरेख 11.3 के माध्यम से समझा जा सकता है।

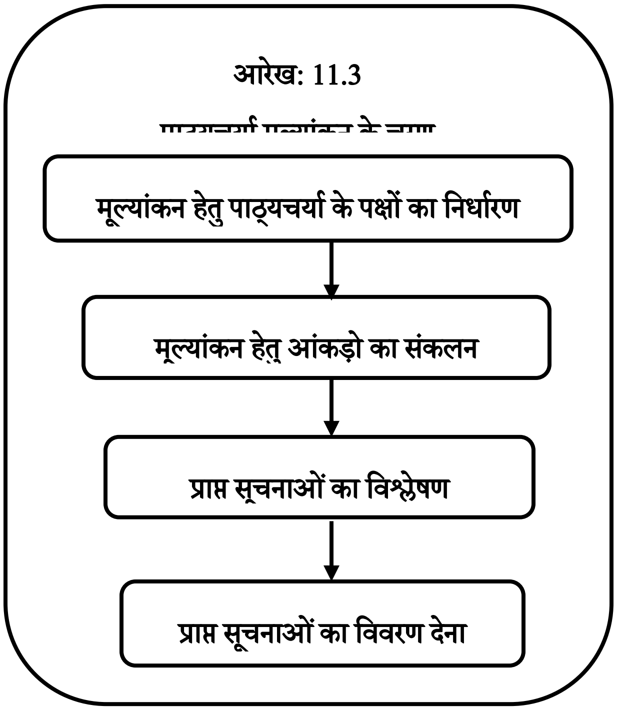

आरेख: 11.3

मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण: मूल्यांकनकर्ता सर्वप्रथम यह निर्धारित करता है किपाठयचर्या के किन पक्षों का मूल्यांकन किया जाना है। इस हेतु वह सर्वप्रथम मूल्यांकन क्रिया के उद्देशों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

मूल्यांकन हेतु आंकड़ो का संकलन: मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों के निर्धारण के पश्चात् मूल्यांकनकर्ता आंकड़ो का संग्रहण करता है। इस हेतु वह पहले उन सूचनाओं को चिह्नित करता है जिनका संग्रहण किया जाना है साथ ही सूचनाओं के संग्रहण हेतु जिन उपकरणों का प्रयोग किया जाने वाला है उनका भी चयन किया जाता है। उपकरणों के रूप में साक्षात्कार, परीक्षण, प्रश्नावली, अनुसूचियों इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इस क्रम में उस जनसंख्या को चिन्हित तथा प्रतिदर्शो को सूचीबद्ध किया जाता है जिनपर उपकरणों का प्रशासन कर सूचनाओं का संग्रहण किया जाता है।

प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण: प्राप्त आंकड़ों का तद्पश्चात विश्लेषण किया जाता है और उन्हें तालिका एवं ग्राफ के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके हेतु उद्देश्यों, आंकड़ों एवं उपकरणों के आधार पर

सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। सांख्यिकी का प्रयोग अक्सर दो या अधिक पाठ्यचर्या के मध्य सार्थक अंतर या सहसंबंध जानने के लिए किया जाता है।

प्राप्त सूचनाओं का विवरण देना:आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त सूचनाओं का विवरण दिया जाता है। विवरणों का लेखन प्राप्त निष्कर्षों पर आधारित होता है। सूचनाओं के विश्लेषण से कुछ निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। उन्हीं निष्कर्षों का लेखन इस चरण में किया जाता है । निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मापन किया जाता है। जिन उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हुयी होती है उनके लिए पाठ्यचर्या के कुछ पहलूओं पर पुनर्विचार करने हेतु संस्तुतियां की जाती हैं।

4.10 मूल्यांकन प्रक्रिया की तकनीकें

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कई तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है। सभी तकनीकों का यहाँ पर वर्णन करना मुश्किल है अतः उनमें से कुछ मुख्य तकनीकों का वर्णन यहाँ पर किया जाएगा।

i. **प्रश्नावली:** प्रश्नावलियों का प्रयोग पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। प्रश्नावलियों का प्रयोग पाठ्यचर्या से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों से जुड़े stakeholders पर किया जाता है जिसमें छात्र, अध्यापक, माता-पिता, प्रशासक एवं पाठ्यचर्या निर्माण से जुड़े अन्य व्यक्ति आ जाते हैं। इन्हें पाठ्यचर्या से जुड़े विभिन्न प्रश्न दिए जाते हैं जिनका उत्तर इन्हें देना होता है।

ii. **प्रेक्षण:** यह पाठ्यचर्या के सम्पादन से सम्बंधित है। प्रेक्षण तकनीक मूल्यांकनकर्ता को मूल्यांकन प्रक्रिया के हेतु सर्वाधिक सम्बंधित पहलू पर विशेष ध्यान देने में मदद करता है। यह विधि उस स्थिति में अधिक वैध मानी जाती है जब इसमें व्यक्तिनिष्ठता एवं वस्तुनिष्ठता का उचित समावेश होता है। प्रेक्षण के साथ-साथ साक्षात्कार एवं पृष्ठ-पोषण तथा इसके साथ ही साथ अन्य लिखित साक्ष्य प्रेक्षण से प्राप्त परिणामों कि सार्थकता में वृद्धि करते हैं।

iii. **चेक लिस्ट**: चेक लिस्ट को मात्र प्रयोग करके इसके द्वारा पूर्ण जानकारी प्राप्त करना कठिन कार्य है अतः चेक लिस्ट को प्रश्नावली या साक्षात्कार के साथ एक पूरक या भाग के रूप में प्रयोग करते हैं। यह उत्तरों की संपूर्ण सूची होती है उत्तरदाता जिसमें अपने हिसाब से सबसे उपयुक्त उत्तरों को चुनता है अर्थात सही उत्तरों की सूची में से कुछ उत्तरों को अपने विचार के आधार पर सही मनाता है और उन्हें सही के निशान से चयनित कर लेता है। मूल्यांकनकर्ता को पाठ्यचर्या से सम्बंधित विभिन्न तथ्यों को सूचीबद्ध कर उन्हें उत्तरदाता को दे देना चाहिए एवं इसके द्वारा पाठ्यचर्या में किन बिन्दुओं में समस्याएँ हैं; किन पाठों की आवश्यकता नहीं है, कौन से पाठ अप्रासंगिक हैं, कहाँ संशोधन की आवश्यकता है और कौन से नए पक्ष जोड़े जाने चाहिए, की जानकारी ली जा सकती है।

iv. **साक्षात्कार:** साक्षात्कार, सूचनाओं के संग्रहण एवं मूल्यांकन हेतु एक आधारभूत तकनीक के रूप देखा जाता है। साक्षात्कार आवश्यकताओं और उद्देश्यों के आधार पर औपचारिक एवं अनौपचारिक अथवा संगठित अथवा असंगठित कैसा भी हो सकता है। इसके लिए

पाठ्यचर्या से सम्बन्धित जिन सूचनाओं की प्राप्ति साक्षात्कार के माध्यम से करनी है वह उचित प्रकार से परिभाषित एवं लिखित होना चाहिए एवं प्रश्नों का प्रस्तुतीकरण उचित प्रकार से होना चाहिए। अर्थात साक्षात्कारकर्ता के द्वारा प्रश्न उचित प्रकार से पूछे जाने चाहिए और किसी भी प्रकार की जल्दबाजी और पक्षपात नहीं करना चाहिए। मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में किसी विशेषज्ञ से उचित प्रश् पूछे जाएँ और फिर उन उत्तरों के आधार पर पाठ्यचर्या को मूल्यांकित किया जाना चाहिए।

v. **कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा**: पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कार्यशालाओं और समूह परिचर्चाओं का प्रयोग किया है। इस तकनीक में विशेषज्ञों को पाठ्यचर्या पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया जाता है और तद्पश्चात समूह परिचर्चा करायी जाती है और निर्धारित निकषों के आधार पर जो कि मूल्यांकनकर्ता के द्वारा निर्धारित की गयी होती हैं, पर पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या के विकास एवं उसके क्रियान्वयन के किए उपयोगी जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया एवं माध्यम है। यदि इसे और स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह इसे इस भांति समझा जा सकता है कि किसी भी पाठ्यचर्या का निर्माण कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किया जाता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि निर्धारित पाठ्यचर्या के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हो रही है अथवा नहीं और यदि हुयी है तो उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त हुए हैं। मूल्यांकन के अभाव में पाठ्यचर्या दिशाहीन हो जाएगी और दिशाहीन पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को कहाँ ले जाएगी इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। जिस प्रकार से गंतव्य का ज्ञान होने के पश्चात् भी यदि चुना गया मार्ग सही नहीं हो तो गंतव्य तक नहीं जाया जा सकता ठीक उसी प्रकार शिक्षण उद्देश्यों की जानकारी होने पर भी यदि पाठ्यचर्या सही नहीं हो तो निर्धारित उद्देश्यों तक कभी नहीं पहुंचा जा सकता है।

अभ्यासप्रश्न

7. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
8. पाठ्यचर्या से अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाया जाना क्यों आवश्यक है?
9. पाठ्यचर्या मूल्यांकन केवल नयी पाठ्यचर्या हेतु ही आवश्यक है।(सत्य/असत्य)
10. चेकलिस्ट का प्रयोग कर पाठ्यचर्या को पूर्ण रूप से मूल्यांकित किया जा सकता है। (सत्य/असत्य)
11. साक्षात्कार विधि में किसी विशेषज्ञ के साक्षात्कार के द्वारा पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता मूल्यांकित की जाती है।(सत्य/असत्य)
12. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न चरण कौन-कौन से हैं?
13. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु किन-किन तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है?

4.11 सारांश

पाठ्यचर्या मूल्यांकन: पाठ्यचर्या मूल्यांकन किसी कार्यक्रम, उत्पाद, योजना, प्रक्रिया उद्देश्य या पाठ्यचर्या की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्यों का निर्धारण है

पाठ्यचर्या निर्माण के चरण

- आवश्यकता विश्लेषण चरण
- अभिकल्प चरण
- क्रियान्वयन चरण
- मूल्यांकन चरण

पाठ्यचर्या मूल्यांकनके प्रकार

निर्माणात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन: पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता जानने के लिए किया जाने वाला मूल्यांकन निर्माणात्मक मूल्यांकन कहा जाता है।पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के पश्चात् पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता को जानने के लिए किए जाने वाला मूल्यांकन योगात्मक मूल्यांकन कहा जाता है।

निकष संदर्भित तथा मानक संदर्भित मूल्यांकन: निकष संदर्भित मूल्यांकन में यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है। मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है।

पूर्व तथा पश्च परीक्षण: इस प्रकार के मूल्यांकन में पाठ्यचर्या को पढ़ाने से पूर्व एक सेट का प्रशासन कर विद्यार्थियों का विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान का मूल्यांकन कर लिया जाता है तत्पश्चात निर्धारित पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को पढ़ाने के पश्चात् दूसरे सेट का प्रशासन कर व्यवहार एवं ज्ञान में आए परिवर्तन का आकलन किया जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

(i) पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु (ii) पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु (iii) व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु (iv) प्रशासनिक नियमन हेतु

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व : पाठ्यचर्या मूल्यांकन अधिगम में सुधार के साथ-साथ शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु यह सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

पाठ्यचर्याके पक्षों का निर्धारण
आंकड़ो का संकलन
सूचनाओं का विश्लेषण
सूचनाओं का विवरण

पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रक्रिया की तकनीकें

प्रश्नावली
प्रेक्षण
चेकलिस्ट
साक्षात्कार
कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा

4.12 शब्दावली

1. **पाठ्यचर्या:**पाठ्यचर्या नियोजित एवं निर्देशित शिक्षण अनुभव है जो विद्यार्थियों में विद्यालय के तत्वावधान में व्यवस्थित पुनर्निर्माण के माध्यम से ज्ञान एवं अनुभवों के द्वारा विद्यार्थी का अकादमिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षमता में सतत एवं वांछित विकास करती है।
2. **मूल्यांकन:** मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया से सम्बंधित है जो यह सुनिश्चित करता है की किन-किन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुयी है
3. **पाठ्यचर्या मूल्यांकन:**पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या से सम्बंधित दुर्बल एवं सबल पक्षों के साथ-साथ कार्यान्वयन में आई समस्याओं की पहचान, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया में सुधार, पाठ्यचर्या एवं आवंटित वित्त की प्रभावकारिता का निर्धारण है।
4. **निर्माणात्मक मूल्यांकन:**निर्माणात्मक मूल्यांकन मूल्यांकन को कहते हैं जिसमें पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए आंकड़ो का संकलन पाठ्यचर्या की योजना, विकास अथवा निर्माण के दौरान किया जाता है जिससे निर्माण के दौरान ही पाठ्यचर्या का पुनरावलोकन करते हुए दोषों को दूर किया जा सके। निर्माणात्मक मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या में संशोधन का अवसर देता है।
5. **योगात्मक मूल्यांकन:**योगात्मक मूल्यांकन नवीन पाठ्यचर्या को लागू करने के पश्चात् किया जाता है। इसके लिए नए कार्यक्रम को लागू करने के संपूर्ण वर्ष के पश्चात् या कुछ महीनों के पश्चात् परीक्षा के माध्यम से पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है।
6. **निकष संदर्भित मूल्यांकन:**निकष संदर्भित मूल्यांकन में सर्वप्रथम पाठ्यचर्या के सभी उद्देश्यों की सूची तैयार की जाती है। इसके बाद विद्यार्थियों का परीक्षण किया जाता है और यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है।
7. **मानक संदर्भित मूल्यांकन:**मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है । ऐसी पाठ्यचर्या मूल्याकन के द्वारा जिसकी उपयुक्तता जाँच ली गयी हो, को मानक मानते हुए उसके सापेक्ष में नयी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है।

4.13अभ्यास प्रश्नोंकेउत्तर

1. फ्रोबेल
2. NCERT

3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत जिन दो महत्वपूर्ण तथ्यों का अध्ययन किया जाता है वे हैं, (i) जिन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित पाठ अथवा पाठ्यचर्या का अध्यापन किया गया है उनमें से किन-किन उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है तथा कौन से उद्देश्य अप्राप्य रह गए हैं, (ii) कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षण के प्रति छात्रों के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं।
4. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न उद्देश्य निम्नलिखित हैं-
   i. पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु
   ii. पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु
   iii. व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु
   iv. प्रशासनिक नियमन हेतु
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं
   i. निर्माणात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन
   ii. निकष संदर्भित एवं मानक संदर्भित मूल्यांकन
   iii. पूर्व तथा पश्च मूल्यांकन
6. निर्माणात्मक मूल्यांकन के द्वारा पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों का चयन एवं पाठ्यचर्या में शामिल दूषित तत्वों का संशोधन किया जाता है।
7. पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता बनाए रखने के लिए पाठ्यचर्या मूल्यांकन आवश्यक है।
8. पाठ्यचर्या को व्यावहारिक एवं उपयुक्त बनाए रखने के लिए पाठ्यचर्या से अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाया जाना आवश्यक है।
9. असत्य
10. असत्य
11. सत्य
12. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मुख्य चरण इस प्रकार हैं
   i. मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण
   ii. मूल्यांकन हेतु आंकड़ो का संकलन
   iii. प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण
   iv. प्राप्त सूचनाओं का विवरण देना।
13. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु प्रश्नावली, प्रेक्षण, चेकलिस्ट, साक्षात्कार, कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा जैसी तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है।

4.14 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bharvad, J. A., (2010). Curriculum Evaluation. International Research Journal September, 1 (1), 72-74.

2. Cronbach,. (1963). Course Improvement through Evaluation. San Fransisco: Jossey , Bars. (Teachers College Record, 64, 672-683)
3. Doll, R.C. (1986). Curriculum Improvement: Decision Making and Process. Boston: Allyn and Bacon.
4. ayton, D. (1973). Science for People. New York: Science History Publications.
5. Ornstein, A. and Hunkins, F. (1998). Curriculum: Foundations, Principle and Issues. Boston, MA: Allyn & Bacon.
6. Sanders, J.R. (1990). Curriculum Evaluation. In: Walberg, H. J. & Haertel, G.D. (eds.). The International Encyclopaedia of Education Evaluation. New York: Pergamon Press.
7. Sowell, E. (2000). Curriculum: An Integrative Introduction. NJ: Prentice-Hall.
8. Stake, R.E. (1967). The Countenance of Educational Evaluation Teachers College Record.
9. Stufflebeam, I.D. (1971). Educational Evaluation & Decision Making. Itasea: Ill, Peacock.
10. Wheeler, D.K. (1967). Curriculum Process. london: U.K. University of london Press ltd.
11. Wiles, J. & Bondi, J. (1989). Curriculum Development. A Guide to Practice (3rd Edition). Columbus OH: Merril Publishing Company.
12. Worthen, B.R. (1990). Program Evaluation. In: Walberg, H. J. & Haertel, G.D. (eds.). The International Encyclopaedia of Education Evaluation. New York: Pergamon Press.

4.15 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्या है? पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्यों पड़ती है? पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के विभिन्न चरणों का उल्लेख करें।
2. पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्यों महत्वपूर्ण है? पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकें कौन-कौन सी हैं? संक्षिप्त व्याख्या करें।
3. एक नयी पाठ्यचर्या का विकास किन-किन चरणों से गुजरते हुए होता है? नयी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन होना क्यों आवश्यक है?

इकाई 5– पाठ्यक्रम मूल्यांकन के मॉडल, पाठ्यक्रम मूल्यांकन में प्रवृत्तियां

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 पाठ्यक्रम मूल्यांकन
5.4 पाठ्यक्रममूल्यांकन मॉडल
5.5 स्टफल बीम मॉडल
5.6 स्टेक मॉडल
5.7 आइजनर का सूक्ष्म निरूपण मॉडल
5.8 टायलर का उद्देश्य-केंद्रित मॉडल
5.9 सारांश
5.10 अभ्यासप्रश्नों के उत्तर
5.11 संदर्भ-ग्रन्थ
5.12 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

हमक्यानिर्धारितयोजना के रूप मेंपाठ्यक्रम ने अपनेलक्ष्यों और उद्देश्यों कोहासिल किया हैपरध्यान केंद्रित करेंगे|दूसरे शब्दों में,वित्तऔरमानव संसाधन के मामलेमेंसभीप्रयाससार्थककर दिये गये हैंया नहीं यह निर्धारितकरने के लिए पाठ्यक्रम मूल्यांकनकिया जाना है| विभिन्न मूल्यांकनकर्ता पाठ्यक्रमको किस हद तकसफलतापूर्वकलागू किया गया हैजानना चाहते हैं|एकपाठ्यक्रमके मूल्यांकनसेएकत्र जानकारीनिर्णय करने के लिएआधार रूपों के बारे मेंकैसेसफलतापूर्वककार्यक्रमअपने इच्छितपरिणाम औरकार्यक्रममूल्यहासिल किये हैं या केलायक है|इस इकाई में हम पाठ्यक्रम मूल्यांकन, एवं पाठ्यक्रम मूल्यांकनके विभिन्न मॉडलोंकी चर्चा करेंगे।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप -

1. पाठ्यक्रम मूल्यांकन की परिभाषा तथा उसकी संकल्पना समझ सकेंगे।
2. पाठ्यक्रम मूल्यांकनकी विविध परिभाषाएं बता सकेंगे।
3. पाठ्यक्रम मूल्यांकनके विभिन्न मॉडलोंकोबता सकेंगे।
4. पाठ्यक्रम मूल्यांकनके विभिन्न मॉडलों की विशेषताओं को बता सकेंगे।
5. पाठ्यक्रम मूल्यांकन अध्यापक और विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है यह समझ सकेंगे।

5.3 पाठ्यक्रम मूल्यांकन

मूल्यांकनक्याहै?मूल्यांकनकार्यक्रमको अपनाने,अस्वीकार,यासंशोधितकरने केलायक के उद्देश्य सेआंकड़ोंको एकत्रित करने की प्रक्रियाहै|कार्यक्रमविभिन्नपक्षों केप्रश्नोंऔरचिंताओं के जवाबका मूल्यांकन हैं| समाज जानना चाहता है किकार्यान्वितपाठ्यक्रमने अपनेलक्ष्य और उद्देश्य कोहासिल किया है|शिक्षक जानना चाहते हैं कि क्याजो वेकक्षामेंकर रहे हैं,प्रभावीहै ?और विकासकर्तायानियोजक जानना चाहते हैं किकैसे पाठ्यक्रमउत्पाद को बेहतर बनाया जाये|मूल्यांकनकार्यक्रमोंऔरप्रक्रियाओंकामहत्वया मूल्यनिर्धारण की प्रक्रियाहै|

मेक नील (1977) के अनुसार "पाठ्यक्रममूल्यांकनदोप्रश्नोंपरप्रकाश डालने का प्रयास है-सीखने के अवसर,कार्यक्रमों,पाठ्यक्रमोंऔरगतिविधियोंकी विकसितऔरसंगठितयोजनाकरना वास्तव मेंवांछित परिणाम प्राप्त हों|कैसेपाठ्यक्रममें प्रस्तावित रूप में सबसे अच्छासुधार किया जासकता है?"

वार्थेन औरसैंडर्स ने पाठ्यक्रममूल्यांकनको परिभाषित-"एककार्यक्रम, उत्पाद,परियोजना,प्रक्रिया,उद्देश्य,यापाठ्यक्रमकीगुणवत्ता,प्रभावशीलता,यामूल्य का औपचारिक अवधारणा या निरूपण से है|"

ऑलिवा(1988) ने पाठ्यक्रममूल्यांकन को जानकारीप्रदान करनेकीप्रक्रिया के रूप में, वर्णनकरने और प्राप्त करने के लिए निर्णयन विकल्पको पहचानने के रूप में परिभाषित किया|

मूल्यांकनबातों का मूल्यनिर्धारित करने के लिएएकअनुशासितपड़ताल है|बातों में'कार्यक्रम,प्रक्रियाएं यावस्तुएंशामिल हो सकते हैं| सामान्यतयाअनुसंधानऔरमूल्यांकनमें समानडाटा संग्रहउपकरणों का इस्तेमालकिया जा सकता है, भले ही वे अलग हैं|तीनआयामहैं,जिस परवेअलग हो सकते हैं-

1सबसे पहले,मूल्यांकनको अपनेउद्देश्यकी ज्ञानकीपीढ़ी के रूप मेंजरूरत नहीं है|अनुसंधानबुनियादीहो जाता है, जबकि मूल्यांकनलागू किया जाता है|

2 दूसरा, मूल्यांकनमुमकिन हैनिर्णय यानीतिरूपके आधारबनाने के लिएउपयोग की जाने वालीजानकारीका उत्पन्न करती हो| मूल्यांकनतत्काल उपयोग की गयी जानकारीअर्जित करता हैजबकि अनुसंधानमें इसकी आवश्यकता नहीं है|

3 तीसरे, मूल्यांकनबातोंका एकनिर्णयहै| मूल्यांकनमूल्य निर्णयपरिणामहैजबकिअनुसंधानको कुछनहींचाहिएऔर जरूरत नहींहोती है

5.4 पाठ्यक्रम मूल्यांकन मॉडल

आपको कैसेपाठ्यक्रमके मूल्यांकन केबारे में पता होना चाहिए?कईविशेषज्ञों ने विभिन्न मॉडलोंका प्रस्ताव दिया हैकि कैसेऔरक्याएकपाठ्यक्रमके मूल्यांकनमेंशामिल किया जाना चाहिए|मॉडलउपयोगी होते हैंक्योंकिवे आपकोएक मूल्यांकनके मापदंडों कोपरिभाषित करने में मददगार साबित होते हैं|अनेकमूल्यांकनमॉडलों का निर्माण किया गया है लेकिन उनमे से कुछ प्रमुख मॉडलों का वर्णन इस इकाई में किया जा रहा है-

5.5 स्टफलबीम मॉडल

इसे **Context, Input, Process, Product Model (CIPP Model)** भी कहते हैं|डैनिएल एल.स्टफलबीम,जिन्होंनेमूल्यांकन परफाई डेल्टाकापाराष्ट्रीयअध्ययन समिति (Phi Delta Kappa National Study Committee)की अध्यक्षता की ने मूल्यांकनका एकव्यापक रूप से उद्धृतमॉडलCIPP Model पेश किया|Stufflebeamकेमॉडलका एक प्रमुखपहलूनिर्णय लेनेयाकार्यक्रम कीशुरुआत के बारे मेंकिसी केमन बनानेके कार्यपरकेन्द्रितहै|पाठ्यक्रममूल्यांकनकर्ताओं को सही ढंग से कियाऔरनिर्णय लेने की प्रक्रियामेंसहायता के लिए मूल्यांकन करने के लिए –

पहले क्यामूल्यांकन किया जानाहैउन जानकारियों को निर्धारित करजो एकत्रहो गयी हैवर्णन करना (उदाहरण के लिए प्राथमिकग्रेडमेंबच्चोंकीवैज्ञानिकसोच कौशलको बढ़ाने मेंनए विज्ञानकार्यक्रम कोकैसेप्रभावी कियागया है)

दूसराचयनिततकनीकऔरतरीकों का उपयोग करजानकारीप्राप्त करने याएकत्र करने के लिएहै(उदाहरण के लिए शिक्षकों के साक्षात्कार,छात्रोंकेटेस्ट स्कोरएकत्र करना)

तीसरेइच्छुक समुदाय के लिए सूचना (तालिकाओं,ग्राफ के रूपमें)प्रदान करने या उपलब्ध करानेके लिएहै|नए पाठ्यक्रमकोबनाए रखने, संशोधित करने याकार्यक्रमको समाप्त करनेके लिएमूल्यांकनके निम्नलिखितप्रकार 4तय करने की सूचनाप्राप्त की है-संदर्भ (context),प्रदा (input),प्रक्रिया (process)औरउत्पाद (product).

मूल्यांकनका स्टफलबीम(Stufflebeam)मॉडलएकपाठ्यक्रमकार्यक्रम के समग्र प्रभाव को निर्धारित करने के लिएदोनोंरचनात्मक (formative) और योगात्मक (summative)मूल्यांकनपरनिर्भर करता है(देखें चित्र संख्या 1)मूल्यांकनकार्यान्वितकार्यक्रमके सभी स्तरों परआवश्यक है|

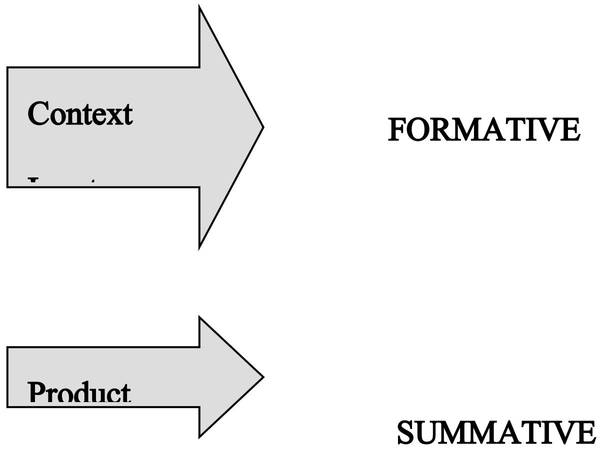

1 संदर्भमूल्यांकन (Context Evaluation)(क्याकरने की आवश्यकता है औरकिस संदर्भमें?)

यहउद्देश्योंके लिए एक औचित्यअथवा मूल कारण प्रदान करने के प्रयोजनके साथमूल्यांकनका सबसे बुनियादीप्रकारहै|मूल्यांकनकर्तावातावरणको परिभाषित करता है जिसमेंपाठ्यक्रमजो एककक्षा,स्कूलयाप्रशिक्षणविभागहो सकता हैको लागू करता है|इसके अलावासमीक्षा के तहतसंगठनमेंकमियाँऔरसमस्याएं हैंजिनकी पहचान की गयी है (जैसे माध्यमिक विद्यालयोंमेंछात्रोंका एक बड़ाअनुपात,वांछितस्तरपरपढ़ने में असमर्थ हैं,कंप्यूटरों के लिएछात्रोंकाअनुपातबड़ा है,विज्ञान शिक्षकों का एक बड़ाअनुपात अंग्रेजी मेंपढ़ाने के लिएकुशल नहींहै)लक्ष्य और उद्देश्य संदर्भके मूल्यांकन केआधारपरनिर्दिष्ट हो रहे हैं|दूसरे शब्दों में,मूल्यांकनकर्तापृष्ठभूमिनिर्धारित करता हैजिसमें नवाचारोंको लागू किया जा रहाहै|

2 प्रदा मूल्यांकन(input Evaluation) (यहकैसेकिया जाना चाहिए?)

मूल्यांकनउद्देश्यजिनमें सेपाठ्यक्रमके उद्देश्यों को प्राप्तकरने के लिएसंसाधनों का उपयोगकरने के लिएकैसेनिर्धारित करनेके लिएजानकारीप्रदान करना है|दुर्भाग्य से,इनपुटमूल्यांकनके तरीके शिक्षा के क्षेत्र मेंकमी कर रहे हैं|प्रचलितप्रथाओंमें पेशेवरसाहित्य सेअपील, विचार विमर्शसमिति, सलाहकार औरमार्गदर्शकप्रायोगिकपरियोजनाओंकासेवायोजन शामिल है|

3 प्रक्रिया मूल्यांकन(Process Evaluation) क्या यह किया जा रहा है?)

क्या आवर्ती प्रतिपुष्टि काप्रावधानहै जबकिपाठ्यक्रमकार्यान्वित किया जा रहाहै?

4 उत्पाद मूल्यांकन (Product Evaluation) क्या यह सफल था?)

पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए व्यवस्थित रूप से प्राप्त करने हेतु आंकड़े (data) कोनिर्धारित करने के लिएएकत्र किया जाता हैउदाहरण के लिए किस हद तकके छात्रों मेंविज्ञानकी दिशा कीऔर

अधिकसकारात्मक दृष्टिकोणविकसित किया है|)उत्पाद मूल्यांकन में उद्देश्यों की उपलब्धिको मापने केडेटा की व्याख्याऔर,नए पाठ्यक्रमको संशोधितकरने जारी रखनेया समाप्तकरनेजानकारीके साथउपलब्ध करानेके लिएतय करना शामिल है|उदाहरण के लिए उत्पाद मूल्यांकन छात्रों में विज्ञान के क्षेत्र मेंअधिक रुचि हो इसके लिए नए विज्ञानपाठ्यक्रमके परिचय के बाद और इस विषयके प्रतिअधिकसकारात्मक रहे बता सकता है|

अभ्यास प्रश्न

1. एल.स्टफलबीम,जिन्होंनेमूल्यांकन परPhi Delta Kappa National Study Committeeकी अध्यक्षता की। (सत्य/असत्य)
2. इसे **Context,** ...., **Process,** .... **Model** भी कहते हैं|
3. मूल्यांकनकर्तापृष्ठभूमिनिर्धारित करता हैजिसमें .... को लागू किया जा रहाहै|

5.6 स्टेक मॉडल

रॉबर्टस्टेक द्वाराप्रस्तावितमॉडल में पाठ्यक्रममूल्यांकनके तीन चरणोंका पता चलता है- पूर्ववर्तीचरण,लेन देन-चरण,और परिणाम चरण|पूर्ववर्तीचरणमेंअनुदेशन केपिछलेपरिणामोंसे संबंधितमौजूदास्थितियांशामिलहो सकती हैं|लेनदेन-चरण शिक्षा कीप्रक्रियाके गठनसे ,जबकिपरिणामचरणकार्यक्रमके प्रभावसे संबंधित है| स्टेकदो बातों पर जोर देता है-विवरण औरनिर्णय पर |

विवरण क्याप्रयोजन था ,क्याउल्लेख करने के लिएयाक्यावास्तव मेंमनाया गयाके अनुसारविभाजित है|निर्णयपर पहुंचनेमेंयावास्तविकनिर्णयकरने के लिएइस्तेमाल कियामानकोंका उल्लेख करने केअनुसार निर्णय को विभक्त किया हुआ है|

5.7आयजनर का सूक्ष्म-निरूपण मॉडल

इलियटआइजनर,एक प्रसिद्धकलाशिक्षकने तर्क दियाशिक्षणबहुतजटिलथाइसलिए उद्देश्योंकी एक सूचीको छोटे भागों में तोड़ दिया हैऔर यह निर्धारितकरने के लिएयहजगह मात्रात्मकमाप ने ले ली हैया नहीं|जब तक हमछात्रोंका मूल्यांकनछात्रोंकी सूचना केआधार पर करते हैंहमेकेवलसूचनाके छोटे भागोंको सीखना होगा|आइजनर का तर्क है मूल्यांकनहमेशापाठ्यक्रम कोचलाना औरकरना है| यदि हमचाहते हैंकि छात्र समस्याओं के समाधानऔरसूक्ष्म रूप से विचार करने में सक्षम होतोहमें इस समस्याको सुलझानेऔरमहत्वपूर्ण सोच,कौशलका मूल्यांकन करना होगाजोआवृत्तिअभ्याससे सीखा नहींजा सकता है|तो,एककार्यक्रमका मूल्यांकनकरने के लिएहमेंकक्षाकी घटनाओंकी समृद्धिऔरजटिलतापर अधिकृतकरने का प्रयासकरना चाहिए|उन्होंनेसूक्ष्म निरूपणमॉडलका प्रस्ताव रखा, जिसमें एकजानकारमूल्यांकनकर्तानिर्धारित कर दावा कर सकता हैकि यदिकौशल

औरअनुभवकेसंयोजन का उपयोग करें तो पाठ्यक्रमसफल रहा है|शब्द‘connoisseurship’ लैटिन शब्दcognoscereसे निकला है,जिसका अर्थजानना है|उदाहरण के लिए,आपआलोचना करने में सक्षमहैं और उससे पूर्व भोजन,चित्रोंयाफिल्मोंके पारखीहोने के लिए,आपकोभोजन,चित्रोंयाफिल्मोंकेविभिन्न प्रकारों के साथअनुभवऔर के बारे मेंज्ञानहोना आवश्यक है|एकआलोचकहोने के लिए घटनामेंसूक्ष्म अंतर जिनकी आपजांच कर रहे हैंउनके गुणों को जानने और उनकी जानकारीआपको होनी चाहिए|दूसरे शब्दों में,पाठ्यक्रममूल्यांकनकर्ता को एक शैक्षिकआलोचकहोने कीतलाश करना चाहिए|परखमॉडल के अनुसार,मूल्यांकनकर्तापाठ्यक्रमयोजनाके कार्यान्वित हेतु विवरण औरव्याख्याप्रदान करते हैं-

1) विवरण:मूल्यांकनकर्ताछात्रों,शिक्षकोंऔरप्रशासकोंकेअनुभवों के वातावरण की विशेषताओंऔरक्रियाओं का अभिलेख रखते हैं| लोगमूल्यांकन रिपोर्टको पढ़ कल्पना करने में सक्षमहो जायेंगे जो प्रक्रियाओंकी तरहलग रहा है और स्थान ले रहाहै|
2) व्याख्या:मूल्यांकनकर्तासूचनाघटनाओंको संदर्भमें रखकरअर्थबताते हैं|उदाहरण के लिए,क्योंअकादमिकरूप से कमजोर छात्रों कोसवाल पूछने के लिएप्रेरितकिया जाता था|

5.8 टायलर का उद्देश्य-केन्द्रित मॉडल

शुरुआती पाठ्यक्रममूल्यांकनमॉडलों में से एक हैजो कईमूल्यांकनपरियोजनाओंको प्रभावितकरने के लिएसतत है|राल्फटायलर)1950द्वारापाठ्यक्रम और शिक्षाकेमूलसिद्धांतों (*Basic principles of curriculum and Instruction)* विषय पर लेखमें इसमॉडल को प्रस्तुत किया गया| जैसा किइसकाममेंऔर कईबड़े पैमाने परमूल्यांकनके प्रयासोंमें, प्रयोग कर व्याख्या कीहै|टायलरदृष्टिकोणतर्क औरव्यवस्थित ढंग से कईसंबंधितचरणों के माध्यम सेप्रस्तुत है-

1. पहले से निर्धारितकिये गये व्यवहारिकउद्देश्यों के साथशुरू करना|उन उद्देश्यों कोसीखनेकी सामग्रीऔरसंभावित छात्रव्यवहारदोनोंमें निर्दिष्ट करना चाहिए:
2. इस व्यवहार केपैदायाप्रोत्साहित करने के लिएउन स्थितियोंको पहचानें जोकिउद्देश्यमेंछात्र कोसन्निहितव्यवहारव्यक्त करने का अवसरदे देंगे|इस प्रकार आपमौखिकभाषा के प्रयोगका आकलनकरना चाहते हैंतोमौखिकभाषाके उत्पन्न होने की स्थितियोंकी पहचान करें|
3. संशोधित,याउपयुक्तमूल्यांकनउपकरणोंका निर्माण,का चयन करें,औरनिष्पक्षता, विश्वसनीयता और वैधताके लिएउपकरणोंकी जाँच करें.
4. संक्षेप में प्रस्तुत करना याआकलनके परिणामप्राप्त करने के लिएउपकरणोंका उपयोग करें
5. दी गईअवधि केपहले और बाद में मात्राका अनुमान लगाने के लिए कईउपकरणोंसेप्राप्त परिणामोंकी तुलना अथवा स्थान लेनेकेक्रमकरें.

6. पाठ्यक्रमकीकमजोरियों और मजबूती का निर्धारण करने केक्रममेंपरिणामों का विश्लेषण और मजबूतियों और कमजोरियोंके कारण इस विशेषपद्धति बारे मेंसंभव स्पष्टीकरणके लिए पहचानकरने के लिए|
7. पाठ्यक्रममेंआवश्यकसंशोधन करने के लिएपरिणामों का उपयोग करें

टायलर मॉडलके कई लाभ हैं-यहसमझने के लिए औरलागू करने के लिएअपेक्षाकृतआसानहै| यहतर्कसंगतऔरव्यवस्थितहै|यहव्यक्तिगत छात्रोंके प्रदर्शन के साथपूरी तरह सेचिंतित होनेके बजाय,पाठयक्रम की मजबूती और कमजोरियोंपरध्यानकेंद्रित करता है|यहमूल्यांकन, विश्लेषण और सुधारकीएक सततचक्रकेमहत्व पर भी जोर देता है|Guba और linciln(1981) के अनुसार,हालांकि,यहकईकमियोंसे ग्रस्त है| यहसुझाव नहीं देता है कि कैसे उद्देश्योंके लिए खुदका मूल्यांकन कियाजाना चाहिए| यहमानकोंको जोड़ने यामानकों को विकसितकिये जाने कासुझाव नहीं देता है|पाठ्यक्रम विकासमेंरचनात्मकताको सीमित करने हेतु उद्देश्योंकी पूर्वकथनपर जोर देता हैऔरयहपूरी तरह से ऐसा प्रतीत लगता है कि प्रारंभिक आकलनके लिए की आवश्यकता की अनदेखी,पूर्व आकलनऔर बादके आकलनपर अनुचितजोर देता है|

5.9 सारांश

पाठ्यक्रमके मूल्यांकनसेएकत्र जानकारीनिर्णय करने के लिएआधार रूपों के बारे मेंकैसेसफलतापूर्वककार्यक्रमअपने इच्छितपरिणाम औरकार्यक्रममूल्यहासिल किये गए हैं जाना जा सकता है|शिक्षक जानना चाहते हैं कि क्याजो वेकक्षामेंकर रहे हैं,प्रभावीहै ?और विकासकर्तायानियोजक जानना चाहते हैं किकैसे पाठ्यक्रमउत्पाद को बेहतर बनाया जाये|मूल्यांकनकार्यक्रमोंऔरप्रक्रियाओंकामहत्वया मूल्यनिर्धारण की प्रक्रियाहै|कईविशेषज्ञों ने विभिन्न मॉडलोंका प्रस्ताव दिया हैकि कैसेऔरक्याएकपाठ्यक्रमके मूल्यांकनमेंशामिल किया जाना चाहिए|Stufflebeamकेमॉडलका प्रमुखपहलूनिर्णय लेनेयाकार्यक्रम कीशुरुआत के बारे मेंकिसी केमन बनानेके कार्यपरकेन्द्रितहै|रॉबर्टस्टेक द्वाराप्रस्तावितमॉडल में पाठ्यक्रममूल्यांकनके तीन चरणोंका पता चलता है-पूर्ववर्तीचरण,लेन देन-चरण,और परिणाम चरण|इलियटआइजनर,एक प्रसिद्धकलाशिक्षकने तर्क दियाशिक्षणबहुतजटिलथाइसलिए उद्देश्योंको एक सूचीके छोटे भागों में तोड़ दिया |

5.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. सत्य
2. **Input, Product**
3. नवाचारों

4. पाठ्यचर्या,पाठयचर्या
5. यूनेस्को की रिपोर्ट
6. क्रो और क्रो
7. फ्रांसिस जे० ब्राउन

5.11 संदर्भ–ग्रन्थ

1. Crow, I.D, Alice Crow (1962), Introduction of Education, EurasiaPublishing House, New Delhi.
2. Spears, H (1953), Some Principles of Teaching,Prentice Hall, New *York.*
3. http://peoplelearn.homestead.com/assess/module_8.evaluation.doc
4. माथुर, एस०.एस० (1981), शिक्षण कला, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. मिश्र, आत्मानन्द(1985), शिक्षण कला, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

5.12 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठ्यक्रमके मूल्यांकन से आप क्या समझते हैं?
2. स्टफलबीम केपाठ्यक्रममूल्यांकनमॉडल को समझाइए ?
3. टायलर मॉडलसे आप क्या समझते हैं?इसके क्या लाभ हैं ?

इकाई 6 पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र : एक परिचय
6.4 ठ्यक्रम संबंधी शोध की प्रवृति
6.5 सारांश
6.6 अभ्यासप्रश्नों के उत्तर
6.7 संदर्भ ग्रंथ सूची
6.8 निबंधात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

पाठयचर्या शिक्षण प्रणाली का सबसे महत्तवपूर्ण अंग है। पूरा शिक्षण तंत्र पाठयचर्या के चारों तरफ ही चक्कर काटता है। शिक्षण प्रक्रिया की शुरुआत से लेकर मूल्यांकन तक सबकुछ पाठयचर्या के द्वारा ही निर्धारित होता है। अर्थात क्या पढ़ाना है? किसे पढ़ाना है? कितना पढ़ाना है? कैसे पढ़ाना है? और कौन पढ़ाएगा? आदि प्रश्नों के उत्तर हमें पाठयचर्या से ही प्राप्त होते हैं। ऐसे में पाठयचर्या के संबंध में शोधकार्य महत्वपूर्ण हो जाते हैं। चूँकि शिक्षा समाज का दर्पण है। अतः, जैसा समाज होता है वैसी ही अपनी शिक्षा पद्धति होती है। पाठयचर्या शिक्षा पद्धति का केन्द्रबिदु है। अतः,पाठयचर्या भी समाज पर निर्भर करता है।उदाहरण के तौर पर उत्तर वैदिक काल में समाज में अध्यात्मिकता की प्रधानता थी तो हमारा पाठयचर्या भी अध्यात्म से परिपूर्ण था। गुरुकुलों में विद्यार्थियों को वेद, पुराण, स्मृति, आदि पढ़ाए जाते थे। कालांतर में समाज में अमूल-चूल परिवर्तन हुए और इसके परिणामस्वरुप पाठयचर्या में।

आज हमारा समाज निरंतर हो रहे परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में वर्तमान परिदृश्य में समाज को किस प्रकार के शिक्षा की आवश्यकता है? भविष्य में शिक्षा की क्या माँग होगी? आदि जैसे प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पाठयचर्या के क्षेत्र में शोध होना आवश्यक है। निरंतर शोधकार्य हो भी रहे हैं और अतीत में भी हुए हैं।प्रस्तुत इकाई में हम इस बात का अध्ययन करेंगे कि पाठयचर्या संबंधी शोध में हम किन- किन शोध को शामिल कर सकते हैं अर्थत पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र क्या होंगे।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप -

1. पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र का अर्थ समझ सकेंगे
2. पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र का वर्णन कर सकेंगे
3. पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र की प्रवृति की व्याख्या कर सकेंगे।

6.3 पाठयचर्या संबंधी शोध का क्षेत्र : एक परिचय

'पाठयचर्या संबंधी शोध' एक व्यापक पद है जिसके अंतर्गत मुख्यतःपाठयचर्या के प्रस्ताव, क्रिया-कलाप या उसके परिणाम द्वारा जनित समस्याओं को समझने में शोध तकनीकों/प्रविधियों के अनुप्रयोग आदि समाहित होते हैं।

पाठयचर्या का व्यवहारिक अभ्यास कोई नई घटना नहीं हैं। इसकी शुरुआत तब से मानी जा सकती है जब से मनुष्य ने शिक्षा प्रदान करने के पुनीत कार्य की शुरुआत की। लेकिन पाठयचर्या निर्माण संबंधी क्रिया-कलापों का अध्ययन अपेक्षाकृत एक नया प्रयास है। पाठयचर्या का एक अध्ययन क्षेत्र के रुप में औपचारिक विकास 12वीं शताब्दी में माना जाता है। हाँलाकि इससे पूर्व भी थोड़े बहुत प्रयास हो चुके थे। फ्लरे द्वारा 1695 ई0 में " द हिस्ट्री ऑफ च्वॉयस एण्ड मेथड्स ऑफ स्टडी" नामक पुस्तक को पाठयचर्या संबंधी प्रारंभिक पुस्तक मानी जाती है(स्चुबेर्त(1980) । कालांतर में शिक्षण-प्रक्रिया में विद्यालय का महत्व बढ़ने के कारण पाठयचर्या निर्माण के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा और पाठयचर्या के स्वरुप, पाठयचर्या संबंधी साहित्य, जो एक अध्ययन क्षेत्र को दूसरे अध्ययन क्षेत्र से अलग कर सके, से संबंधित एक स्थायी स्वरुप के चिंतन का विकास हुआ(क्रेमिन,1971) । औपचारिक रुप से इसका उदय संयुक्त राज्य अमेरिका में, 1927 में, शिक्षा के अध्ययन के लिए बनी राष्ट्रीय सोशाइटी के एक समिति द्वारा तैयार एक वार्षिक पुस्तिका(इयरबुक), जिसमें पाठ्यक्रम निर्माण के लिए विचारों को एक साथ रखकर प्रयास करने पर बल दिया गया था, के प्रकाशन के साथ हुई(रज, 1927)। समय के साथ इसमें विकास होता गया और आज इसका क्षेत्र अति व्यापक हो गया है। पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र को आप निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं:

i. पाठयचर्या निर्माण की नीति संबंधी शोध
ii. पाठयचर्या विश्लेषण संबंधी शोध
iii. पाठयचर्या प्रारुप, अनुप्रयोग एवं क्रियात्मक शोध
iv. पाठयचर्या मूल्यांकन

अभ्यासप्रश्न

1. पाठयचर्या का एक अध्ययन क्षेत्र के रुप में औपचारिक विकास ....शताब्दी में माना जाता है।
2. " द हिस्ट्री ऑफ च्वॉयस एण्ड मेथड्स ऑफ स्टडी" नामक पुस्तक.................. ने लिखी।
3. " द हिस्ट्री ऑफ च्वॉयस एण्ड मेथड्स ऑफ स्टडी" नामक पुस्तक वर्ष .... में लिखी गयी।
4. औपचारिक रुप से पाठयचर्या संबंधी विकास का प्रारंभ ....नामकदेश में हुआ।

पाठयचर्या निर्माण की नीति संबंधी शोध Policy Related Curriculum Research

पाठयचर्या संबंधी शोध के एक क्षेत्र के रुप में, पाठयचर्या संबंधी नीति विषयक शोध को माना जाता है। इसके तहत शिक्षा प्रणाली में अधिकारियों की वरीयता जो हर देश में अलग-अलग होती है, को शामिल किया जाता है।

वो देश, जिनका पाठयचर्या केन्द्रीय होता है अर्थात पूरे देश के लिए एक ही पाठयचर्या होता है, वो शिक्षक की योग्यता एवं उनकी विशेषताओं के संबंध में आँकड़े एकत्र करने में ज़्यादा रुचि रखते हैं। वो ये भी जानना चाहते हैं कि शिक्षक वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विकास में अपने योगदान दे सकते हैं कि नहीं। इस प्रकार के शोध को भी पाठयचर्या संबंधी नीति विषयक शोध में स्थान दिया जाता है। निरंतर बदल रही आर्थिक परिस्थितियों के दबाव में आधुनिक, विकसित एवं औद्योगिक रुप से सशक्त देशों ने उत्तरदायित्वबोध और उसके अनुरुप विद्यालयों को मानव-शक्ति के एक उत्पादक तंत्र के रुप में देखने की प्रवृति विकसित की है। इस प्रकार से शोध के एक और क्षेत्र का विकास हुआ है जिसके अंतर्गत परिवर्तन के संकेतकों की माप की जाती है। ये संकेतक वो चर होते हैं जो किसी नीति के उन तथ्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें उस नीति विकास का प्रयोग सुचारु रुप से हो सके।

शिक्षा प्रणाली में नीति, शिक्षा प्रणाली के विभिन्न संगठनों के मध्य घुमती रहती है।यह मूर्त्त एवं अमूर्त्त तथ्यों तथा केन्द्रीय एवं परिधीय तथ्यों के मध्य भी घुमती रहती है। ऐसी परिस्थिति में पाठयचर्या विषयक शोध, अपने प्रायोजकों एवं अभ्यासकर्ताओं के सैद्धांतिक मान्यताओं पर आधारित होता है। संभवतः इसने एक महत्वपूर्ण सरकारी सूचना कि विवादास्पद मुद्दों के समाधान के रुप में इसका राजनीतिकरण हो गया है के रुप में तटस्थ प्रवृति प्राप्त की थी या संभवतः पाठयचर्या पर हो रही परिचर्चा के एक भाग के रुप में इसने एक रोचक स्थिति प्राप्त कर ली था। लेकिन इस बात के भी कुछ प्रमाण मिले हैं की शोधकर्ताओं का समूह इसकी भूमिका को कुछ ज़्यादा बढ़ा रहे थे। अमेरिका में, फेडरल शैक्षिक नियमों को प्रभावित करनेवालों कारकों की सूची में नीति संबंधी अध्ययन को सबसे नीचे का स्थान एक अनुसंधान के तहत प्रदान किया गया था। इसके पीछे सम्माननीय एवं विश्वसनीय मित्र राष्ट्रों के प्रबल विचार थे।

पाठयचर्या के संदर्भ में नीति संबंधी शोध उसके स्थानीय अनुकूलन को बढ़ावा देने के लिए भी किया जाता है।

अपनी पुस्तक 'बियोण्ड द स्टेबल स्टेट' में डोनाल्ड् स्कोन ने सीखे जाने वाले अनुदेशनों की चर्चा की है। लेकिन उनके मन में जिस अधिगम की बात चल रही थी वो स्थानीय नीति-निर्माता के अनुभवों, निर्णयों और युक्तियुक्त ज्ञान पर आधारित था। इसलिए विगत कुछ वर्षों से विद्यालय विशेष के केस स्टडी को पाठयचर्या संबंधी शोध में स्थान दिया जाने लगा है और इससे प्राप्त औपचारिक सामान्यीकरण को नीति-निर्माताओं को प्रमाणिक पाठयचर्या शोध के रुप में प्रदान किया गया। अन्य शब्दों में यदि कहा जाए तो विद्यालय विशेष के केस स्टडी को भी पाठयचर्या संबंधी शोध में स्थान दिया गया। ऐसे शोध, नीति-निर्माताओं को शोधकर्ता का दर्ज़ा नहीं देते हैं और नहीं ये साधाराण रुप से कुछ प्रश्नों का उत्तर देते हैं। ये उस प्रायोगिक आधार को विस्तृत करने का प्रयास करते हैं जिस पर प्रचलित पाठयचर्या के संदर्भ में तार्किक रुप से किए जानेवाले गेस की जाँच की जा सके।

कुछ देश विशेषतः इंगलैण्ड में पाठयचर्या के मामले में दिशा-निर्देश का अभाव था। वहाँ इस बात को लेक भ्रम था कि वास्तव में पाठयचर्या में कुल क्या-क्या चीजें शामिल हैं और विद्यालय विशेष के लिए पाठयचर्या में क्या शामिल है? परिणामस्वरुप वहाँ इस दिशा में कुछ आधारभूत शोध की आवश्यकताएँ उत्पन्न हुई ताकि इस संबंध में आँकड़े एकत्र किए जा सके कि विद्यालयों में क्या पढ़ाया और सीखाया जाना चाहिए। यूनाइटेड किंगडम में पाठयचर्या इस विवाद का विषय हो गया था कि क्या उतारदायित्व, बोर्ड के विचारों मे उत्पन्न विवादों में घिरा रहना चाहिए। इसे पेशवरों(जो कि शिक्षकों के निर्णयों पर बल दे रहे थे) और नौकरशाह(जो स्वयं के विचारों पर बल दे रहे थे) के विवाद के रुप में भी पहचाना जा सकता है। शिक्षा और विज्ञान विभाग तथा स्थानीय शिक्षण संस्थाएँ दोनों अपने-अपने स्थानों पर शिक्षा संबंधी शोध कर रहे थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पाठयचर्या पर उत्तम नियंत्रण पाना था। जुलाई, 1977 के ग्रीन पपेर में किसी पाठयचर्या का कौन सा हिस्सा मुख्य होना चाहिए, विषय पर शोध करने की आवश्यकता पर एक रिपोर्ट प्रकाशित किया गया था। दो वर्ष बाद शिक्षा एवं विज्ञान विभाग के एक सर्कुलर 14/77 में विद्यालय के पाठयचर्या को व्यवस्थित करने के लिए स्थानीय अधिकरणों की आवश्यकता की बात की गई थी। इसके अलावा विद्यालय परिषदों ने कई शोध कार्यों जो पाठयचर्या के विश्लेषण एवं व्यवस्था के विश्लेषण पर ज़्यादा बल दे रहे थे का प्रकाशन किया।

पाठयचर्या सुधार की प्रक्रिया को संस्थागत करने के क्षेत्र में काम कर रहे देशों, जिनके पास विश्वास एवं क्षमता की अलग-अलग मात्राएँ थी ने इस कार्य-कलाप के लिए 'शोध एवं विकास' नामक संस्था का गठन किया तथा तत्संबंधी साहित्य का प्रकाशान कार्य किया।

इस प्रकार आप देखते हैं कि पाठयचर्या विषयक शोध में पाठयचर्या संबंधी नीति को लेकर, जिसमें पाठयचर्या क्या होना चाहिए, शिक्षक योग्य है कि नहीं, पाठयचर्या संबंधी शोध क्या होगी, कौन सी

संस्था पाठयचर्या संबंधी शोध के लिए उत्तरदायी है आदि को लेकर अनेक शोध कार्य हुए हैं। वर्तमान में भी पाठयचर्या के संबंध में नीति-निर्धारण एक महत्वपूर्ण विषय है।

अभ्यासप्रश्न

5. जुलाई, 1977 के ग्रीन पपेर में किसी पाठयचर्या का कौन सा हिस्सामुख्य होना चाहिए विषय पर शोध करने की आवश्यकता पर एक रिपोर्ट प्रकाशित किया गया था। (सही/गलत)
6. पुस्तक 'बियोण्ड द स्टेबल स्टेट' डोनाल्ड् बर्फील्ड ने लिखी है। (सही/गलत)
7. इंगलैण्ड में पाठयचर्या के मामले में दिशा-निर्देश का अभाव था। (सही/गलत)
8. पाठयचर्या के संदर्भ में नीति संबंधी शोध उसके स्थानीय अनुकूलन कोबढ़ावा देने के लिए भी किया जाता है। (सही/गलत)
9. शिक्षा प्रणाली में नीति का शिक्षा प्रणाली के विभिन्न संगठनों से कोईसंबंध नहीं होता है। (सही/गलत)

पाठयचर्या विश्लेषण Curriculum Analysis

पाठयचर्या संबंधी शोध का एक और क्षेत्र वर्तमान पाठयचर्या या पाठयचर्या -प्रस्ताव का विश्लेषण करना है। इसके लिए प्रयुक्त प्रविधि सत्तारुढ़ दल के कारण परिवर्तित होते रहती है या विभिन्न देशों में अलग-अलग होती है। प्रत्येक पाठयचर्या तत्कालीन सत्तारूढ़ राजनीतिक दल के विचारों से प्रभावित होता है। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि जो पठ्यक्रम प्रचलन में है उस पर सत्तारूढ़ दल का कितना प्रभाव है और वह तत्कालीन शिक्षा प्रणाली के लिए कहाँ तक उपयोगी है या शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में वह कैसे सहायक है। जैसे साम्यवादी देशों में पाठयचर्या को मार्क्सवादी एवं नवमार्क्सवादी, दोनों विचारधाराएँ प्रभावित करती हैं। परिणामस्वरुप पाठयचर्या इन दोनों विचारधारओं के बीच में उलझा रहता है। अतः इन देशों में इन विचारधाराओं को ध्यान में रखकर पाठयचर्या विश्लेषण की आवश्यकता है।

विद्यालयों में जो पाठयचर्या प्रचलन में होता है उस पर गुप्त पाठयचर्या (हिडेन करिकुलम) का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। ये गुप्त पाठयचर्या सांकेतिक हिंसा फैलाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है परिणामस्वरुप शिक्षण कार्य सुचारु रुप से नहीं होता था। इसको देखते हुए कई शोध कार्य विद्यालयों की कार्य प्रणाली के विश्लेषण के क्षेत्र में भी किए गए। पाठयचर्या या कक्षाकक्ष शोध में व्यापक परिदृश्य की पृष्ठभूमि पर सूक्ष्म एथनोग्राफी पाना कठिन है। इसलिए इस क्षेत्र में जो कुछ अच्छे कार्य हैं उनके प्रयोग उदाहरण के तौर पर अधिक मात्रा में किया जाता है। इस क्षेत्र में हुए कार्यो की जो एक लंबी शृखंला है, वो शोध की निर्भरता सामान्य तथ्यों पर प्रदर्शित करती है। इस परिस्थिति में यह विचार कि पूँजीवादी समाज में पाठयचर्या , जो पूँजीवादियों द्वारा चलाया गया एक

धोखा है, पीढ़ी दर पीढ़ी शासक या कुलीन वर्ग की श्रेष्ठता के मिथक को प्रसारित करता है। यह युक्ति 'शक्ति की असमानता' को 'संस्कृति की असमनाता' में परिवर्तित करने की है।

पाठयचर्या विश्लेषण संबंधी शोध, पाठयचर्या या पाठयचर्या –प्रस्ताव के तार्किक या आनुभिवक अध्ययन की बात करता है। फ्रासेर(1972) ने पाठयचर्या के उद्देशय संबंधी मूलभूत समस्याओं की जांच करने के लिए अनेक तरीकों का सर्वेक्षण किया। उसने यह पाया कि इस बात को जानने के लिए कि कोई पाठयचर्या विशेषज्ञों की राय में वैध है कि नहीं, आनुभविक शोध का सहारा लिया जाता है। इस प्रकार ऑस्ट्रेलियन सांइस प्रोजेक्ट के उद्देशयों की जाँच एक सर्वे के माध्यम से की गई थी। पाठयचर्या संबंधी योजनाओं के अध्ययन के स्थायी प्रकृति के कारण इस बात की शंका है की शोधकर्ता अपने विचारों एवं मूल्यों को प्रकाश में नहीं आने देना चाहते हैं। एण्डरसन(1980) ने यद्यपि शोध प्रविधियों के विश्लेषण पर बहुत ज़्यादा ध्यान नहीं दिया है लेकिन वो पाठयचर्या के लिखित प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए आधार प्रदान करना चाहते हैं।

पाठयचर्या प्रारुप, अनुप्रयोग एवं क्रियात्मक शोध Curriculum Design, Application and Action Research

पाठयचर्या के अभ्यासकर्ता के दृष्टिकोण से पाठयचर्या प्रारुप का निर्माण या विकास एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र है। कभी-कभी इनमें विचारों जिनमें सुवर्णित युक्तियों का संचय होता है जो कि पाठयचर्या के अच्छे अभ्यास का परिणाम होती है। अक्सर, शोधकार्य पाठयचर्या के प्रारुप के निर्माण से संबद्ध होता है ताकि पाठयचर्या प्रारुप सिद्धांत और व्यवहार दोनों के स्तर पर संतुलित हो सके। अर्थात सैद्धांतिक रुप से बने पाठयचर्या के प्रारुप को व्यवहार में लाया जा सके। इस प्रकार के शोधकार्य के उदाहारण में, टेलर(1970) का शोधकार्य "हाउ टीचर्स प्लान दियर कोर्स" एवं वॉकर(1975) का "एकाउंट ऑफ द पार्टिकुलर ऑफ इनकारनेशन ऑफ डेलिबरेटिव थ्योरी" को शामिल किया जाता है।

यद्यपि वॉकर(1976) के इस कथन कि 'पाठयचर्या निर्माण और साधारण तरीके से शिक्षण कार्य करना' शोध के बहुत जटिल प्रकार नहीं है, से असहमत होने का कोई काराण नहीं है तथापि बृहद् स्तर के पाठयचर्या प्रस्ताव के लिए यह असाधारण बात नहीं है कि उनके आवश्यक तत्वों का आधार शोधकार्य के परिणाम हो। यद्यपि यह आवश्यक नहीं है कि निर्माण और विसरण मॉडल का शोध, स्वयं पाठयचर्या संबंधी शोध हो। अति साधारण शब्दों में पाठयचर्या सुधार आन्दोलन को अपने कार्य-कलापों के लिए इसे अर्द्धवैज्ञानिक शोध कहा जा सकता है।

पाठयचर्या प्रारुप के संदर्भ में यद्यपि नियोजित परिवर्तन का सिद्धांत काफी अस्पष्ट एवं अव्यवहारिक है तथापि पाठयचर्या में नियोजित परिवर्तन संबंधी शोध, दो उपलब्ध महत्वपूर्ण पैराडाइम्स, प्रणाली-निर्माण एवं यांत्रिक में से किसी एक में शामिल होने की प्रवृति रखता है। इसके अंतर्गत हम ऑस्ट्रेलियन करिकुलम में हुए नवाचार पर शिक्षण वातावरण के प्रभाव को सारणीबद्ध करने के लिए

तिसर एवं पॉवर द्वारा 1978 में किए गए शोधकार्य, जिनमें उनलोगों ने प्रतीपगमन विश्लेषण(रीग्रेशन एनालसिस) का प्रयोग किया था को शामिल करते हैं।

पाठयचर्या के अनुप्रयोग संबंधी शोध की प्रवृति, नवाचार के समाजशास्त्र और समाज मनोविज्ञान के आधार पर समूह बनाने की है। अनुप्रयोग संबंधी अध्ययन किसी विशेष विद्यालय की केस स्टडी है जिसमें एक नई प्रवृति मल्टिसाइट सेटिंग में एथनोग्राफिक शोध जिसमें अंतःसाइट सामान्यीकरण को भी ध्यान में रखा जाता है, देखने को मिल रही है(स्टेक और आइसेल, 1978)। इस स्थिति में ये शोध एथनोग्राफिक कम और क्षेत्रीय कार्य का ब्यूरोक्राइटाइजेशन ज़्यदा प्रतीत होता है। साथ-साथ ही ये अध्ययन सर्वे आधारित अध्ययन एवं पॉलिसी आधारित अध्ययन प्रतीत होते थे।

अभी क्रियात्मक अनुसंधान में भी शोधकर्ताओं की रुचि जागृत हुई है। सामान्य रुप से इस प्रकार के अध्ययन में सहभागी अवलोकन को शामिल किया जाता है जिसमें एक अवलोकनकर्ता स्वयं को अवलोकन में स्वाभाविक रुप से शामिल करता है ताकि अनुभवों के द्वारा सीख सके। स्पष्टतः यह किसी व्यक्ति विशेष के स्वयं के निष्पादन के प्रति उसके उत्साही, खोजी एवं चिंतनशील मस्तिष्क की मांग करता है। जब किसी विश्वविद्यालय का एक शोधकर्ता किसी शिक्षक के साथ मिलकर शोध कार्य करता है तो वह आंतरिक एवं वाह्य परस्पेक्टिव्स को शामिल कर भी सकता है और भी नहीं भी लेकिन जब एक शिक्षक शोध कार्य करता है, तो वह सामान्यतः पाठयचर्या संबंधी उन विचरधाराओं, जो कि जाँचे जाते हैं के प्रति कुछ विचारणीय विश्लेषण के संदर्भ में दिए गए बौद्धिक वर्णन के परे जाकर अध्ययन करता है अर्थात वह उन सारे विश्लेषणों को अपने अध्ययन में शामिल करता है, उन पर चिंतन करता है तथा उनके संदर्भ में अपने विचार भी रखता है। इन विचारधाराओं को विधि संबंधी परिकल्पनाओं के रुप में भी जाना जाता है। 'द फोर्ड टीचिंग प्रोजेक्ट' ने शोध के तरीकों को स्थापित करने के में बहुत भूमिका निभाई है। यद्यपि उसके द्वारा प्रतिपादित विचारधारा कि इसकी, सहभागियों में आत्म प्रावर्तन का संवर्द्धन करने की योग्यता, कम है, इस सत्य को कहने के लिए बाहरवालों को कम महत्व देना चाहिए, के साथ कुछ असहमति भी है।

पाठयचर्या मूल्यांकन Curriculum Evaluation

पाठयचर्या मूल्यांकन संबंधी कार्यक्रम ने अतीत में शैक्षिक शोध की प्रविधियों के संदर्भ में चल रहे विवाद में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ लेखकों ने मूल्यांकन को शोध से अलग करने का प्रयास किया था। उनका यह मानना था कि 'पाठयचर्या मूल्यांकन' कार्यक्रम, पाठयचर्या के प्रायोजकों, निर्माणकर्ताओं एवं उपयोग करनेवाले समूहों के प्रति एक कार्यात्मक उत्तरदायित्व के कारण अपनी खुद की शोध समस्या उत्पन्न करने में अक्षम है लेकिन उनका ये कहना की पाठयचर्या का मूल्यांकन सिर्फ 'अभ्यासकर्ता को ज्ञान' प्रदान करता है एवं 'विस्तृत सिद्धांत' को जन्म देता है, भी अच्छा नहीं है। पाठयचर्या मूल्यांकन और शैक्षिक शोध के मध्य संबंध को व्यक्त करनेवाला एक

और तथ्य, सामान्य प्रवृति, शोध पैराडाइम्स एवं विधि के अभ्यास के उदय पर बल देता है। पाठयचर्या मूल्यांकन तार्किक रुप से पाठयचर्या निर्माण की आवश्यकता है। स्टेनहाउस(1981) ने यह सुझाव दिया कि पाठयचर्या सुधार आंदोलन ने शैक्षिक प्रणाली में वित्तीय संसाधनों के पुनर्वितरण को प्रदर्शित किया है। अतः, पाठयचर्या के मूल्यांकन के लिए शोध पैरडाइम के निर्माण के प्रारंभिक प्रयास को कुछ वित्तीय संसाधनों को सुव्यवस्थित करने के शोध के प्रयास के रुप में पढ़ा जाना चाहिए। इस प्रकार मूल्यांकन की प्रविधि को सबसे पहले आवश्यक रुप से सामान्य नियमों के खोज से संबंधित शोध प्रविधि के समान समझना चाहिए। शिक्षा में पाठयचर्या निर्माण एक निश्चित उपचारात्मक कार्यक्रम हो गया था जिसकी जाँच ठीक उसी तरीके से की जाती है जिससे कृषि विज्ञान में फसल उत्पादन की। शोध प्रविधि की आवश्यकताओं से मिलने के लिए यह आवश्यक है की ये प्रभाव मापनीय हो और मनोमीतिय उपागम का प्रयोग करे ताकि वांछित ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति उत्पन्न किया जा सके। लेकिन शीघ्र ही साहित्य की कमी स्पष्ट हो गई और मूल्यांकन की तकनीकि, पाठयचर्या के प्रारुप के आगे-पीछे, ऊपर-नीचे घुमने लगी। इस प्रकार के मूल्यांकन संबंधी अध्ययनों को किसी विशेष शैक्षिक कार्यक्रम में क्या सीखा गया है और पाठयचर्या के एक क्षेत्र जिसकी विशेषता वर्णानात्मक कौशल है, की सूची के रुप में सूचीबद्ध किया जा सकता है।

क्रोनबैक(1975) ने सामान्य एवं पाठयचर्या मूल्यांकन संबंधी शैक्षिक शोधों की प्राथमिकताएँ उलटे क्रम में कर देने की बात की।

लेवी(1973) ने इस बात की ओर इशारा किया कि पाठयचर्या मूल्यांकन के वर्तमान अवस्था पर चर्चा करना ज़्यादा तार्किक होगा जो सैद्धांतिक मॉडलों तथा अनुप्रयुक्त शोध प्रविधियों में बहुत ज़्यादा अंतर से भरा पड़ा है। ये अंतर मुख्य रुप से साइकोमेट्रिक और इल्युमिनेटिव तथा भाववाद एवं प्रकृतिवाद के मध्य है। फ्रासेर (1982) के पाठयचर्या मूल्यांकन साहित्य संबंधी एनोटेटेड बिबलियोग्राफी पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि शोध विधि संबंधी यह भ्रम कितना व्यापक है। एक तरफ बेस्तैंन एवं साथी जैसे लेखकों ने अपने आप को मुख्य रुप से शोध की जटिल समस्याओं जैसे- वाह्य वैधता का भय और 'उपचारों के भ्रामक प्रभाव' को और 'परिस्थिति के प्रभाव' को अलग करने की आशा से जुड़े मानते हैं तो दूसरी ओर गुबा(1978) और स्मिथ(1978) जैसे लेखक खुद को अनुसंधान के प्राकृतिक तरीके से जोड़कर देखते हैं तथा मानते हैं कि जो पाठयचर्या प्रचलन में है उसका मूल्यांकन, सहभागी अवलोकन के निर्णयों, साहित्य एवं अर्द्धऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर होना चाहिए। इस प्रकार, मूल्यांकन अध्ययन, जब 'साधारण अनुभवों' को प्रसारित करने के बजाय 'क्रमबद्ध अनुभवों एवं विचारों' के प्रकाशन पर बल देता है, तब शोध कार्य के समीप हो जाता है। स्वध्याय और स्वमूल्यांकन, पाठयचर्या मूल्यांकन के लिए काफी प्रयोग में लाए जाते हैं। यह स्वमूल्यांकन या स्वध्याय, पाठयचर्या संबंधी क्रियात्मक शोध से संबद्ध हो सकते है। इनका संबंध शोधकर्ता के पाठयचर्या मूल्यांकन संबंधी अपने विचारों को प्रकाशित करने से भी होता है।

अभ्यासप्रश्न

10. मिलान करें

समूह क	समूह ख
(अ) स्टेनहाउस(1981)	(1) सामान्य एवं पाठयचर्या मूल्यांकन संबंधीशैक्षिक शोधों की प्राथमिकताएँ उलटे क्रममें कर देने की बात की।
(ब) क्रोनबैक(1975)	(2) पाठयचर्या सुधार आंदोलन ने शैक्षिक प्रणाली में वित्तीय संसाधनों के पुनर्वितरण को प्रदर्शित किया है।
(स) बेस्तैन	(3) अनुसंधान के प्राकृतिक तरीके सेसंबंधित।
(द) गुबा(1978)	(4) शोध की जटिल समस्याओंजैसे- व्वह्य वैधता का भय से संबंधित।

6.4 पठ्यक्रम संबंधी शोध की प्रवृति Trends of Curriculum Research

पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र में एक लंबी शृखंला होने के बावजूद जो सामान्य प्रवृति है, वो संख्यात्मक, एथनोग्राफिक और विवेचनात्मक अध्ययन की है। कुछ सीमा तक हरमेनेटिक और आइडियोग्राफिक अध्ययनों को भी स्थान दिया गया है। जैसा की वॉकर(1976) ने इंगित किया है की यह एक अंश है, क्योंकि पठ्यक्रम की जटिलता सत्य और रोचक परिकल्पनाओं, जिनको की जाँचा जा सके, को बहुत ज़यादा मात्रा में जन्म नहीं देती है।

पाठयचर्या की समस्याओं के अध्ययन के लिए जांच सह प्रमाण विधि भी अप्रत्यक्ष प्रयास के अंतर्गत आते हैं।

करिकुलम को केस स्टडी द्वारा समझने के प्रयास में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और प्रक्रियात्मक अध्ययन को शामिल किया जाता है। इसके तहत विद्यालयों की केस स्टडी की जाती है। प्राकृतिक शोध भी बहुत प्रयोग में लाया गया है क्योंकि इसकी वैधता, वास्तविक कार्यस्थल पर किए गए अवलोकन की मत्रा पर निर्भर करती है।

इस प्रकार आप यह समझ सकते हैं कि पाठयचर्या संबंधी शोध विविधताओं से भरा हुआ है। इसएं अनेक शोध प्रविधियों को स्थान दिया गया है।

6.5 सारांश

इस इकाई में पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य के क्षेत्र यानि कि स्कोप ऑफ करिकुलम रिसर्च का वर्णन किया गया है। इसके अंतर्गत पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य के क्षेत्र का अर्थ का वर्णन किया गया है तथा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विभिन्न पहलुओं की चर्चा की गई है। इस इकाई में पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य की प्रवृति का भी वर्णन किया गया है।

चूँकि पाठयचर्या निरंतर परिवर्तनशील है तथा शिक्षा प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण भी है। अतः, इस निरंतर परिवर्तनशील तथ्य को समझकर तथा परिवर्तन की माँग को समझकर शिक्षा–प्रणाली को समायोजित करने के लिए इस इकाई का ज्ञान अति उपयोगी है।

इस इकाई में अतीत में यूरोपीय एवं कुछ अन्य पश्चिमी देशों में हुए पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य को आधार बनाया गया है जिससे यह इकाई और भी उपयोगी हो जाती है।

6.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. 12वीं
2. फ्लरे
3. 1695ई0
4. संयुक्त राज्य अमेरिका
5. सही
6. गलत
7. सही
8. सही
9. गलत
10. (अ) 2
    (ब) 1
    (स) 4
    (द) 3

6.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Anderson, D.C. (1980).*Evaluating Curriculum proposals : A critical Guide.* Wiley, NewYork.

2. Bernstein, I. Bohrnstedt G. Brogalta E. , (1975). External validity and evaluation research : A codification of problems. Soc. Methods res. 4.
3. Cremin, L. A. , (1971). Curriculum making in the united states teach. Coll. Rec. 73, 20712.
4. Cronbach, L.J. (1975). Beyond the two Disciplines of Scientific Psychology. Am. Psychol. 30, 116-27.
5. Frasser, B.J. (1977). Evaluating the intrinsic worth of curricular goals : A discussion and anexample. J. Curric. Stud. 9 , 125-32.
6. Lewy, A. (1973). The practice of curriculum evaluation. Curric Theory network 11, 6-33.
7. Rug, H.O.(1927) *The foundations of curriculum making. Twenty-sixth yearbook of thenational society for the study of education*. Part II, Public school publishing.Bloomington, Illinois.
8. Schubert, W.H. (1980). *Curriculum Books : the first eighty years : context, commentary andbibliography.* University press of America, Lanham, Maryland.
9. Stenhouse, L.(1981). Case study in educational research and evaluation. Centre for appliedresearch in education (CARE), University of East Anglia, Norwich.
10. Taylor, P.H. (1970). *How Teachers Plan Their Courses : Studies In Curriculum Planning*, National foundation for educational research. (NFER), Slough.
11. Walker, D.F. (1976). What curriculum Research? J. Corric. Stud. 5, 58-72.

6.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठयचर्या संबंधी शोध के क्षेत्र से आप क्या समझते हैं?
2. पाठयचर्या संबंधी शोध के एक क्षेत्र के रुप में पाठयचर्या मूल्यांकन का वर्णन करें।
3. पाठयचर्या निर्माण की नीति संबंधी शोध से आपका क्या तात्पर्य है?
4. पाठयचर्या संबंधी शोध की प्रवृति का वर्णन करें।

इकाई 7 भारत में पाठयचर्या संबंधी शोध

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 भारत में पाठयचर्या संबंधी शोध
7.4 भारत में पाठयचर्या संबंधी हुए कुछ शोधकार्यों के उदाहरण
7.5 सारांश
7.6 अभ्यासप्रश्नों के उत्तर
7.7 संदर्भ ग्रंथ सूची
7.8 निबंधात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना

पाठयचर्या शिक्षा प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। यह शिक्षा की गुणवत्ता का निर्धारक तत्व है। शिक्षा की गुणवत्ता अंतिम रुप से पाठयचर्या के व्यक्तिगत और सामाजिक प्रासंगिकता तथा शिक्षण संस्थानों में इसके प्रभावपूर्ण अनुप्रयोग की सीमा पर निर्भर करता है। शिक्षा प्रणाली में पाठयचर्या का प्रभावपूर्ण अनुप्रयोग तभी संभव है जब वह पाठयचर्या शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता के अनुकूल हो। तात्पर्य यह है कि हमारी शिक्षा प्रणाली परिवर्तनशील है और यह समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुकूल परिवर्तित होती रहती है। पाठयचर्या को भी उन परिवर्तनों के अनुकूल परिवर्तित करना पड़ता है।

शिक्षा किसी राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए राजपथ का कार्य करती है। विकास के विभिन्न पक्षों, जैसे- सामाजिक, आर्थिक आदि में अनेक समानताएँ होती है लेकिन इनकी अपनी कुछ विशेषताएँ भी होती हैं। इनकी ये विशेषताएँ इनके पाठयचर्या में झलकनी चाहिए और पाठयचर्या इन विशेषताओं की प्राप्ति के लिए उपयुक्त होना चाहिए।प्रत्येक विद्यार्थी, विशेषतः शिक्षाशास्त्र के विद्यार्थी को पाठयचर्या एवं पाठयचर्या संबंधी शोध के संदर्भ में जानकारी होनी चाहिए। उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत इकाई की रचना की गई है। इस इकाई में भारत में हुए पाठयचर्या संबंधी कुछ शोध कार्यों पर प्रकाश डाला गया है ताकि अध्येता उनसे अवगत हो सके।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप-

1. विद्यार्थी भारत में हो रहे पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की संरचना को समझ सकेंगे

2. विद्यार्थी भारत में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हो रहे पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की प्रवृति का वर्णन कर सकेंगे
3. विद्यार्थी अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों मे हो रहे पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों का भारतीय परिदृश्य में वर्णन कर सकेंगे
4. विद्यार्थी पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में प्रयुक्त होनेवाले प्रमुख शोध उपकरणों एवं प्रमुख शोध विधियों से अवगत हो सकेंगे
5. विद्यार्थी पाठयचर्या के विभिन्न घटकों से संबंधित शोधकार्यों की प्रवृति से परिचित हो सकेंगे।

7.3 भारत में पाठयचर्या संबंधी शोध

भारत में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य एक नवीन घटना है। इसका लगभग 57 वर्षों का अपना एक संक्षिप्त इतिहास है। 57 वर्षों की इस अवधि में पाठयचर्या निर्माण के क्षेत्र में अनेक शोधकार्य हुए हैं। ये शोधकार्य बहुआयामी है और लगभग पाठयचर्या के प्रत्येक पहलु को समाहित किए हुए हैं। किसी क्षेत्र विशेष की ओर शोधकर्ताओं का ध्यान कम या ज़्यादा रहा हो, ऐसा हो सकता है लेकिन कोई भी पहलू शोधकर्ताओं ने अछूता नहीं छोड़ा है। इस बहुआयामी शोधकार्य की प्रवृत्ति को समझने के लिए इसका विशद् अध्ययन अति आवश्यक है।अध्ययन के सुविधा की दृष्टि से हम भारत में अब तक हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों को मुख्य रुप से पाँच भागों में बाँट सकते हैं। ये पाँच भाग निम्नलिखित हैं जिसे हम पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की संरचना भी कह सकते हैं:

रेखाचित्र संख्या-1

1. शिक्षा के स्तर संबंधी शोध – प्री-स्कूल, प्राथमिक कक्षाएँ, माध्यमिक कक्षाएँ, उच्चतर माध्यमिक कक्षाएँ, उच्च शिक्षा, समग्र तथा सामान्य;
2. अधिगम के क्षेत्र संबंधी शोध – भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कार्य अनुभव, व्यावसायिक/ तकनीकि शिक्षा; स्वास्थय एवं शारीरिक शिक्षा; जनसंख्या एव यौन शिक्षा, समग्र एवं सामान्य;
3. पाठयचर्या के घटक – उद्देश्य एवं पाठ्यवस्तु, अधिगम अनुभव, पाठ्यपुस्तक, मूल्यांकन, शैक्षणिक सुविधाएँ
4. शोध उपकरण संबंधी शोध
5. शोध प्रविधि संबंधी शोध।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य

शिक्षा के विभिन्न स्तर पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की संरचना निम्नलिखित है:

- प्री-स्कूल(विद्यालय पूर्व)
- प्राथमिक स्तर
- माध्यमिक स्तर
- उच्चतर माध्यमिक स्तर
- उच्च शिक्षा
- समग्र
- सामान्य

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों का यदि अध्ययन किया जाय तो यह देखने को मिलता है की पाठ्ययक्रम संबंधी शोधकार्यों में, प्री-स्कूल स्तर पर हुए शोधकार्यों का स्थान नगण्य है। इस तथ्य को जानने के बावजूद भी कि किसी व्यक्ति के विकास के लिए यह एक अति महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील अवस्था है, यह सबसे उपेक्षित रहा है। इस पर और ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्राथमिक स्तर पर सार्वाधिक शोधकार्य हुए हैं। सन् 1998 तक इन कार्यो का प्रतिशत 35% था। और इस क्षेत्र में निरंतर प्रगति होती गयी है। इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक शिक्षा पर शोधकर्ताओं के द्वारा उपयुक्त ध्यान दिया गया है। इसमें भी निम्न प्राथमिक शिक्षा पर ज़्यदा महत्व दिया गया है।

माध्यमिक शिक्षा की ओर शोधकर्ताओं का रुझान शुरु से हो रहा है। पाठयचर्या संबंधी हुए समस्त शोधकार्यों में इनका योगदान लगभग 35.8% है। इससे से यह स्पष्ट होता है कि इस स्तर पर पाठयचर्या निर्माण को ज़्यादा महत्व दिया गया है। हाँलाकि इसमें उतार-चढ़ाव होते रहे हैं फिर भी शोधकर्ताओं का पर्याप्त ध्यान इस स्तर की ओर रहा है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की संख्या घती-बढ़ती रही है। सन् 1978-83 की अवधि में जो संख्या 3.7 % थी वो बढ़कर सन् 1983-88 में 14.1 % हो गई थी। सन् 1988-92 की अवधि में यह क्षेत्र अत्यंत ही उपेक्षित रहा है। इससे तात्पर्य यह है कि इस स्तर पर शोधकर्ताओं का रुझान परिवर्तित होते रहा है। लेकिन अंतिम रुप से इस स्तर को भी शोधकर्ताओं द्वारा समुचित सम्मान नहीं दिया गया क्योंकि बाद में इस क्षेत्र में और पतन हुआ।

विद्यालय स्तर के समग्र पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य को भी समुचित स्थान दिया गया है। सन् 1967-72 में 10%, सन् 1972-78 में 15.1%, सन् 1978-83 में 9.2%, सन् 1983-88 में 5.0% शोधकार्य इस क्षेत्र में हुए हैं। हाँलाकि इसमें भी उतार-चाढ़ाव होते रहे हैं लेकिन फिर भी शोधकर्ताओं का रुझान इस ओर रहा है । ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि विद्यालय स्तर का समग्र पाठयचर्या , पाठयचर्या की समस्याओं को व्यापक परिदृश्य में देखता है ।

उच्च शिक्षा के स्तर पर शोधकर्ताओं का रुझान हाँलाकि पहले तो नहीं था या बहुत कम था लेकिन धीरे-धीरे यह बढ़ता गया । सन् 1967-72 में 2.8%, सन् 1972-78 में 10.1%, सन् 1978-83 में 14.8% तथा सन् 1983-88 में यह 16.6% था। सन् 1988-92 की अवधि में इस क्षेत्र में शोधकार्यों की संख्या 30% थी। इससे यह स्पष्ट होता है कि शोधकर्ताओं ने बाद में उच्च शिक्षा के स्तर पर पाठयचर्या निर्माण संबंधी शोधकार्य को स्थान दिया । वर्तमान परिदृश्य में देखा जाए तो प्री-स्कूल स्तर की ओर आज बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की ओर शोधकर्ताओं का रुझान अभी भी बना हुआ है। समस्त शोधकार्य का लगभग 50% इस क्षेत्र में हो रहे हैं। उच्च शिक्षा को भी महत्व दिया जा रहा है तथा आनेवाले समय में पाठयचर्या निर्माण के महत्वपूर्ण तत्व की सूची में इसका नाम भी शामिल हो जाएगा। सामान्य पाठयचर्या संबंधी शोध की भी कुछ ऐसी ही स्थिति है।

अभ्यासप्रश्न

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की संख्या का प्रतिशत सन् 1983-88 में .... था।
2. उच्च शिक्षा के स्तर पर पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की संख्या का प्रतिशत सन् 1967-72 में .... था ।
3. 1967-72 में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य का .... प्रतिशत विद्यालय स्तर के समग्र पाठयचर्या के क्षेत्र में हुआ था।
4. शिक्षा के .... स्तर पर पाठयचर्या संबंधी सर्वाधिक शोधकार्य हुए हैं।

5. पाठयचर्या संबंधी हुए समस्त शोधकार्यों में माध्यमिक स्तर पर .... प्रतिशत शोधकार्य हुए हैं।

अधिगम के क्षेत्र संबंधी शोधकार्य

अधिगम के विभिन्न क्षेत्र

- भाषा
- विज्ञान
- गणित
- सामाजिक विज्ञान
- जनसंख्या एवं यौन शिक्षा
- स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा
- कार्य अनुभव, व्यावसायिक, तकनीकि एवं कृषि शिक्षा
- मूल्य शिक्षा
- अधिगम के समस्त क्षेत्र पर समावेशी

- **भाषा-** शोधकर्ताओं का रुझान इस ओर प्रारंभ में तो बहुत अधिक था लेकिन बाद के वर्षो मे इस तरफ से शोधकर्ताओं का रुझान घटता गया। इस क्षेत्र में हुए शोधकार्यों पर दृष्टिपात करने से एक और बात स्पष्ट होती है कि इनमें से ज़्यादातर शोधकार्य शब्दकोष या भाषा विज्ञान संबंधी शोधकार्य थे। पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य तो बहुत कम ही थे।
- **विज्ञान-** इस क्षेत्र में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की संख्या घटती-बढ़ती रही है। सन् 1967-72 की अवधि में जो संख्या 5.7% थी वो बढ़कर सन् 1978-83 में 23.9% हो गई लेकिन सन् 1988-92 की अवधि में यह घटकर 13.04 % हो गया था। चूँकि समय के साथ विज्ञान का महत्व जीवन के हर क्षेत्र में बढ़ता जा रहा है, अतः इस क्षेत्र में शोधकार्यो की संखया बढ़नी चाहिए। इस क्षेत्र में पर्यावरण विज्ञान के एक नए क्षेत्र को बल मिला है, जो उत्साहजनक है।
- **गणित-** इस क्षेत्र की ओर शोधकर्ताओं के रुझान में विज्ञान की ही भाँति मिली-जुली प्रवृति रही है।
- **सामाजिक विज्ञान-** इस क्षेत्र को शोधकर्ताओं का प्रारंभ से ही कम रुझान मिला है और यही प्रवृति बनी रही है।

- **जनसंख्या और यौन शिक्षा-** जनसंख्या एवं यौन शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभिक वर्षों में तो शोधकर्ताओं का ध्यान नहीं था परंतु बाद के वर्षों में इस ओर इनका ध्यान खींचा। चूँकि भारतीय विद्यालयों के पाठयचर्या में यह एक नई प्रविष्टि थी इसलिए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में इसे सम्मानजनक स्थान मिलना चाहिए,लेकिन ऐसा है नहीं।
- **स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा-** इस क्षेत्र में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य को बहुत ज़्यादा महत्व नहीं दिया गया है।अतीत में हुए 370 शोधकार्यों में सिर्फ 18 शोधकार्य इस क्षेत्र से संबंधित थे। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा के संदर्भ में शोधकार्य हासिए पर स्थित है। इस क्षेत्र की ओर और अधिक ध्यान की आवश्यकता है और इसके लिए इस विषय़ से संबंधित शिक्षकों को शुरुआत करनी होगी।
- **कार्य-अनुभव, व्यावसायिक, तकनीकी एवं कृषि शिक्षा** के क्षेत्र में पठ्यक्रम संबंधी शोधकार्यों की संख्या लगभग स्थिर रही है। कृषि शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा की ओर शोधकर्ताओं का ज़्यादा रुझान रहा है। कार्य-अनुभव पाठयचर्या में बिल्कुल सीमा रेखा पर स्थित है इसलिए शोधकर्ताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित नही हुआ है। तकनीकी शिक्षा पर पहले से बहुत ज़्यादा ध्यान नहीं दिया गया था लेकिन अब इस ओर ध्यान दिया जा रहा है।
- **मूल्य शिक्षा** के क्षेत्र में बहुत बाद में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य प्रारंभ हुए लेकिन शीघ्र ही इसने शोधकर्ताओं की प्राथमिकताओं की सूची में अपना स्थान बना लिया।
- **अधिगम के समस्त क्षेत्र पर समावेशी** रुप से पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की ओर भी शोधकर्ताओं का रुझान था। लेकिन उसमें उतार-चढ़व होता रहा है । इस क्षेत्र में शोधकार्य होना भी अति महत्वपूर्ण है।

पाठयचर्या के घटक संबंधी शोध कार्य

पाठयचर्या के विभिन्न घटक

- उद्देश्य एवं पाठ्यवस्तु
- अधिगम अनुभव
- पाठ्यपुस्तक
- मूल्यांकन
- शैक्षणिक सुविधाएँ

पाठयचर्या के घटक संबंधी शोधकार्यों में प्रारंभ के कुछ वर्षों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान शोधकर्ताओं द्वारा अधिगम अनुभव संबंधी शोधकार्यों को दिया गया है। सन् 1967 से लेकर सन् 1988 तक इस क्षेत्र में हुए कुल शोधकार्यों की संख्या 102 थी लेकिन इसके बाद इस क्षेत्र में

शोधकर्ताओं का रुझान गिरता गया। सन् 1988 से सन् 1992 तक की अवधि में सिर्फ एक शोध कार्य इस क्षेत्र में हुआ। शोधकर्ताओं को इस क्षेत्र की ओर ध्यान देना आवश्यक है।

सभी घटकों पर सम्मिलित रुप से कार्य करने की प्रति भी शोधकर्ताओं का रुझान रहा है। सन् 1967-1988 की अवधि तक लगभग इस क्षेत्र में 80 शोधकार्य हुए थे। यह उत्साहजनक प्रवृति थी और यह प्रवृति बराबर बनी रही।

उद्देश्य और सिलेबस के क्षेत्र में शोधकार्यों की संख्या में वृद्धि और ह्रास की प्रवृति दृष्टिगोचर हुई है। प्रारंभ के वर्षों में इस क्षेत्र की ओर शोधकर्ताओं का रुझान बहुत ज़्यादा था। सन् 1967 से सन् 1978 तक की अवधि में इस क्षेत्र कुल 45 कार्य हुए थे। लेकिन इसके बाद इस क्षेत्र में निरंतर ह्रास होता गया है। सन् 1978-83 की अवधि में इस क्षेत्र में कुल 17 शोधकार्य, सन् 1983-88 की अवधि में 14 तथा 1988-92 की अवधि में 2 शोधकार्य इस क्षेत्र में हुए थे। इस प्रकार पाठयचर्या का एक महत्वपूर्ण घटक लगातार उपेक्षित होता गया है। एक प्रभावी पाठयचर्या बनाने के लिए शोधकर्ताओं का इस ओर रुझान होना आवश्यक है।

पाठयचर्या का एक महत्वपूर्ण घटक मूल्यांकन भी है। इस क्षेत्र की ओर भी शोधकर्ताओं की रुचि में उतार-चढ़ाव होता रहा है। सन् 1967-72 की अवधि में इस क्षेत्र में हुए शोधकार्यों की संख्या जहाँ 17 थी वो कालांतर में घटते-घटते 1988-92 की अवधि में 6 हो गई थी। इस क्षेत्र में हो रहे शोधकार्यों की संख्या में निरंतर गिरावट ही आई है। यह स्थिति एक चेतावनी है क्योंकि मूल्यांकन प्रक्रिया के बिना कोई पाठयचर्या प्रभावी हो हीं नहीं सकता है।

पाठ्यपुस्तकों के प्रति शोधकर्ताओं का रुझान भी निरंतर ह्रास की प्रवृति प्रद्रशित कर रहा है। विभिन्न अवधि में पाठ्यपुस्तकों के संबंध में हुए शोधकार्यों के प्रतिशत को यदि देखा जाए तो सन् 1967-78 में यह 12.8 % था जो घटकर सन् 1988-92 में 4.35% रह गया था। आगे भी इस प्रवृति में ह्रास दृष्टिगोचर हुआ है। लेकिन इस प्रवृति में वृद्धि के आसार दिख रहे है। पाठयचर्या संबंधी शोध का यह क्षेत्र शोधकर्ताओं को अपनी ओर भविष्य में आकर्षित करेगा।
शिक्षक अनुक्रिया पाठयचर्या का एक नया घटक है जिसकी ओर अभी शोधकर्ता आकर्षित हो रहे हैं। इसके अलावा अनुदेशनात्मक प्रारुप एवं मॉड्युल भी पाठयचर्या का एक घटक है जो शोधकर्ताओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है।

अभ्यासप्रश्न

6. पाठयचर्या के सभी घटकों पर सम्मिलित रुप से सन् 1967-1988 की अवधि तक कितने शोधकार्य हुए थे?
7. उद्देश्य और सिलेबस के क्षेत्र में शोधकार्यों की संख्या में कैसी प्रवृति दृष्टिगोचर हुई है?

8. अतीत में हुए 370 शोधकार्यों में सिर्फ स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा से कितने शोधकार्य इस क्षेत्र से संबंधित थे?
9. भाषा के क्षेत्र में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों के संदर्भ में शोधकर्ताओं की प्रवृति कैसी रही है?

शोध के उपकरण

पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में विविध प्रकार के शोध उपकरणों का उपयोग किया गया है। उनमें से मुख्य प्रश्नावली है जिसका प्रयोग 39% शोधकार्यों में किया गया है। साक्षत्कार और विषयवस्तु विश्लेषण का भी प्रयोग पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में किया गया है। इनका प्रयोग लगभग 26% शोधकार्यों में किया गया है। उपलब्धि परीक्षण का 21.7% शोधकार्यों में उपयोग किया गया है। चेकलिस्ट, ओपिनियनआयर , व्यक्तित्व परीक्षण और सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण का भी उपयोग इस क्षेत्र में किया गया है। पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य में सबसे कम प्रयुक्त किए गए शोध उपकरण, नैदानिक परीक्षण, अभिवृत्ति परीक्षण अनुसूची आदि है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पाठयचर्या संबंधी शोध कार्य में, शोधकर्ताओं द्वारा प्रशनावली, साक्षात्कार और विषयवस्तु विश्लेषण को समर्थन दिया गया है।

शोध–प्रविधि

शोध-प्रविधि में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में विभिन्न शोध प्रविधियों का प्रयोग शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है। इनमें सार्वाधिक प्रयुक्त विधि सर्वे विधि है। सन् 1967 से लेकर 1992 तक हुए पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों में, उन शोधकार्यों जिनमें कि सर्वे विधि का प्रयोग हुआ है का प्रतिशत 47.83% है।

प्रयोग विधि दूसरी सबसे ज़्यादा प्रयुक्त विधि है। इसका प्रतिशत उपर्युक्त अवधि में 25.14% रहा है। हाँलाकि इस विधि के प्रयोग के प्रति शोधकर्ताओं का रुझान घटता-बढ़ता रहा है फिर भी इस विधि के प्रयोग को शोधकर्ताओं के मध्य एक सम्मानजनक स्थिति प्राप्त है।

ऐतिहासिक विधि को शोधकर्ताओं द्वारा बहुत ज़्यादा महत्व नहीं दिया गया है। मूल्यांकन को भी शोधकर्ताओं द्वारा एक विधि के रुप में प्रयुक्त किया गया है। हाँलाकि इसका प्रयोग मिश्रित प्रवृति दिखाता है अर्थात इसके प्रयोग की मात्रा घटती-बढती रही है। लेकिन इस अस्थिर प्रवृति के बाद भी इसकी स्थिति सम्मानजनक है और सन् 1967 से सन् 1992 तक हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में लगभग 13.5% शोधकार्यों में इसका प्रयोग हुआ है।

कुछ शोधकार्यों में संयुक्त विधि अर्थात् एक या अधिक शोध विधियों का एक साथ प्रयोग किया गया है लेकिन इनकी संख्या बहुत कम है। अब तक हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में 6.75% शोधकार्य ऐसे हैं जिनमें संयुक्त विधि का प्रयोग किया गया है।

पाठयचर्या संबधी शोधकार्यों में सबसे कम प्रयुक्त होनेवाली शोध विधि अवलोकन विधि है। सिर्फ 0.5% पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में इस विधि का प्रयोग किया गया है। अवलोकन विधि शोध के लिए एक शक्तिशाली है और इसका प्रयोग होना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं है।

अभ्यासप्रश्न

10. सन् 1967 से लेकर 1992 तक हुए पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों में, उन शोधकार्यों जिनमें कि सर्वे विधि का प्रयोग हुआ है का प्रतिशत 47.83% है।(सही/गलत)
11. पाठयचर्या संबधी शोधकार्यों में सबसे ज़्यादा प्रयुक्त होनेवाली शोध विधि अवलोकन विधि है।(सही/गलत)
12. उपलब्धि परीक्षण का 21.7% पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में उपयोग किया गया है। (सही/गलत)
13. पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में प्रयुक्त शोध उपकरणों में मुख्य, प्रश्नावली है। (सही/गलत)
14. ऐतिहासिक विधि को शोधकर्ताओं द्वारा बहुत ज़्यादा महत्व दिया गया है। (सही/गलत)

7.4 भारत में पाठयचर्या संबंधी हुए कुछ शोधकार्यों के उदाहरण

भारत में हुए पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों में से दो शोधकार्य का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है:

अरुन कुमार, पी., ए स्टडी ऑफ द एफेक्ट ऑफ रिऑर्गनाइजिंग द प्रेस्क्राइब्ड करिकुलम फ्रेमवर्क ऑन द कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग एण्ड कंट्रोलिंग ऑफ वैरिएबल्स ऑन ग्रेड नाइन्थ स्टुडेन्टस, पीएच0 डी0, ईडीयु0, एमएसयु0 1985

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे:

1. कक्षा 9 के विद्यार्थियों के रिजनिंग के स्तर का कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग और चरों के नियंत्रण के संदर्भ में मूल्यांकन करना
2. विद्यार्थियों में उपलब्ध रिजनिंग स्तर के अनुकूल बनाने के लिए पाठयचर्या के रसायन शास्त्र विषय के भाग का पुनर्संगठन करने की दृष्टि से मूल्यांकन करना
3. कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग और चरों के नियंत्रण के संदर्भ में पाठयचर्या की संरचना के पुनर्संगठन के प्रभाव कावर्तमान पाठयचर्या संरचना की तुलना में, अध्ययन करना
4. उपयुक्त रिजनिंग प्रारुप पर प्रीएसेसमेंट के प्रभाव का अध्ययन करना
5. प्री मूल्यांकन और ट्रीटमेंट के मध्य अंतर्क्रिया का अध्ययन करना।

समस्या की जाँच सोलोमन फोर ग्रुप डिजाइन जहाँ बड़ोदा शहर के एक अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के नवीं कक्षा के चार समूह लिए गए जिनमें विद्यार्थियों के बँटवारे के लिए कोई निश्चित निकष(क्राइटेरिया) नहीं था। प्रतिदर्श की कुल संख्या 204 थी जिसमें 50, 52, 52 तथा 50 के 4 समूह थे। ये चारों समूह आयु एवं बुद्धि के स्तर पर समान थे। बुद्धि परीक्षण के लिए 'रावेन का स्टैण्डर्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिक्सेस' का प्रयोग किया गया था । 'ऑब्जर्वेशन ऑफ कॉगनेटिव प्रॉसेस इन सांइस इंसट्रक्शन सिस्टम' नाम के एक ऑब्जर्वेशन शेड्युल का भी प्रयोग शोधकर्ता द्वारा अनुदेशनात्मक प्रक्रिया का अध्ययन के लिए किया गया। विद्यार्थियों के रिजनिंग प्रारुप का अध्ययन करने के लिए, पियाजे के कार्य पर आधारित नैदानिक साक्षात्कार का भी प्रयोग भी किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए गुणात्मक तकनीकि एवं 'टी-परीक्षण' का प्रयोग किया गया।

इस अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित है:

1. प्रस्तावित पाठयचर्या संरचना के पुनर्मूल्यांकन एवं अनुदेशन के एक गतिशील मॉडल के द्वारा उसके क्रियान्वयन ने कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग एवं चरों के नियंत्रण को उन विद्यार्थियों की तुलना में जो प्रस्तावित पाठयचर्या पर आधारित सामान्य कक्षाकक्ष शिक्षण पद्धति से होकर गुजर रहे थे, सकारात्म्क रुप से प्रभावित किया है।
2. विद्यार्थियों के रिजनिंग प्रारुप के पूर्वमूल्यांकन(प्री एसेसमेंट) एवं ट्रीटमेंट के बीच सार्थक अंतर्क्रिया है।
3. रिजनिंग प्रारुप पर इतिहास एवं परिपक्वता का कोई असर नहीं पड़ता है।
   उपर्युक्त निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के रिजनिंग पैटर्न में वृद्धि के लिए वर्तमान विज्ञान विषय के पाठयचर्या को कॉम्बिनेटोरियल रिजनिंग और चरों के नियंत्रण के संदर्भ में पुनर्व्यवस्थित किया जा सकता है।

कुमार, के0 टिचिंग ऑफ पॉपुलेशन एजुकेशन, पीएच0 डी0, साइको., आगरा वि0वि0, 1984.

इस शोधकार्य की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित थी:

1. उच्च, मध्य एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रयोग एवं नियंत्रित समूह के प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. ग्रामीण, उपनगरीय एवं नगरीय क्षेत्र के नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक समूह के प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च, औसत एवं निम्न शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले माता-पिता से संबंधित प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

4. उच्च, औसत एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पश्च परीक्षण के प्राप्तांक के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. ग्रामीण, उपनगरीय एवं नगरीय क्षेत्र के नियंत्रित एवं प्रयोगात्मक समूह के प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।
6. उच्च, औसत एवं निम्न शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले माता-पिता से संबंधित प्रयोज्यों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अंतर नहीं है।

प्रतिदर्श के रुप में शोधकर्ता ने सन् 1982-83 के नवीं एवं दसवीं कक्षा के 360 विद्यार्थियों का चयन किया गया था जो 13-17 वर्ष की आयु के थे।अध्ययन में प्री-टेस्ट पोस्ट टेस्ट एक्सपेरीमेंटल कंट्रोल ग्रुप डिजाइन का प्रयोग किया गया है।प्रयोगात्मक समूह को सामान्य शिक्षा के साथ-साथ जनसंख्या शिक्षा भी दी गई थी। परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति को एम0 ए0 हरकिन तथा यशवीर सिंह द्वारा विकसित “परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी” के द्वारा मापा गया।आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए ‘टी-परीक्षण’ एवं सहसंबंध तकनीक का प्रयोग किया गया था।
अध्ययन के परिणाम निम्नलिखित थे:

1. सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति के कुछ पक्ष जैसे- निवास-स्थान एवं माता-पिता के शैक्षिक स्तर ने कंट्रोल ग्रुप के विद्यार्थियों के परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति मापनी पर पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अंतर दिखाए हैं।
2. जनसंख्या शिक्षा के शिक्षण का, परिवार नियोजन के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव है।

7.5 सारांश

प्रस्तुत इकाई में भारत में हो रहे पाठयचर्या संबंधी विभिन्न शोधकार्यों की प्रवृत्ति का वर्णन किया गया है। पाठयचर्या संबंधी जितने भी शोध कार्य हो चुके हैं या हो रहे है उनको मुख्य रुप से पाँच भागों में बाँटकर इस इकाई में प्रस्तुत किया गया । ये पाँच भाग क्रमशः शिक्षा के विभिन्न स्तर, अधिगम के विभिन्न क्षेत्र, पाठयचर्या के विभिन्न घटक, पाठयचर्या संबंधी शोध में प्रयुक्त उपकरण एवं पाठयचर्या संबंधी शोध में प्रयुक्त शोध विधि है। शोधकार्यों की प्रवृत्ति को और अधिक स्पष्टता के साथ विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए इन पाँच भागों को विभिन्न उपविभागों में बाँटा गया है। अंत में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य के दो उदाहरण भी विद्यार्थियों के लिए दिए गए हैं। इस प्रकार, इस इकाई में पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की स्पष्ट व्याख्या करने के का प्रयास लेखक द्वारा किया गया है। यह इकाई विद्यार्थियों के लिए अति उपयोगी है।

7.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. 14.1 %
2. 2.8 %
3. 10.00 %
4. प्राथमिक
5. 35.8 %
6. 80
7. वृद्धि और ह्रास
8. 18
9. मिली-जुली
10. सही
11. गलत
12. सही
13. सही
14. गलत

7.7 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Buch, M..B., (1983-1988), **Fourth survey of research in education**, Volume I,New Delhi: (NCERT)
2. Buch M..B.,(1988-1992), **Fifth survey ofresearch in education,** Volume I, New Delhi:(NCERT)

7.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. भारत में हो रहे पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य की प्रवृत्ति की संरचना का एक रेखाचित्रीय प्रदर्शन करें।
2. भारत में अधिगम के विभिन्न क्षेत्रों में हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की प्रवृत्ति का वर्णन करें।
3. शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर हुए पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों की प्रवृत्ति का वर्णन करें।
4. भारतीय परिदृश्य में, पाठयचर्या संबंधी शोधकार्यों में प्रयुक्त शोध के उपकरणों एवं शोध विधियों की प्रवृत्ति का संक्षिप्त वर्णन करें।
5. पाठयचर्या के विभिन्न घटक को लेकर अब तक जो भी पाठयचर्या संबंधी शोधकार्य हुए हैं, उनकी प्रवृत्ति का वर्णन करें।

इकाई 8 : पाठयचर्या विकास से सम्बंधित विभिन्न आयोग/समितियों के सुझाव

8.1 प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 पाठयचर्या संरचना: एक संक्षिप्त परिचय
8.4 आजादीपूर्व आयोग /समितियों द्वारा पाठयचर्या पर सुझाव
8.5 स्वतंत्रता के बाद के आयोग/समितियों द्वारा पाठयचर्या पर सुझाव
8.6 सारांश
8.7 शब्दावली
8.8 अभ्यासप्रश्नों के उत्तर
8.9 संदर्भ ग्रंथ सूची
8.10 निबंधात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

पूर्व के इकाईयों में आप ने जाना कि पाठयचर्या से सम्बन्धित शोध कार्य किन किन क्षेत्र में किया जाता है एवं भारत में विगत दिनों में पाठयचर्या पर किस प्रकार के शोध कार्य हुए हैं।पाठयचर्या एक ऐसा विषय है जिस पर शोधकार्य करने से पहले शोधकर्ता को यह पता होना चाहिए कि यह शोध किस दिशा में होना चाहिए। शोध के लिए कौन कौन से दिशा-निर्देशों का अनुपालन आवश्यक हैं। चुँकि पाठयचर्या समाज का एक सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है, इसलिए यह जरूरी है कि पाठयचर्या में किसी भी प्रकार का परिवर्तन या परिमार्जन उस समाज के लिए हितकारी हो। यह तभी सम्भव है जब शोधकर्ता को यह पता रहे कि पाठयचर्या समाज के कौन कौन से पहलु से सम्बन्धित है।

समय समय पर बनायें गये आयोग या समितियाँ इन्ही बातों को ध्यान में रखकर पाठयचर्या पर अपना सुझाव देते रहे हैं, जिससे शोधकर्ताओं को एक दिशा-निर्देश मिलता रहे और पाठयचर्या सम्बन्धित शोध कार्य और उन्नत तरीके से किया जा सके।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत इकाई में आप लोग भारत में अलग-अलग समय पर स्थापित विभिन्न आयोग या समितियों की पाठयचर्या सम्बन्धित सिफारिशों को जानेंगें।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

1. विभिन्न आयोग व उनके समयकाल को चिन्हित कर सकेंगे।
2. विभिन्न आयोग की पाठयचर्या सम्बन्धित सुझावों को सूचीबद्ध कर सकेंगे ।
3. विभिन्न आयोग की पाठयचर्या सम्बन्धित सुझावों की संक्षिप्तीकरण कर सकेंगे।
4. विभिन्न आयोग की पाठयचर्या सम्बन्धित सुझावों की समालोचना कर सकेंगे।
5. विभिन्न आयोग की पाठयचर्या सम्बन्धित सुझावों की तुलना कर सकेंगे।

8.3 पाठयचर्या संरचना: एक संक्षिप्त परिचय

पाठयचर्या को सामान्यतः विषय रूपरेखा के रूप में ही अधिक जाना जाता है। परन्तु यह अधिकतर लोग नहीं जानते कि पाठयचर्या सिर्फ विषय वस्तु या उसकी रूप रेखा नहीं है। आप जब किसी कक्षा में प्रवेश लेते हैं तो पूरे सत्र में सिर्फ विषय को नहीं पढ़ते, बल्कि उसके साथ बहुत सारे कार्य भी करते हैं, जैसे- पाठ्य सहगामी क्रिया आदि। वहीं उस विषय को पढ़ाने के लिए आपके शिक्षक शिक्षण कार्य करते हैं और बाद में विषय पर आधारित मूल्यांकन भी होता है। मूल्यांकन में यह देखते है कि विषय पढ़के जिन लक्ष्यों को प्राप्त करना था, वह आपने प्राप्त किया या नहीं।

अर्थात, एक पाठयचर्या में विषय के साथ-साथ उसको पढ़ाने की विधि, उसको पढ़ाने का उद्देश्य, उसकी मूल्यांकन विधि एवं माध्यम भी महत्वपूर्ण होते हैं। इसलिए जब भी आप पाठयचर्या का उल्लेख करेंगे, तभी स्वतः ही उसके साथ यह सब कारक चले आते हैं। चित्र सं0 1 से आप को पाठयचर्या के विभिन्न अंगो का पता चल जाएगा।

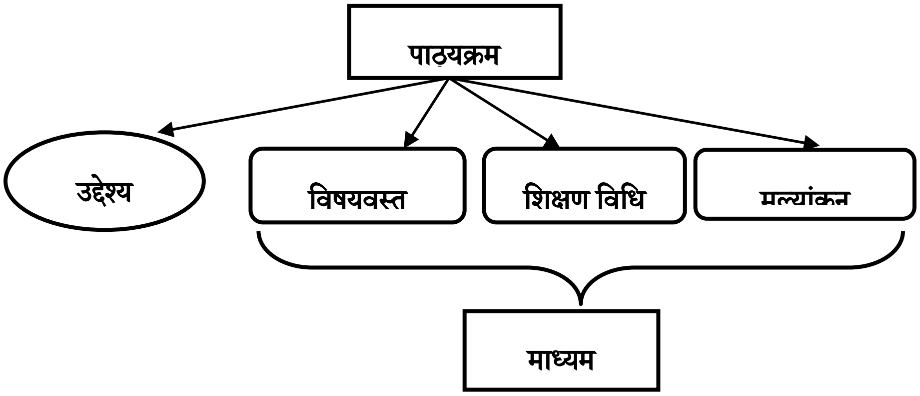

चित्र संख्या 1

पाठयचर्या के इन्ही अंगो को ध्यान में रखते हुए यह देखना जरूरी है कि विभिन्न आयोग एवं समितियों ने पाठयचर्या पर क्या क्या सुझाव दिये हैं। आप लोग पायेंगे की प्रत्येक आयोग या समितियों ने पाठयचर्या के सभी अंगो पर अपनी संस्तुतियाँ नहीं दी हैं। वरन् उनकी संस्तुतियां समयकाल पर आधारित थी। अर्थात स्वतंत्रता पूर्व समयकाल पर सुझाव विषय एवं मूल्यांकन केन्द्रीत थी। वहीं स्वंतत्रता उत्तर काल में सुझाव प्रायः पाठयचर्या के सभी अंगो पर दिया गया था। अगले कुछ अनुच्छेदों में आप लोग इन्ही आयोग एवं समितियों मे से कुछ महत्वपूर्ण आयोग एवं समितियों की संस्तुतियों को जानेंगे।

8.4 आजादीपूर्व आयोग /समितियों द्वारा पाठयचर्या परसुझाव

आजादी पूर्व शिक्षा से सम्बन्धित आयोग एवं समितियाँ मुख्य रूप से शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिए बनाए जाते थे। इसलिए यह आयोग या समितियाँ विषय स्तर, माध्यम एवं विस्तार पर ज्यादा ध्यान देते थे। पाठयचर्या के मूलभूत अंगो पर इनकी संस्तुतियाँ प्रायः नहीं मिलती हैं। अगले कुछ अनुच्छेदों में आपलोग इस समयकाल के कुछ महत्वपूर्ण आयोग एवं समितियों के संस्तुतियों को जानेंगे।इस समयकाल के कुछ महत्वपूर्ण आयोग एवं समितियाँ निम्न हैं -

1. वुड का घोषणापत्र
2. भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन) 1882
3. लार्ड कर्जन की प्राथमिक शिक्षा नीति में पाठयचर्या (1904)
4. 1905 से 1920 तक पाठयचर्या सुधार
5. वर्धा योजना 1937
6. प्रथम आचार्य नरेन्द्रदेव समिति (उत्तर प्रदेश)1939
7. सार्जेण्ट शिक्षा योजना (1944)

1. वुड का घोषणापत्र

उद्देश्य-वुड के घोषणापत्र में शिक्षा के उद्देश्यों को निम्न प्रकार क्रमबद्ध किया जा सकता है-

1. भारतीय जनता को आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से अंग्रेजी भाषा, साहित्य और विज्ञान आदी विषयों की शिक्षा प्रदान करना।
2. भारतीय जनता का भौतिक एवँ बौद्धिक विकास करना।
3. कम्पनि की आर्थिक प्रगति में सहायता करने के लिए समुचित परिस्थितियों का निर्माण करना।
4. सरकारी सेवाओं के लिए शिक्षित कर्मचारीयों को तैयार करना।

पाठयचर्या

वुड ने अपने सुझाव में कहा था की पाठयचर्या में बागंला, संस्कृत, अरबी, फारसी भाषा के साथ साथ अंग्रेजी भाषा व साहित्य का किया जाए। किंतु पाठयचर्या में पाश्चात्य साहित्य को ही प्रधानता देते हुए यह व्यवस्था की गई की छात्र उसके प्रति आकर्षित हों। थोड़ी बहुत धार्मिक शिक्षा की छुट ईसाई मिशनरी विद्यालयों को प्रदान की गई थी। बाइबिल का होने अनिवार्य कर दिया गया था।

शिक्षण विधि

धार्मिक शिक्षा के लिए उपदेश विधि की अनुमति दी गई थी। शेष विषयों के लिए मौखिक व लिखित विधियाँ एवँ विज्ञान आदी के लिए प्रयोगात्मक विधियों का समावेश किया गया था। उच्च शिक्षा के लिए व्याख्यान विधि उत्तम मानी गई थी।

हाईस्कुल तक की शिक्षा के लिए भारतीय प्रचलित भाषायें स्वीकृत थी। उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी को ही स्वीकार किया था। वुड के अनुसार भारतीय भाषाएँ इतनी सशक्त और समृद्ध नहीं थीं की उनमें विज्ञान एवँ पश्चिमी ज्ञान की शिक्षा दी जा सके।

2. भारतीय शिक्षा आयोग (हण्टर कमीशन) 1882

लॉर्ड रीपन ने भारत में 3 फरबरी, 1882 को एक समिति की नियुक्ति की, जिसमें 20 सदस्य और एक अध्यक्ष था। इसमें भारतीयों और ईसाई मिशनरीयों का प्रतिनिधित्व था। इसके अध्यक्ष वॉयसराय की कार्यकारिणी के सदस्य विलियम हण्टर थे।

प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र मे आयोग के सुझाव निम्नवत है -

उद्देश्य

1. शिक्षा द्वारा बालकों में स्वाबलम्बन और आत्मनिर्भरता उत्पन्न करना।
2. शिक्षा को जनसामान्य तक पहुँचाना।
3. शिक्षा को सामान्य जीवन के लिए उपयोगी बनाना।

पाठयचर्या

आयोग के अनुसार प्राथमिक शिक्षा के पाठयचर्या में स्थानीय भाषा, सामान्य विज्ञान, गणित, कृषि, प्राथमिक चिकित्सा, बही-खाता, भौतिक विज्ञान आदि विषयों को अनिवार्य होना चाहिए। इसके अलावा कताई-बुनाई, सिलाई आदि विषयों को व्यावसायिक विषय के रूप में पाठयचर्या में जोड़ने की संस्तुति की गई थी।

प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के रूप में परम्परागत प्रचलित स्थानीय भाषाओं को ज्यादा महत्व दिया गयाथा।

माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में आयोग का सुझाव-

उद्देश्य-आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये थे-

i. माध्यमिक शिक्षा जीवनोपयोगी होनी चाहिए।
ii. यह उच्च शिक्षा के लिए छात्रों को तैयार करें।

पाठयचर्या

आयोग के माध्यमिक शिक्षा के पाठयचर्या को दो भागों में बाँटा था। यह इस प्रकार है-

i. 'अ' वर्ग पाठयचर्या - इसका लक्ष्य शिक्षार्थियों को विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने योगय बनाना था।
ii. 'ब' वर्ग पाठयचर्या -इसका लक्ष्य विद्यार्थियों को भावी जीवन के लिए तैयार करना व स्वावलम्बी बनाना था। इसमें विज्ञान, कृषि आदि विषयों को सम्मिलित किया गया था।

प्रचलित अंग्रेजी को ही इस स्तर पर शिक्षा का माध्यम माना गया था।

उच्च्व शिक्षा के क्षेत्र में आयोग का सुझाव-

उद्देश्य-आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा के उद्देश्य निम्नवत् थे-

i. व्यक्ति की विशिष्ट योग्यताओं का विकास करना।
ii. व्यावसायिक विषयों में पारंगत बनाना।
iii. नैतिक एवं चारित्रिक विकास करना।

पाठयचर्या -उच्च शिक्षा के पाठयचर्या के विषय में आयोग ने कहा था कि-

i. छात्रों को अपनी रूचि एवं योग्यता के अनुसार विषय चयन की छूट होनी चाहिए।
ii. अधिक से अधिक विषयों को सम्मिलित कर पाठयचर्या को व्यापकरूप दिया जाना चाहिए।
iii. छात्रों को धर्म, मानवता और नैतिकता का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी का ही प्रयोग करने की संस्तुति आयोग ने की थी।

अभ्यास प्रश्न

---

1. भारतीय शिक्षा आयोग की स्थापना किसने की?
2. 1882 के आयोग ने माध्यमिक पाठयचर्या को कितने भागों में बाँटा ?
3. शिक्षा के माध्यम से कम्पनि की आर्थिक प्रगति कि बात किसने की थी ?
4. भारतीय शिक्षा आयोगके अध्यक्ष वॉयसराय की कार्यकारिणीके सदस्य ________ थे ।

लार्ड कर्जन की प्राथमिक शिक्षा नीति में पाठयचर्या (1904)

लार्ड कर्जन ने गुणात्मक विकास के तहत पाठयक्रम में सुधार की सिफारीश की थी। उनका विचार था कि प्राथमिक विद्यालयों का पाठयचर्या सरल न होकर वृहद बनाया जाये। शिक्षा आयोग ने पाठयचर्या को सरल बनाया था, जो उसे पसन्द नहीं था। उसने लिखने-पढ़ने और गणित लगाने के अतिरिक्त पाठयचर्या में कृषि को भी सम्मिलित किया। साथ ही साथ उसने बालोद्यान पद्धति और objective (वस्तुनिष्ठ) पद्धति को लागु करने की संस्तुति की।

कर्जन की शिक्षा-नीति सर्वांगीण विकास की प्रेरक थी। उसने माध्यमिक स्कूलों के पाठयचर्या में शारीरिक व्यायाम को स्थान दिया। वह जानते थे कि ग्रामीण एवं शहरी वातावरणों में अन्तर होता है, इसलिए पाठयचर्या निर्माण करते समय वातावरण, समय-स्थान, और आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाए। ग्रामीण क्षेत्र का पाठयचर्या शहर के पाठयचर्या से कुछ बातों में अवश्य भिन्न होना चाहिए।

कर्जन के यह विचार बहु प्रसंशनीय थे, परन्तु उन्हे लागू नहीं किया गया।

4. 1905 से 1920 तक पाठयचर्या सुधार

लॉर्ड कर्जन की शिक्षा नीति का प्राथमिक शिक्षा के विकास पर अच्छा प्रभाव पड़ा और 1905 से 1920 तक प्राथमिक शिक्षा में संख्यात्मक व गुणात्मक विकास हुए। इस दौरान प्रमुखशैक्षिक घतनाओंमें गोखले बिल (1911), कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (1917) एवं शिक्षा नीति (1915) मुख्य है। इन सभी का सुझाव पाठयचर्या के सन्दर्भ में इस प्रकार था-

1. लोअर प्राईमरी पाठयचर्या में चित्रकला, शारीरिक व्यायाम, प्रकृति अध्ययन एवं गांव के नक्शे को विषयों के रूप में प्रयोगात्मक ढंग से पढ़ाया जाये।
2. गाँवएवं शहरी पाठयचर्या में आवश्यकताओं के अनुसार अंतर होना चाहिए।
3. माध्यमिक शिक्षा में स्वास्थ्य शिक्षा व विज्ञान पढ़ाया जाये एवं अंग्रेजी को माध्यम बनाया जाए।
4. प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाए और गरीबों के लिए यह निःशुल्क हो।
5. उच्च शिक्षा एवं शोध कार्य के लिए अधिक सुविधाएँ प्रदान करना चाहिये।
6. स्नातक पाठयचर्या तीन वर्षीय होना चाहिए।
7. माध्यमिक पाठयचर्या विभिन्न प्रकार विभिन्नताओं से युक्त होना चाहिए तथा इसमें साहित्य, विज्ञान, गणित, इंजिनियरिंग, चिकित्सा, कृषि, वाणिज्य आदि की शिक्षा मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा में होना चाहिए।

इन सबके अलावा हर्टाग समिति (1919) के अनुसार मिडिल स्कूलों का पाठयचर्या बहुत ही संकुचित था, इसे उत्तीर्ण करने पर बालक जीविकोपार्जन में असमर्थ रहता था। यदि पाठयचर्या को

उपयोगी बना दिया जाता तो असफलता कम हो जाती। इसलिएसमिति ने सुझाव दिया कि मिडिल स्कूलों के पाठयचर्या में-

1. औद्योगिक तथा
2. व्यापारिक विषयों को स्थान दिया जाए।

समिति ने हाईस्कूल के पाठयचर्या में विविध प्रकार के विषयों को रखने की सलाह दी ताकि छात्र अपनी रूचि के अनुकूल विषयों को छांट सकें। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक अच्छा वातावरण बनेगा और देहातों में पुननिर्माण और पुनरोत्थान की सम्भावना बढ़ सकेगी।

अभ्यास प्रश्न

5. बालोद्यान पद्धति लागु करने की संस्तुति किसने की ?
6. लॉर्ड कर्जन के अनुसार पाठयचर्या कितने प्रकार के होने चाहिये ?
7. 1917 शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि इस वर्ष ----------------- का गठन हुआ था।
    i. शिक्षा नीति
    ii. हर्टाग समिति
    iii. कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग
    iv. गोखले बिल
8. हर्टाग समिति के अनुसार पाठ्याक्रम में किन किन विषयों को स्थान दिया जाना चाहिये ?

वर्धा योजना (1937)

इस समिति का निर्माण 1937 में गॉंधी जी के शैक्षिक विचारों को ‘नई तालीम’ की योजना बनाने में प्रयोग करने के लिये किया गया था। इसके अध्यक्ष तत्कालीन ‘जामिया मिलिया’ के प्राचार्य डॉ0 जाकिर हुसैन थे। पाठयचर्या के विभिन्न अंगों पर इस समिति के सुझाव इस प्रकार थे -

उद्देश्य:

i. भारत के लिए एक सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति का निर्माण करना जो भारत की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करें।
ii. बालक का सर्वांगीण विकास करना ताकि इनका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक विकास सम्भव पर हो सके।
iii. बालकों में अच्छी नागरिकता के गुणों का विकास करना जिससे उनमें प्रेम, सद्भाव, सहनशीतला, धैर्य, परोपकार, सत्यनिष्ठा तथा सदाचार आदि लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति गहरी निष्ठा हो सके।

iv. बालकों में सर्वोदय की भावना का विकास करना।
v. छात्रों का भारतीय मूल्यों और आदर्शों के अनुसार नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास करना।
vi. छात्रों को अनुशासित, स्वावलम्बी एवं परिश्रमी बनाना।
vii. छात्रों में भावनात्मक विकास के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा को महत्व देना ताकि छात्र आर्थिक रूप से आत्मनिभर बन सकें।

पाठयचर्या :

इस समिति के अनुसार पाठयचर्या 7 वर्ष का होना चाहिए। समिति ने सम्पूर्ण पाठयचर्या को दो भागो में विभाजित किया था, यथा-

1. बुनियादी शिल्प कार्य- इसके अन्तर्गत कृषि, काष्ठकला, कताई-बुनाई, चमड़े का कार्य, मत्स पालन, कुम्हार का कार्य, बागवानी, फल संरक्षण एवं स्थानीय हस्तकला आदी की शिक्षा दी जानी थी जिससे बालक भविष्य में आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त कर सके।।
2. शैक्षिक विषय- समिति के अनुसार छात्रों को निम्नलिखित विषयों का अध्ययन करना चाहिए: मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान, प्रकृति अध्ययन, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, शारीरिक स्वास्थ्य विज्ञान, खगोल विज्ञान, स्वास्थ्य और महान व्यक्तियों की जीवनियाँ , हिन्दी, गृह-विज्ञान, कला एवं शारीरिक शिक्षा।

शिक्षण विधियाँ :

समिति ने दो प्रकार के विधियों को विशेष महत्व दिया था, वह इस प्रकार थे-

i. क्रिया एवं अनुभव द्वारा सीखना - इस विधि में क्रिया प्रधान शिल्प कलाओं को प्रमुखता दी गई थी। इन सबके द्वारा छात्रों को मिलजुल कर सक्रिय रहने का पर्याप्त अवसर मिलने की सम्भावना रहती है।
ii. सह सम्बन्ध द्वारा सीखना- इस विधि के सहायता से किसी एक क्रिया में सीखा गया ज्ञान दूसरे कार्य में सहायक सिद्ध होता है। इसमें ज्ञान को उत्पादन से जोड़े जाने के कारण शिक्षण और उद्योगों में भी सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।

ऊपर वर्णित दोनों विधियों के अतिरिक्त सैद्धान्तिक विषयों का अध्ययन, निरीक्षण, वाचन, अभिव्यक्ति, लेखन, मौखिक वार्तालाप, आगमन-निगमन, विश्लेषण, अन्तर्दृष्टि और अनुकरण विधियों आदी के माध्यम से भी किये जाने का सुझाव दिया गया था।

प्रथम आचार्य नरेन्द्रदेव समिति (उत्तर प्रदेश)-1939:

1939 में आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के पुर्नगठन के लिए समिति नियुक्ति की गई। समिति की पाठयचर्या सम्बन्धित प्रमुख सिफारिशें इस प्रकार थी-

1. माध्यमिक शिक्षा का पाठयचर्या पूर्ण एवं स्वतंत्र हो।
2. माध्यमिक शिक्षा 6 वर्ष अवधी के लिए हो।
3. नये कॉलेजों के पहले दो वर्षो का पाठयचर्या प्राथमिक विद्यालयों के अन्तिम दो वर्षों जैसा हो। अंग्रेजी अनिवार्यरूप से पढ़ायी जाये।
4. माध्यमिक स्कूलों के पाठयचर्या में निम्नलिखित विषय रखे जायें-
    i. भाषा, साहित्य, सामाजिक विषय
    ii. प्राकृतिक विज्ञान व गणित
    iii. कला
    iv. वाणिज्य
    v. तकनीकि एवं व्यवसायिक शिक्षा
    vi. बालिकाओं के लिए गृह विज्ञान
5. शिक्षा का माध्यम हिन्दुस्तानी हों।
6. कॉलेजों में चरित्र-निर्माण, राष्ट्र-प्रेम, स्वालम्बन और समाज सेवा आदि के लिए अतिरिक्त कार्यक्रमों की व्यवस्था की जाए।

सार्जेण्ट शिक्षा योजना (1944)

यह रिपोर्ट युद्धोत्तर शिक्षा योजना (PostWareducationScheme) के नाम से भी जाना जाता है। इस योजना ने सम्पूर्ण भारतीय शिक्षा की व्यवस्था को 12 अध्यायों में प्रस्तुत किया था। पाठयचर्या से सम्बन्धित कुछ विशेष सुझाव इस प्रकार थे-

1. 3 से 6 वर्ष तक के पूर्व प्राथमिक बेसिक स्कूलों के बच्चों के लिए सामाजिक अनुभव एवं सद्व्यवहार की शिक्षा होनी चाहिए।
2. हाईस्कूल दो प्रकार के होने चाहिए-
    i. साहित्यिक हाईस्कूल एवं
    ii. व्यावसायिक हाईस्कूल

साहित्यिक हाईस्कूल में मातृभाषा, अंग्रेजी, इतिहास, प्राच्य-भाषाएँ, आधुनिक भाषाएँ, भूगोल, गणित, विज्ञान, स्वास्थ्य-रक्षा, कृषि, संगीत, कला, अर्थशास्त्र और नागरिकशास्त्र आदि विषय पढ़ाये जाएँ।व्यावसायिक हाईस्कूलों में व्यवहारिक विज्ञान (appliedscience), काष्ठ कला, धातु कला, अभियांत्रीकी, चित्रकला आदि औद्योगिक विषय एवं बुक कीपिंग, शार्ट-हैण्ड, टाईपिंग, एकाउंटेंसी, व्यापार-पद्धति जैसे व्यापारिक विषय पढ़ाये जायें।

अभ्यासप्रश्न

---

9. नरेंद्र देव समिति के अनुसार माध्यमिक शिक्षा कितने अवधि कि होनी चाहिये ?
10. किस योजना के अनुसार दो प्रकार के हाईस्कूल होना चाहिये ?

11. 'नई तालिम' किनके विचारों पर आधारित थी ?
12. डॉ ज़ाकिर हुसेन किस संस्था के अध्यक्ष थे ?
13. 'सर्वोदय की भावना का विकास' किस समिति का उद्देश्य था ?
14. वर्धा शिक्षा योजना के अनुसार शिक्षण की प्रमुख विधि कौन सी थी ?

8.5 स्वतंत्रता के बाद के आयोग/समितियों द्वारा पाठयचर्या पर सुझाव

1. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948)
2. माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53)
3. भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66)
4. भारतीय शिक्षा नीतियों में पाठयचर्या

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948):

14 नवम्बर, 1948 को सीधे उच्च शिक्षा में सुधार लाने के लिए भारत सरकार ने केन्द्रिय शिक्षा सलाहकार परिषद (CABE) तथा अंर्तविश्वविद्यालय शिक्षा परिषद की सलाह पर एक विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की नियुक्ति कीथी। इस आयोग के अध्यक्षता का भार प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ0 एस0 राधाकृष्णन को सौंपा गया था, इसलिए इसे राधाकृष्णन आयोग के नाम से भी जाना जाता हैं ।

उद्देश्य:आयोग ने उच्च शिक्षा के उद्देश्यों को निम्नवत सूचीबद्ध किया-

1. छात्रों में श्रेष्ठ मानवीय सभ्यता का विकास करना।
2. शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वास्थ्य व सामान्य व्यक्तियों का विकास करना।
3. वैयक्तिक विभिन्नताओं के सिद्धांत के आधार पर छात्रों के नैसर्गिक गुणों का पूर्ण विकास करना।
4. छात्रों में राजनीतिक नेतृत्व क्षमता, प्रशासनिक योग्यता, प्रौद्योगिकी में सहभागिता एवं समाज के अन्य सामाजिक क्षेत्रों में सहयोग भाव आदी गुणों का विकास।
5. छात्रों में उत्कृष्ट नागरिकता का विकास।
6. छात्रों में नैतिक एवं-चारित्रिक विकास करना।
7. भारत की गौरवशाली विरासत को संरक्षित रखने की क्षमता उत्पन्न करना।
8. छात्रों में आध्यात्मिक भावनायें जागृत करना।
9. छात्रों को राष्ट्र के विकास के लिए अनुशासित व समर्पित रहने की प्रेरणा देना।

पाठयचर्या :आयोग ने प्रचलित पाठयचर्या के सन्दर्भ में निम्नांकित सुझाव दिये थे-

1. विश्वविद्यालय के पाठयचर्या को तीन भागों में विभाजित किया जाये, यथा-

i. सामान्य शिक्षा जो प्रकृति, जीवन, न्याय और आध्यात्म से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करें।
ii. उदारवादी शिक्षा जो स्व-विवेक और स्थापित सामाजिक नियमों के अनुसार विभिन्न प्रकरणों पर स्वस्थ एवं रचनात्मक चिंतन करने की योग्यता प्रदान करें।
iii. व्यावसायिक शिक्षा जो एक सफल सामाजिक, व्यावहारिक एवं आर्थिक जीवन दे सके।

2. स्नातक पाठयचर्या कला एवं विज्ञान वर्ग के लिए क्रमशः तीन वर्ष का होना चाहिए।
   कला वर्ग में दो विषय समूह के प्रत्येक से कम से कम एक विषय का चयन जरूरी था। यह समुहइस प्रकार थे-
   - समुह 1. शास्त्रीय या आधुनिक भारतीय भाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच या जर्मन भाषा, गणित, फाईनआर्टस, इतिहास, दर्शन।
   - समुह 2. अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, मानव शरीर रचना शास्त्र, मनोविज्ञान,अर्थशास्त्र, भूगोल।

   विज्ञान वर्ग के छात्रों को भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, गणित, वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञानतथा भूगर्भ विज्ञान में से दो विषयों का चयन जरूरी था।

3. पी0एच0डी0 उपाधी के लिए शोधार्थी का चयन अखिल भारतीय स्तर पर किया जाना चाहिए।
4. स्नातक स्तर पर धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिए।
5. उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी एवं स्थानीय भाषा के प्रयोग करने का सुझाव आयोग ने दिया था। इस सम्बन्ध में आयोग ने कहा था की हिन्दी को अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को ग्रहण कर लेना चाहिए एवं सभी भारतीय भाषाओं के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दों कीएक समरूप सूचीकानिर्माण किया जाना चाहिए। परन्तु माध्यमिक कक्षाओं में अंग्रेजी का शिक्षण पूर्ववत चलते रहना चाहिए।

परीक्षा प्रणाली:तत्कालीन परीक्षा प्रणाली पर आयोग के सुझाव निम्नवत् थे-

1. परीक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए, जिससे अभिभावक अपने बच्चों की शैक्षिक प्रगति से नियमित रूप से अवगत होते रहें।
2. आंतरिक मूल्यांकन के महत्व को स्थापित करने के लिए बाह्य परीक्षाओं की संख्या में कमी की जानी चाहिये।
3. वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन के लिए समुचित परीक्षाओं की सूची में वृद्धि की जानी चाहिये।

4. निबंधात्मक परीक्षाओं में समुचित संशोधन किया जाना चाहिए।
5. उच्च शिक्षा की कक्षाओं में प्रत्येक वर्ष के अंत में एक विश्वविद्यालय की परीक्षा होनी चाहिए।
6. परीक्षाओं में कृपांक की प्रथा समाप्त की जानी चाहिए।
7. केवल स्नातकोत्तर एवं वृत्तिक पाठ्यक्रमों में ही मौखिक परीक्षाएँ ली जानी चाहिए।
8. प्रायोगिक विषय की परीक्षा में लिखित, प्रयोगात्मक व मौखिक तीनों प्रकार की परीक्षाएँ ली जानी चाहिए।
9. सभी विश्वविद्यालयों के छात्रों के सफलता मानकों में यथा सम्भव समानता व समरूपता होनी चाहिये।

अभ्यासप्रश्न

---

15. विश्वविद्यालय आयोग के अनुसार पाठ्याक्रम में कितने भाग होने चाहिये ?
    i) 2 ii) 3 iii) 4 iv) 5
16. आयोग के अनुसार पी.एच.डी. स्तर पर चयन कैसे होना चाहिये ?
17. 1948 के आयोग के अनुसार शिक्षा का माध्यम क्या होना चाहिये ?
18. आयोग के अनुसार मौखिक परीक्षाएँ किस स्तर पर होनी चाहिये ?
19. 1948 आयोग के अनुसार परीक्षा में कृपांक की प्रथा होनी चाहिये। (हाँ/नहीं)

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53)

केन्द्रिय शिक्षा सलाहकार परिषद ने भारत सरकार के सामने माध्यमिक शिक्षा के लिए एक पूर्ण एवं सक्षम आयोग की नियुक्ति का प्रस्ताव रखा था। 1951 में रखे गये इस प्रस्ताव के आधार पर सरकार ने 15 सितम्बर, 1952 को मद्रास विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डॉ0 ए0एल0एस0 मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग की नियुक्ति की। अध्यक्ष के नाम पर यह मुदालियर कमीशन के नाम से भी जाना जाता है।

उद्देश्य:मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के जो उद्देश्य निर्धारित किये थे, वे इस प्रकार है-

i. छात्रों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास जिससे वे सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से व्यवहार कुशल बन सकें।
ii. छात्रों में लोकतंत्रीय सिद्धान्तों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना ताकि छात्रों में समानता,सहयोग,धैर्य, सहनशीतला,धर्मनिरपेक्षता, भाईचारा, प्रेम, न्याय प्रियता और समाजवादी चिंतन का विकास हो सके।

iii. छात्रों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना जिससे वे अपने जीवन को आर्थिक दृष्टि से सफल बना सकें।
iv. छात्रों में नेतृत्व शक्ति का विकास करना ताकि लोकतंत्र की नींव मजबूत हो सके।
v. छात्रों के नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास पर पर्याप्त जोर दिया जाये।

पाठयचर्या

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने सर्व प्रथम माध्यमिक पाठयचर्या की नवीन संकल्पना प्रस्तुत की थी। आयोग के अनुसार माध्यमिक पाठयचर्या जीवनोपयोगी होनी चाहिये एवं अपने आप में एक इकाई होना चाहिये। पाठयचर्या ऐसा होना चाहिये जहाँ प्रत्येक विषय दूसरे विषय से सह सम्बन्ध स्थापित कर सके और पाठयचर्या अवकाश का सदुपयोग कर सके।

आयोग ने विषयों की दृष्टि से पाठयचर्या को दो भागों में विभाजित किया था-

i. अनिवार्य विषय
ii. ऐच्छिक विषय

अनिवार्य विषयों में मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा एवं हिन्दी, प्रारम्भिक अंग्रेजी, उच्च अंग्रेजी, एक आधुनिक भारतीय भाषा, एक शास्त्रीय भाषा में से कोई एक भाषा चयन किया जा सकता था। इसके अलावा सामाजिक विज्ञान, गणित, सामान्य विज्ञान एवं एक शिल्प विषय पढ़ाये जाने का प्रस्ताव था। शिल्प विषयों में कताई-बुनाई, काष्ठकला, धातु कार्य, टंकण, सिलाई, कढ़ाई, बागवानी, माडलिंग आदि सम्मिलित थे।

ऐच्छिक विषयों में 7 विषय समुहों को प्रावधान था। वे समुह इस प्रकार थे-

वर्ग समूह 1 (मानवता शास्त्र): इसके अन्तर्गत एक शास्त्रिक भाषा जिसे अनिवार्य विषय के रूप में न लिया गया हो, गणित, इतिहास, भूगोल, साधारण अर्थशास्त्र तथा नागरीक शास्त्र, संगीत, सामान्य मनोविज्ञान व तर्कशास्त्र तथा गृह विज्ञान रखे गये थे।

वर्ग समूह 2 (विज्ञान): इसमें रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, जीव विज्ञान, शरीर विज्ञान व स्वास्थ्य विज्ञान, गणित तथा भूगोल आदि रखे गये थे।

वर्ग समूह3 (तकनीकी):इसके अन्तर्गत व्यावहारिक गणित तथा ज्यामितीय ड्राइंग, यांत्रिक अभियांत्रिकी के तत्व, विद्युतीय अभियांत्रिकी के तत्व तथा व्यावहारिक विज्ञान आदि विषय रखे गये थे।

वर्ग समूह 4 (वाणिज्य):इसमें कामर्शियल प्रैक्टिस, वाणिज्य भूगोल अथवा अर्थशास्त्र व नागरिक शास्त्र के तत्व तथा टंकण एवं आशुलेखेन सम्मिलित किये गये थे।

वर्ग समूह 5 (कृषि):इस वर्ग में सामान्य कृषि, पशुपालन, बागवानी एवं उद्यान, कृषि रसायन एवं वनस्पित विज्ञान से सम्बद्ध विषय सम्मिलित किये गये थे।

वर्ग समूह 6 (ललित कलायें): ललित कलाओं में चित्रकला, ड्राइंग व डिजाइनिंग, कला इतिहास, संगीत, नृत्य तथा माडलिंग आदि कलायें सम्मिलित की गई थी।

वर्ग समूह 7 (गृह-विज्ञान):यह विषय समूह केवल बालिकाओं के लिये थे।

शिक्षण विधि:शिक्षण विधि पर आयोग के सुझाव निम्नवत् थे-

i. यह स्वानुभव पर आधारित होना चाहिये।
ii. विधियाँ प्रतिभाशाली, औसत एवं मन्दुबद्धि आदी सभी छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी
होनी चाहिए।
iii. शिक्षण विधियाँ बालकों में स्व-प्रेरणा, स्व-क्रिया तथा स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत करनी चाहिए।
iv. इन विधियों के माध्यम से छात्रों में सामाजिकता, प्रेम, सहयोग और मिल कर काम करने की भावना उत्पन्न होनी चाहिये।

परीक्षा प्रणाली:माध्यमिक स्तर के परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए आयोग ने निम्नांकित सुझाव दिये थे-

1. वास्तविक मूल्यांकन केवल बाह्य परीक्षा द्वारा सम्भवपर न होने के कारण इसकी संख्या में कमी की जानी चाहिये।
2. माध्यमिक स्तर पर केवल एक अन्तिम बाह्य परीक्षा होनी चाहिये।
3. छात्रों की प्रगति अभिलेखों को अद्यतन बनाये रखा जाना चाहिये।
4. निबन्धात्मक प्रश्न विचार प्रधान बनाया जाना चाहिये।
5. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की संख्या बढ़ाकर परीक्षा की विश्वसनीयता को बढ़ाया जा सकता है।
6. छात्रों का मूल्यांकन उनके वर्ष भर के कार्य, व्यवहार, सत्रीय गतिविधियाँ तथा अन्य प्रकार की उपलब्धियों के आधार पर किया जाना चाहिये।
7. आन्तरिक परीक्षाओं के प्राप्तांको को भी महत्व दिया जाना चाहिये।
8. ग्रेडिंग प्रणाली अपनाया जाना चाहिये।
9. केवल एक विषय में अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए पूरक परीक्षा का प्रावधान होना चाहिये।
10. छात्रों का संचयी अभिलेख नियमित रूप से बनाये जाने चाहिये।

अभ्यास प्रश्न

20. माध्यमिक शिक्षा आयोग को और किस नाम से जाना जाता है ?
21. लोकतंत्र की नीवं मजबुत करने के लिये क्या करना चाहिये ?
22. माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार प्रत्येक विषय में आपसी सहसम्बंध होना चाहिये। (हाँ /नहीं)
23. आयोग ने ऐच्छिक विषयों को कितने विषय समुहो में विभाजित किया ?
24. 'भाषा' वर्ग समुह आयोग के अनुसार एक ऐच्छिक विषय समुह है। (हाँ / नहीं)

भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66)

सन् 1964 में तत्कालीन शिक्षामंत्री भारत सरकार डॉ0 एम0सी0 छागला ने भारत की सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था पर नये सिरे से विचार करने के लिए भारतीय शिक्षा आयोग (1964) के रूप में एक नवीन आयोग की स्थापना की।

इसके व्यापक उद्देश्य, स्वरूप और महत्व के आधार पर इसे 'शिक्षा आयोग'-1964-66 तथा 'राष्ट्रीय शिक्षा आयोग- 1964-66' के नाम से भी जाना जाता है। अध्यक्ष डॉ. डी0एस0 कोठारी के नाम पर यह आयोग 'कोठारी कमीशन' के नाम से भी प्रसिद्ध हुआ है।

उद्देश्य:

आयोग ने शिक्षा को राष्ट्रीय महत्व का उपकरण माना है। इस आधार पर आयोग ने शिक्षा के लिए जो भी राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित किये थे वे निम्नवत् हैं -

1. शिक्षा राष्ट्रीय उत्पादन में सहायक होनी चाहिये।
2. शिक्षा द्वारा समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रसार होना चाहिये।
3. शिक्षा को राष्ट्रीय एकता तथा धर्म-निरपेक्षता की स्थापना में सहायक होना चाहिये।
4. शिक्षा द्वारा समाज और राष्ट्रका आधुनिकीकरण किया जाना चाहिये।
5. शिक्षा में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया जाना चाहिये।
6. शिक्षा द्वारा नागरिकों के उत्तम चरित्र का निर्माण किया जाना चाहिये।
7. शिक्षा द्वारा सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना की जानी चाहिये।
8. शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र का वैज्ञानिक, तकनीकी, औद्योगिक और व्यावसायिक विकास किया जाना चाहिये।

पाठयचर्या :

आयोग ने प्राथमिक शिक्षा के पाठयचर्या में परिवर्तन करते हुये कहा था कि इसके अन्तर्गत बालकों को खेलकूद, कहानी, कविता, रचनात्मक कार्य, सामान्य व्यवहार, सफाई व स्वच्छता तथा खाने-पीने-बोलने का तरीका आदि सिखाया जाने चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा के पाठयचर्या के सन्दर्भ में आयोग ने निम्न सुझाव दिये थे-

i. निम्न माध्यमिक शिक्षा के लिए- मातृभाषा, हिन्दी या अंग्रेजी, विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन, कार्य अनुभव, कला, सामाजिक कार्य, नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा को विषय के रूप में निर्धारित किये जाये।
ii. माध्यमिक शिक्षा के लिए मातृभाषा, हिन्दी या कोई अन्य प्रान्तिय भाषा, एक यूरोपीय या शास्त्रिय भाषा, सामान्य विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, कार्य अनुभव, सामाजिक कार्य,कला,नैतिक तथा आध्यत्मिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा आदि विषय सम्मिलित किये जाये।
iii. उच्चतर माध्यमिक के लिये एक भारतीय भाषा, एक आधुनिक विदेशी भाषा तथा एक शास्त्रिय भाषा में से कोई दो भाषायें तथा एक तीसरी भाषा, एवं निम्न में से कोई दो विषय सम्मिलित करने का सुझाव था। वे विषय इस प्रकार है- भौतिकी, रसायन शास्त्र, गणित, कला, इतिहास, भूगोल, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, तर्कशास्त्र, जीव विज्ञान, गृह-विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा भूगर्भशास्त्र।

उच्च शिक्षा के लिए आयोग ने कहा था कि प्रथम स्नातक पाठयचर्या तीन वर्षीय होना चाहिये तथा स्नातक स्तर पर सामान्य, विशिष्ट एवं आनर्स पाठयचर्या होने चाहिये। पाठयचर्या लचीला होना चाहिये। पी0एच0डी0 उपाधी के लिये छात्र को 2 से 3 वर्ष तक का शोध कार्य करने का अवसर दिया जाना चाहिये। विश्वविद्यालय स्तर पर सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन को स्तरीय रूप में किये जाने पर जोर दिया जाना चाहिये। पाठयचर्या में नवीन विषयों को सम्मिलित किया जाये।

आयोग के अनुसार शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिये। परन्तु अखिल भारतीय स्तर की शिक्षण संस्थाओं में अंग्रेजी माध्यम का ही प्रयोग किया जाना चाहिये। फिर भी विद्यालय स्तर से ही अंग्रेजी के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये। आयोग ने विश्वविद्यालय स्तर पर किसी भी भाषा को अनिवार्य नहीं बनाये जाने का सुझाव दिया था। आयोग के अनुसार उच्च शिक्षा में उर्दू भाषा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

शिक्षण विधि:

आयोग का यह सुझाव था की शिक्षकों को नवीन शिक्षण विधियों के प्रशिक्षण के लिए कार्यशालाओं, गोष्ठियों तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये। इसके अतिरिक्त पूर्व प्राथमिक स्तर परबाल मनोविज्ञान पर आधारित खेल विधि तथा क्रियात्मक विधि का प्रयोग किया जाना चाहिये।

परीक्षा प्रणाली:

माध्यमिक स्तर में आयोग के अनुसार प्रादेशिक स्तर पर एक सार्वजनिक बाह्य परीक्षा होनी चाहिये जिसका प्रबन्ध प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद को करना चाहिये। इस स्तर पर लिखित एवं मौखिक दोनो प्रकार की परीक्षायें ली जानी चाहिये। अन्य सुझावों में आयोग ने कहा था कि -

- परीक्षा यथा सम्भव वस्तुनिष्ठ बनाया जाये।

- प्रयोगात्मक विषयों मेंप्रायोगिक परीक्षायें भी ली जानी चाहिए।
- परीक्षा परिणाम ग्रेड प्रणाली के आधार पर घोषित किये जाने चाहिये।
- प्रश्नपत्रों में निबन्धात्मक, दीर्घ-उत्तरीय, लघु-उत्तरीय तथा वस्तुनिष्ठ तीनों प्रकार के प्रश्न सन्तुलित रूप से दिये जाने चाहिये।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आयोग के अनुसार-

- बाह्य परीक्षाओं के साथ-साथ आन्तरिक परीक्षाओं एवं सतत् मूल्यांकन द्वारा छात्रों की क्षमताओं का पता लगाना चाहिये।
- यू0जी0सी0 को निरन्तर परीक्षा सुधार के प्रयास करते रहने चाहिये। इनके लिए केन्द्रीय परीक्षा सुधार इकाई का गठन किया जाना चाहिये।
- शिक्षकों को मूल्यांकन की नवीनतम विधियों से अवगत कराया जाना चाहिये।

भारतीय शिक्षा नीतियों में पाठयचर्या :

राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में 1986 की राष्ट्रीयशिक्षा नीति को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इस नीति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य इस प्रकार था-

i. मानवीय शक्ति (संशोधन) को आधुनिक प्रगतिशील तकनीक के अनुसार प्रशिक्षित करना।
ii. भारत की शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक युग के नये नये व्यवसायों की चुनौतियों के अनुरूप विकसित करना।

इस शिक्षा नीति का आठवां भाग विषय, शिक्षण विधि एवं परीक्षा प्रणाली से सम्बन्धित था। इसके अनुसार-

1. औपचारिक शिक्षा प्रणाली द्वारा देश की सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करनी चाहिए।
2. छात्रों को मूल्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
3. शिक्षा में आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि आवश्यक सूचनाओं का ज्ञान, शिक्षण प्रशिक्षण, शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि किया जा सके।
4. कार्य अनुभव को सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए।
5. विषय के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूता उत्पन्न किया जाना चाहिये ।
6. खेल को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिये ।
7. परीक्षा प्रणाली में मूल्यांकन प्रक्रिया को वैध, तथा विश्वसनीय बनाया जाना चाहिए एवं इसकेलिए-
    i. परीक्षा में आत्मनिष्ठता को समाप्त किया जाए।
    ii. संयोग वाले प्रश्नों को हटाया जाए।

iii. रटने के स्थान पर समझने पर जोर दिया जाये।
iv. पूरे सत्र के दौरान मूल्यांकन प्रक्रिया चलते रहना चाहिए।
v. माध्यमिक स्तर से क्रमबद्ध रूप से सत्र प्रणाली लागू किया जाना चाहिये।
vi. मूल्यांकन में अंको के बजाए 'ग्रेड' प्रदान किया जाना चाहिए।

अभ्यासप्रश्न

25. भारतीय शिक्षा आयोग (1964) के अध्यक्ष कौन थे ?
26. भारतीय शिक्षा आयोग के अनुसार शिक्षा राष्ट्रीय उत्पादन में सहायक होनी चाहिये । (हाँ/नहीं)
27. आयोग ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कितने भाषाओं के शिक्षण के लिये सुझाव दिया था?
28. आयोग के अनुसार शिक्षा का माध्यम क्या होना चाहिये ?
29. आयोग द्वारा खेल-विधि का सुझाव किस स्तर के लिये दिया गया था ?
30. केंद्रीय परीक्षा सुधार इकाई किस स्तर पर गठित किया जाना चाहिये ?
31. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार मानविक शक्ति एक संसाधन है। (हाँ/नहीं)
32. आत्मनिष्ठता के द्वारा मूल्यांकन प्रक्रिया वैध एवँ विश्वसनीय होता है। (हाँ/नहीं)

8.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने जाना की वह कौन कौन से आयोग या समितियाँ थी जिन्होंने पाठयचर्या के सन्दर्भ में अपनी बहुमूल्य संस्तुतियां दी थी। इनमें स्वतंत्रता पूर्व आयोग एवं समितियाँ शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर ज्यादा केन्द्रीत थी। इन्होने पाठयचर्या को मुख्यरूप से विषय तक समिति रखा एवं समय समय पर यह सुझाव दिया कि किस स्तर पर कौन सा विषय पढ़ाया जाना चाहिए। माध्यम के रूप में मुख्यतः अंग्रेजी को ही प्रोत्साहन दिया गया। परन्तु बाद में कुछ आयोग ने क्षेत्रीय भाषा के महत्व को यथोचित सम्मान प्रदान करते हुए उनको भी माध्यम के रूप में प्रयोग करने का सुझाव दिया। स्वतंत्रता पूर्व वर्धा शिक्षा आयोग इन सभी से कुछ अलग दिखाई पड़ता हैं। यह एक मात्र ऐसा प्रयास है जहाँ पर स्वाध्याय एवं स्वानुभव पर ज्यादा जोर दिया गया।

स्वतंत्रतोत्तर काल में आपने जाना कि सबसे पहले उच्च शिक्षा के लिए आयोग बनाया गया था। इसमें सरकार की यह कमी दिखती है कि सरकारी स्तर पर प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा कि अवहेलना की गई थी। बाद में इस गलती को सुधारते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया गया। उच्च शिक्षा आयोग एवं माध्यमिक शिक्षा आयोग शिक्षा से सम्बन्धित सब कमियों को दूर नहीं कर पाया था, इसलिए 1964 में भारतीय शिक्षा आयोग का गठन किया गया था। इस आयोग ने

शिक्षा के हर क्षेत्र में अपनी सुझाव दिए थे। बाद में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा सम्बन्धित सुझावों को यथा सम्भव कार्यान्वित करने की कोशिश की गई थी।

8.7 शब्दावली

1. **CABE:** यह एक ऐसीसंस्था है जो विकास में अग्रणी भूमिका निभाती है तथा शैक्षिक नीतियों और कार्यक्रमोंकी मानीटरिंग करतीहै।
2. **नई तालिम:** नई का अर्थ है नया और तालिम एक उर्दू शब्द है जिसका अर्थ है शिक्षा । नई तालिम एक आध्यात्मिक सिद्धांत पर आधारित सम्प्रत्यय है जो यह कहता है कि ज्ञान एवँ कार्य एक दूसरे से भिन्न नहीं है ।
3. **सहसम्बंध:**किन्ही दो या अधिक चरों (मात्राओं) के मध्य एक निश्चित समयकाल में अलग अलग प्रकार एवँ मात्रा में होने वाले सम्बंध ।
4. **वस्तुनिष्ठ**: वह वस्तु या ज्ञान या सम्प्रत्यय जो स्थान, काल एवँ पात्र विशेष के बदलने पर भी नहीं बदलता

8.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. लॉर्ड रीपन
2. 2
3. वुड के घोषणा पत्र ने
4. विलियम हण्टर
5. लार्ड कर्जन ने
6. 2
7. कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग
8. औद्योगिक एवँ व्यापारिक विषय
9. 6 वर्ष
10. सार्जेण्ट शिक्षा योजना
11. गांधी जी के
12. जामिया मिलिया
13. ज़ाकिर हुसैन समिति / वर्धा शिक्षा योजना
14. क्रिया व अनुभव द्वारा शिक्षण एवँ सहसम्बंध द्वारा शिक्षण
15. 3
16. अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षा के माध्यम से
17. हिंदी एवँ स्थानीय भाषा

18. स्नातकोत्तर एवँ वृत्तिक पाठयचर्या में
19. नहीं
20. मुदालियर कमीशन
21. नेतृत्व शक्ति का विकास
22. हाँ
23. 7
24. नहीं
25. डॉ. डी. एस. कोठारी
26. हाँ
27. 3
28. मातृभाषा
29. पूर्व प्राथमिक स्तर
30. उच्च शिक्षा स्तर पर
31. हाँ
32. नहीं

8.9 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. त्रिपाठी, शालिग्राम (2005), भारतीय शिक्षा का इतिहास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली.
2. शील, अवनींद्र (2005), भारतीय शिक्षा का विकास एवँ समस्यायें, साहित्य रत्नालय, कानपूर
3. चौबे, सरयूप्रसाद एवँ चौबे, अखिलेश (2008), भारतीय शिक्षा का इतिहास, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या, फैज़ाबाद.
4. ReportofUniversityEducationCommission (1948),ManagerofPublications,Allahabad

8.10 निबंधात्मक प्रश्न

1. स्वतंत्रता पूर्व आयोगों या समितियों द्वारा पाठयचर्या सुधार पर टिप्पनी करें।
2. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग द्वारा दिये गये सुझाव वर्तमान में कितने प्रासंगिक है ?
3. भारतीय शिक्षा आयोग (1964 - 66) एवँ वर्धा योजना में समानता क्या क्या है ?
4. स्वतंत्रता उत्तर काल एवँ स्वतंत्रता पूर्व काल के आयोगों के सुझावों का तुलनात्मक विवेचन करें।